

GOVERNMENT OF TAMIL NADU

Hindi Reader

हिन्दी रीडर

STANDARD - **X**II

आठवीं कक्षा

Department Of School Education

Untouchability is Inhuman and a Crime

8th STD Hindi Book.indb 1 18-03-2019 17:34:04

Government of Tamil Nadu

First Edition - 2019

Reprint - 2020, 2021, 2022,

2023, 2024

(Published under New Syllabus)

Content Creation

State Council of Educational Research and Training

© SCERT 2019

Printing & Publishing

Tamil NaduTextbook and Educational Services Corporation

www.textbooksonline.tn.nic.in

Preface.indd 2 28-01-2019 10:11:54

प्रस्तावना

नई सोच, नई आशाओं के साथ पुस्तक वर्ग २, वर्ग ७, वर्ग १० और वर्ग १२ का सृजन किया गया है।

आगे के प्रतिस्पर्धा एवं संघर्ष के वातावरण में बच्चों का सम्यक शारीरिक एवं मानसिक विकास बहुत आवश्यक है ताकि वे भविष्य में आनेवाली चुनौतियों का मुकाबला आसानी से कर सकें। उनके लिए ज्ञान विज्ञान की बातें उतनी ही आवश्यक है जितनी साहित्य और कला संबंधी जानकारी देश विदेश में हो रही घटनाओं से परिचित होना अगर आवश्यक है तो जीवन जीने की व्यावहारिक कला में निपुण होना भी उतना ही आवश्यक है। इन बातों को ध्यान में रखकर ही इस श्रृंखला का सृजन किया गया है। छात्र छात्राओं का सर्वांगीण करना है।

श्रृंखला तैयार करते समय निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान में रखा गया है।

- पाठों की प्रस्तुति के लिए विधा , कौतूहल और भाषा की सरलता आवश्यक है, यही समझते हुए ऐसे पाठों का चयन किया गया है जो बच्चे की जिज्ञासाओं एवं रूचियों को बढावा दे सके। साहित्य की विभिन्न विधाओं से अवगत कराने हेतु कविताएँ, कहानियाँ, लेख, यात्रा वृत्तांत, हास्य कथा, एकांकी, साक्षात्कार, आत्मकथा, डायरी आदि को सम्मिलित किया गया है।
- पर्यावरण संरक्षण आज के युग की सबसे बडी माँग है। बच्चों को प्राथमिक कक्षाओं से ही पर्यावरण की समस्याओं एवं उसके संरक्षण के प्रति जागरूकता लाने के लिए पर्यावरण संबंधी कहानियों एवं कविताओं के साथ साथ समाचार पत्रों में छपे लेख, पोस्टर आदि को भी सम्मिलित किया गया है।
- बच्चों को पुस्तक के केंद्र में रखने के कारण ऐसे पाठों को ही चुना गया ताकि खेल खेल में, मनोरंजन करते हुए अपनी बात बच्चों तक पहुँचा सकें। कक्षा का वातावरण बोझिल न हो, इसलिए रूचिकर पाठों के साथ साथ चुटकुले, शब्द पहेली, चित्रकथाएँ आदि भी दिए गए है।
- समालोचनात्मक सोच, समस्या समाधान, प्रभावशाली संप्रेषण तथा रचनात्मक प्रवृत्ति जैसे कौशलों का विकास करने वाले कार्यकलापों को विशेष रूप से सम्मिलित किया गया है।
- भाषा ज्ञान के अंतर्गत व्याकरण को सम्मिलित कर लिया गया है ताकि वह अलग अलग न होकर उसके साथ जुडा रहे।
- मौखिक वार्तालाप, लिखित कार्य, समूह कार्य, संवाद प्रदर्शन आदि को ध्यान में रखते हुए अभ्यासों का निर्माण किया गया है। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन करते समय इस विविधता को ध्यान में रखा जाए। मूल्यांकन करते समय प्रश्न कल्पनाशीलता को उभारें, विषयवस्तु को विस्तार प्रदान करने वाले हों, पाठ्यपुस्तक की परिधि से बाहर वृहतर परिधि को समेटने वाले हों, इन सभी बिंदुओं को ध्यान में रखकर ही अभ्यास में सभी प्रकार के प्रश्नों का समावेश किया गया है।

सीखने के वातावरण को आनंदमयी बनाए रखना अध्यापकों की बहुत बडी जिम्मेदारी है। कक्षा में विद्यार्थियों के संप्रेषण को महत्व दें। बच्चे अपनी बात बोलते समय न हिचकें। उन्हें बोलते अथवा लिखाते समय जो भी सहायता चाहिए, प्रदान करे ।

बच्चों के मनोविज्ञान, उनके मानसिक क्षितिज को समझते हुए, उनके जगत से तारतम्य बनाते हुए हमारी ओर से प्रयास है।

12 thPreface.indd 4 10-01-2019 11:05:08

देशीयगीतम्

जन गण मन अधिनायक जय हे
भारत भाग्य विधाता
पंजाब सिन्धु गुजरात मराठा
द्राविड उत्कल बङ्गा
विन्ध्य हिमाचल यमुना गङ्गा
उच्छल जलधि तरङ्गा
तव शुभ नामे जागे
तव शुभ आशिष मागे
गाहे तव जय गाथा
जन गण मङ्गल दायक जय हे
भारत भाग्य विधाता
जय हे जय हे जय हे
जय जय जय जय हे !

महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुरः

अस्पृश्यत्वम् अपचारः
अस्पृश्यत्वम् अपराधः
अस्पृश्यत्वम् अमानवधर्मः



Preface.indd 5 28-01-2019 10:22:39

तमिल माता की वंदना
(तमिलताय वाळ्तु)

नीरारूम कडलुडुत्त निलमडन्दै केळिलोळुगुम
सीरारूम वदनमेन तिगळ् भारत खंडमिदिल,
तेक्कण्मुम अदिर्चिरन्द द्राविडनल् तिरूनाडुम
तक्कचिरू पिरैनुदलुम तरित्तनरून्तिलकमुमे
अत्तिलक वासनैपोल अनैत्तुलगुम इन्बमुर
ऍत्तिशैयुम पुगळ मण्क्क इरून्द पेरूंद् तमिलअणंगे!
तमिलअणंगे!
उन सीर इलमै तिरम वियन्दु सेयलमरन्दु वाळ्त्तुदुमे!
वाळ्त्तुदुमे!
वाळ्त्तुदुमे!

'मनोनमणियम' पे. सुन्दरम पिल्लै

12 thPreface.indd 7 10-01-2019 11:05:08



राष्ट्रिय प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है।

सब भारतवासी मेरे भाई-बहन है।

मैं अपने देश से प्रेम करता/करती हूँ।

इसकी समृद्ध एवं विविध संस्कृति पर मुझे गर्व है।

मैं सदा इसका सुयोग्य अधिकारी बनने का प्रयत्न करता/करती रहूँगा/रहूँगी।

मैं अपने माता-पिता, शिक्षको एवं गुरुजनो का सम्मान करूँगा/करूँगी और प्रत्येक के साथ विनीत रहूँगा/रहूँगी।

मैं अपने देश और देशवासियों के प्रति सत्यनिष्ठा की प्रतिज्ञा करता/करती हूँ।

इनके कल्याण एवं समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है।



12 thPreface.indd 8 10-01-2019 11:05:09

विषय – सूची

पद्य

1.	तुलसीदास	01
2.	वृन्द के दोहे (कंठस्थ)	05
3.	श्रीकृष्ण की छटा	08
4.	बिहारी के दोहे (कंठस्थ)	13
5.	भारतेंदु हरिश्चंद्र चंद्रिका	16
6.	सत्याग्रही का बयान	20
7.	परिचय (कंठस्थ)	25
8.	सहर्ष स्वीकारा है	28
9.	काल तुझसे होड़ है मेरी	32

गद्य

10.	टालस्टाय फ़ार्म	35
11.	कला का विवेचन	43
12.	भाव या मनोविकार	51
13.	रीढ़ की हड्डी (एकांकी)	57
14.	नागरिकों के मूल अधिकार	72
15.	हमारी ताकत और जिम्मेदारियाँ	77

12 thPreface.indd 9 10-01-2019 11:05:09

कहानी

16.	आकाश – दीप	86
17.	ईदगाह	96
18.	भाई – बहन	110
19.	शरणागत	116

व्याकरण

20.	रस	126
21.	सूचना के अनुसार बदलिए	130
22.	शुद्ध कीजिए	131
23.	संधि	133
24.	पारिभाषिक शब्दावली	138
25.	पत्र-लेखन	144
26.	पद परिचय	155
27.	संक्षिप्तीकरण	158
28.	हिंदी में अनुवाद कीजिए	160
29.	निबंध सूची	161
	MODEL QUESTION PAPER	162

12 thPreface.indd 10 10-01-2019 11:05:09

पद्य 1 तुलसीदास

तुलसीदास



हिंदी साहित्य के भक्तिकाल रुपी गगन के चन्द्रमा हैं तुलसीदास ।

वे राम के अनन्य भक्त थे । तुलसीदास कृत रामचरितमानस मूल ग्रंथ वाल्मीकि रामायण से प्रेरित है। इस का कारण है जनभाषा ।

तुलसीदास जी का जन्म संवत् 1554 वि. में हुआ। उनके पिता का नाम आत्माराम दुबे और माता का नाम हुलसी था ।

तुलसीदास का जन्म अशुभ नक्षत्र में हुआ । अतः उनके माता-पिता ने उनका त्याग किया । तब तुलसी अनाथ हो गये । बाबा नरहरिदास ने उनको पाल-पोसकर शिक्षा-दीक्षा दी । गुरु ने तुलसीदास जी को वेदांग, दर्शन, इतिहास, पुराण आदि में प्रवीण कर दिया ।

तुलसी की विद्वत्ता देख एक ब्राह्मण ने अपनी कन्या से ब्याह कराया । तुलसीदास अपनी पत्नी से अधिक प्यार करने लगे । एक क्षण भी न छोड़ा । पति को सुधारने के लिए पत्नी ने कहा कि जितना प्रेम मुझसे करते हो, उतना भगवान से करो । यह नश्वर शरीर है इस नश्वर जगत से मुक्ति पा लो । पत्नी के शब्द ने तुलसी के स्त्री मोह को मिटा दिया । वे काशी गये । भगवद् भक्ति में लग गये । ईश्वर की कृपा से वे बहुत बड़े कवि बन गये ।

उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं ---- 1) रामचरितमानस 2) कवितावली 3) दोहावली 4) गीतावली 5) कृष्णगीतावली 6) विनय-पत्रिका 7) रामाज्ञा 8) बरवैरामायण 9) राम-लला-नहछू 10) वैराग्य संदीपनी 11) पार्वती मंगल 12) राम-सत्सई 13) हनुमान नाटक 14) जानकी मंगल आदि ।

poem.indd 1 10-01-2019 10:44:40

तुलसी-तरंग

1. गाइये गणपति जगवंदन । संकर सुवन भवानीनंदन ।
   सिद्धि सदन गजवदन विनायक । कृपासिन्धु सुन्दर सब लायक ।
   मोदकप्रिय – मुद मंगलदाता । विद्या वारिधि बुद्धि विधाता ।
   माँगत तुलसिदास कर जोरे । बसहिं राम सिय मानस मोरे ॥
2. जाके प्रिय न राम वैदेही ।
   तजिये ताहि कोटि वैरी सम, जदपि परम सनेही ।
   तज्यो पिता प्रहलाद विभीषण बंधु भारत महतारी ।
   बलि गुरु तज्यो कन्त व्रज बनितनि भये मृदु मंगलकारी ॥
   नाते नेह के राम के मनियत सुहृद सुसेव्य जहाँ लौं ।
   अंजन कहा आँखि जेहि फूटै बहुतक कहौ कहाँ लौं ।
   तुलसी सो सब भाँति परम हित पूज्य प्रान ते प्यारो
   जासो होय सनेह राम पद एतो मतो हमारो ।

1. गणपति वंदना

I.कठिन शब्दार्थ :-

1. संकर सुवन – शिव का पुत्र 2. भवानीनंदन – पार्वती पुत्र
3.गजवदन– हाथी मुख वाला 4. विद्यावारिधि – शिक्षा का सागर

II. प्रश्नों के उत्तर दीजिये

1. तुलसीदासजी भगवान गणपति का वर्णन कैसे करते हैं ?
2. भगवान गणपति से हाथ जोड़कर तुलसीदास कौन-सा वर माँगते हैं ?

III. सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिये ।

1. मोदक प्रिय-मुद .....मानस मोरे ॥
2. जाके प्रिय न राम वैदेही ।

poem.indd 2 10-01-2019 10:44:40

IV. गणपति की विशेषताएँ बताइए ।

I. कठिन शब्दार्थ :-

1. तजिये – छोड़िये 2. वैरी – दुश्मन

II. प्रश्नों के उत्तर दीजिये ।

1. तुलसीदास किसको करोड़ों दुश्मन के समान मानकर छोड़ने को कहते हैं?
2. प्रह्लाद किसको छोड़कर राम का भक्त बना ?
3. विभीषण क्यों अपने भाई को त्याग कर आया ?
4. भरत किसको छोड़कर राम का प्यारा बना ?
5. गोपियों ने क्यों अपने पतियों को त्यागा ?
6. मित्र और पूज्य कौन हैं ?
7. भगवान राम के प्रेम के बारे में तुलसीदास का विचार क्या है ?
8. बलि ने अपने गुरु को क्यों त्याग दिया ?

1. प्रह्लाद :

प्रहलाद राजा हिरण्यकशिपु का बेटा था । उसके पिता अपने को ही भगवान मानकर पूजा-अर्चना करने की आज्ञा दी । प्रह्लाद तो भगवान नारायण का ही नाम लेता था। हिरण्यकशिपु ने अपने बेटे को मरवा डालने का अनेक प्रयत्न किया । अंत में भगवान खुद खम्भे में से नरसिंहावतार रूप में प्रकट हुए और हिरण्यकशिपु का वध कर दिया । भक्त प्रह्लाद की प्रशंसा हुई । वह भगवान की शक्ति महिमा दर्शन का कारण बना ।

2. विभीषण :

विभीषण रावण का भाई था । रावण ने सीता का अपहरण किया । अपने भाई के कुकर्म से वह भाई को त्यागकर राम का भक्त बना ।

3. बलि :

महाबली वामनावतार से आये भगवान को दान देने को उसके गुरु ने रोका । गुरु ने विष्णु का छल जान लिया । अपने गुरु के व्यवहार से असंतुष्ट होकर गुरु को त्याग दिया । भगवान का भक्त बना ।

poem.indd 3 10-01-2019 10:44:40

III. सही उत्तर चुनकर खाली जगह पूरा कीजिये ।

1. तुलसीदास के गुरु ----------हैं । 1. रामानंद 2. बाबा नरहरिदास

2. तुलसीदास गणपति से ----------वर माँगते हैं । 1. शिव दर्शन का 2. राम दर्शन का

3. प्रह्लाद अपने ----------को छोड़कर विष्णु का भक्त बना । 1. गुरु 2. पिता

4. विभीषण ----------का भाई था । 1. रावण 2. सुग्रीव

5. बलि के गुरु -------हैं । 1. शुक्राचार्य 2. नरहरिदास

poem.indd 4 10-01-2019 10:44:40

पद्य 2 वृन्द के दोहे

कवि वृन्द

कवि परिचय :



कवि वृन्द का जन्म सन् 1668 के लगभग मथुरा के आसपास हुआ था। आपकी शिक्षा काशी में हुई थी। बाद में कृष्णगढ़ के महाराज मानसिंह ने इन्हें अपना दरबारी बनाकर सम्मानित किया। वे आजीवन वहीं रहे। कवि वृन्द की ख्याति विशेष रूप से नीति-काव्य के लिए है। आपकी प्रमुख रचना है - वृन्द सतसई। इसमें सात सौ दोहे हैं। आपकी भाषा सरल-सुबोध है। कहावतों और मुहावरों का प्रयोग सुन्दर ढंग से हुआ है।

(1)

सरल वचन है औषधी, कटुक वचन है तीर ।
श्रवण द्वार जो संचरै, सालै सकल सरीर ॥

शब्दार्थ : कटुक – तीखा, कडुवा; सालै – पीड़ा होती है

भावार्थ : सरल वचन तो औषधी के समान गुणकारी है, लेकिन कडुवी बोलि तीर के समान है जो कान की राह से प्रवेश कर सारे शरीर में पीड़ा पहुँचाती है ।

(2)

कोउ बिन देखे बिन सुने, कैसे कहै विचार ।
कूप – भेक जानै कहा, सागर को विस्तार ॥

शब्दार्थ : कोउ – कोई; कूप–भेक – कूपमंडूक, कुएँ का मेंढक

भावार्थ : कोई किसी वस्तु को बिना देखे और बिना कुछ सुने कैसे उसपर विचारपूर्वक अपनी राय दे सकता है ? जो मेंढक कुएँ में रहता है वह सागर के विस्तार को कैसे जान सकता है ।

poem.indd 5 10-01-2019 10:44:40

(3)

जो पावै अति उच्च पद, ताको पतन निदान ।

ज्यों तपि – तपि मध्याह्न लौं, अस्त होत है भान ॥

शब्दार्थ : ताको – उसका ; निदान – अन्त ; तपि-तपि – तप-तपकर ; मध्याहन लौं – दोपहर तक ; भान – सूर्य

भावार्थ : जो बहुत ऊँचा पद पाता है, उसका अंत में पतन भी होता ही है । जैसे सूर्य दोपहर तक ऊपर उठता हुआ तपता रहता है । लेकिन अंत में अस्त भी हो जाता है ।

(4)

कारज धीरे होत है, काहे होत अधीर ।

समय पाय तरुवर फरै, केतिक सींचौ नीर ॥

शब्दार्थ : कारज – कार्य ; फरै – फल देता है ; केतिक – कितना भी

भावार्थ : कार्य धीरे-धीरे या क्रमशः ही होता है, अधीर क्यों होते हो ? मौसम आने पर ही वृक्ष फल देता है, चाहे कितना भी पानी देकर उसे सींचो ।

(5)

करत – करत अभ्यास ते, जड़मति होत सुजान ।

रसरी आवत जात ते, सिल पर परत निसान ॥

शब्दार्थ : जड़मति – मन्दबुद्धि, मूर्ख – सुजान – चतुर, रसरी – रस्सी, सिल – शिला, पत्थर , निशान – चिन्ह

भावार्थ : जिस तरह बराबर रस्सी के आने-जाने से शिला पर निशान पड़ जाते हैं, उसी तरह अभ्यास करते-करते मन्दबुद्धि का आदमी भी चतुर (ज्ञानी) बन जाता है ।

poem.indd 6 10-01-2019 10:44:40



वृन्द के दोहे

I. प्रश्नों के उत्तर दीजिये ।

1. कड़ुवी बोली किसके समान है ?
2. मीठी बोली कैसी है ?
3. हमें अपनी राय कब प्रकट करनी चाहिए ?
4. 'उच्च पद का पतन होता है' इस उक्ति को वृन्द कैसे समझाते हैं ?
5. 'हर कार्य धीरे-धीरे होता है' इस उक्ति को कवि ने किस उदाहरण से समझाया है ?
6. जड़मति कैसे बुद्धिमान हो सकता है ?

II. सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिये ।

सभी पाँच दोहे

III. सही शब्द चुनकर खाली जगह भरिए ।

1. सरल वचन .....समान है । तीर, औषध
2. किसी की बात सुनकर .....प्रभाव पड़ता है । 1. दिमाग पर 2. सारे अंगों पर
3. उच्च पद पाकर मनुष्य का .....होता है । 1. विकास 2. पतन
4. जड़मति भी अभ्यास करते-करते .....हो जाता है । 1. भोला-भाला 2. चतुर

poem.indd 7 10-01-2019 10:44:40

पद्य 3 श्री कृष्ण की छटा

श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

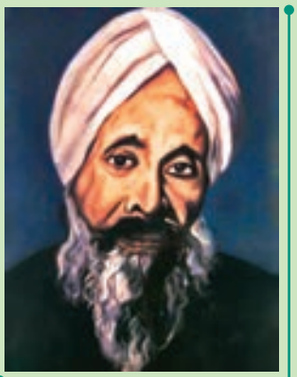

श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का जन्म उत्तर प्रदेश के निज़ामाबाद में हुआ । उनकी शिक्षा-दीक्षा उनके चाचा की देखरेख में हुई । भारतेंदु युग में वे साहित्य क्षेत्र में आये । पहले वे ब्रजभाषा में रचनाएँ करते थे। द्विवेदीयुग में उन्होंने खड़ीबोली में लिखना शुरू किया ।

वे भावुक कवि थे और उपदेश आचार्य भी । वे सुधारवादी थे । उन्होंने पति प्रेमिका, जाति प्रेमिका, देश प्रेमिका आदि नवीन नायिकाओं की सृष्टि की है । उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं- प्रिय प्रवास, चुभते चौपदे । 'श्री कृष्ण की छटा' "प्रिय प्रवास" काव्य से दिया गया है ।

श्रीकृष्ण दिन भर गोचारण करके गोधूली बेला में गोकुल को लौट रहे हैं । उस समय उनके सौन्दर्य का वर्णन कवि यों कर रहे हैं । ये पंक्तियाँ प्रियप्रवास के प्रथम सर्ग से ली गई हैं ।

इधर गोकुल से जनता कढ़ी,
उमगती अति आनंद में पगी ।
उधर आ पहुँची बलवीर की
विपुल-धेनु-विमंडित मण्डली ।
ककुभ-शेभित गोरज बीच से
निकलते व्रज-वल्लभ यों लसे

कदन ज्यों करके दिशि-कालिमा
विलसता नभ में नलिनीश है ॥
अतसि-पुष्प अलंकृतकारिणी,
सुछवि नील सरोरुह वर्द्धिनी,
नवल सुन्दर श्याम-शरीर की
सजल-नीरद सी कल-कांति थी ॥

poem.indd 8 10-01-2019 10:44:40

विलसता कटि में पट पीत था
रुचिर वस्त्र-विभूषित गात था ।
लस रही उर में वनमाल थी,
कल दुकूल-अलंकृत स्कंध था ॥

मकर-केतन के कल-केतु से
लसित थे वर-कुंडल कान में,
घिर रहीं जिनकी सब ओर थी
विविध-भावमयी अलकावली ॥

मुकुट था शिर का शिखि-पुच्छ का
अति मनोहर मंडित माधुरी,
असित रत्न समान सुरंजिता
सतत थी जिसकी वर-चंद्रिका ॥

विशद, उज्ज्वल,उन्नत भाल में
विलसती कल केसर-खौर थी,
असित पंकज के दल में लसे
रज-सुरंजित पीत सरोज ज्यों ॥

मधुरिमामय था मृदु बोलना,
अमिय-सिंचित-सी मुसकान थी
समद थी जन-मानस मोहती
कमल लोचन की कमनीयता ॥

सबल जानु-विलंबित बाहू थी,
अति सुपुष्ट समुन्नत वक्ष था ।
वय-किशोर-कला लसितांग था,
मुख प्रफुल्लित पद्म-समान था ॥

poem.indd 9 10-01-2019 10:44:40

सरस राग-समूह सहेलिका,
सहचरी सब मोहन-मन्त्र की,
रसिकता-जननी, कल-नादिनी
मुरलि थी कर में मधु वर्षिणी ॥

छलकती मुख की छवि-पुंजता,
छिटकती क्षितिज पै तन की छटा ।
बगरती वर दीप्ति दिगन्त में
छितिज की छनदा-कर-कांति लौं ॥
मुदित गोकुल की जन-मंडली
जब व्रजाधिप सम्मुख जा पड़ी,
निरखने मुख की छवि यों लगी,
तृषित-चातक ज्यों घन की घटा ॥

पलक लोचन की पड़ती न थी,
हिल नहीं सकता तन-लोम था ।
छवि-रता बहु कामिनी यों बनीं,
गठित पाहन-पुत्तलिका यथा ॥
उछलते शिशु थे अति हर्ष से,
युवक थे रस की निधि लूटते
जरठ को फल लोचन का मिला
निरख के सुखमा सुख-मूल की ॥

बहु विनोदित थीं व्रज बालिका,
तरुणियाँ सब थीं तृण तोड़तीं ।
बलि गयीं बहु बार वयोवती,
लख अनूपमता व्रज-चंद की ॥

- 'प्रिय प्रवास' से

poem.indd 10 10-01-2019 10:44:40

कठिन शब्दार्थ :

छटा – शोभा ; कढ़ी – निकली ; ककुभ – दिशा ; कदन – युद्ध ; अतसि – नीले रंग का एक पुष्प ; नवल – नया ; लस रही – शोभित हो रही ; केतु-ध्वजा – शिखि पुच्छ – मोर पंख ; असित रत्न – नीलमणि ; चंद्रिका – मोर पंख की आँख ; खौर – चन्दन का तिलक ; अमिय – अमृत ; जानू विलंबित – घुटनों तक लंबी ; छिति – क्षिति, पृथ्वी ; बगरती – बिखेरती ; छनदा-कर- कांति – चंद्रमा का प्रकाश ; लौं – के समान ; तन लोम – शरीर का रोम ; छविरता – शोभा देखने में मग्न ; पाहन – पुत्तलिका यथा – पत्थर की मूर्ति के समान ; जरठ – वृद्ध ; निरख – देख ; सुखमा – सुषमा, शोभा ; सुख मूल – समस्त सुखों का आधार ; तृण तोड़तीं - बलैया लेतीं ; वयोवती – प्रौढ़ स्त्रियाँ ; लख – देखकर

I. प्रश्नों के उत्तर दीजिये ।

1. 'कृष्ण की छटा' किस काव्य से लिया गया है ?
2. गोकुल की जनता गोधूली वेला में क्यों खुश होती थी ?
3. गोधूली के बीच कृष्ण कैसे दिख पड़ते थे ?
4. गोधूली वेला में कृष्ण के रूप-रंग का कवि कैसे वर्णन करता है ?
5. 'तृणित-चातक ज्यों घन की घटा' का उपमा कवि ने किसके लिए प्रयोग किया है ?
6. अनुपम व्रज कुमार देखकर आ-बालक वयोवृद्ध कैसे महसूस करते थे ?
7. श्री कृष्ण को ब्रज के लोग कैसे निहारते थे ?

II. सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिये ।

1. मधुरिमा मय था मृदु बोलना,

   अमिय – सिंचित-सी मुसकान थी ।

   समद थी जन-मानस मोहती

   कमल लोचन की कमनीयता

2. बहु विनोदित थीं ब्रज बालिका

   तरुणियाँ सब थीं तृण तोडती ।

   बलि गयीं बहु बार वयोवती,

   लख अनुपमता व्रज-चंद की ।

poem.indd 11 10-01-2019 10:44:40

III. सही शब्द चुनकर खाली जगह पूरी कीजिये ।

1. व्रज की जनता .....के समय अति कौतूहल से कृष्ण के दर्शन के लिए जमा होते थे।

   1. सुबह 2. शाम

2. गोरज बीच .....लगते थे ।

   1. धूल – धूसरित 2. नलिनीश

3. व्रज की जनता ..... समान श्री कृष्ण की छवि देखते थे ।

   1. मोर के 2. चातक पक्षी के

poem.indd 12 10-01-2019 10:44:40

पद्य 4 बिहारी के दोहे

बिहारीलाल



बिहारीलाल जी का जन्म ग्वालियर के बसुआ गोविंदपुर गाँव में सन् 1660 ईस्वी में हुआ । मथुरा से यह जयपुर के तत्कालीन राजा महाराजा मिर्ज़ा राजा जयशाह के दरबार में आये ।

राजा हमेशा अंतःपुर में ही रहते थे । नवोढ़ा रानी को छोड़कर दरबार में आना ही छोड़ दिया । बिहारी ने राजा के मानसिक परिवर्तन के लिए एक दोहा लिखकर भेजा ।

" नहिं पराग, नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहि काल ।
अलि कली ही सों बाँध्यो, आगे कौन हवाल ॥

यह मार्मिक दोहा पढ़ते ही रसिक राजा के दिल में परिवर्तन आ गया । उन्होंने बिहारी को बुलाया और दोहे रचकर सुनाने का आदेश दिया । हर दोहे के लिए एक अशर्फी दी । कुल सात सौ उन्नीस दोहों की रचना की है । यही 'बिहारी-सतसई' के नाम से प्रसिद्द हुआ ।

बिहारी – विहार

(I) 1.सीस मुकुट कटि काछनी, कर मुरली उर माल ।
इहि बानक मो मन सदा, बसौ बिहारी लाल ॥4॥

कठिन शब्दार्थ :- काछनी – चुस्त धोती बानिक – वेश मग – मार्ग

1. बिहारीलाल किस वेष के कृष्ण को मन में बस जाने की कामना करते हैं ?

2. चिर जीवौ जोरी जुरै, क्यों न सनेह गंभीर ।
को घटिए वृषभानुजा, वे हलधर के वीर ॥

कठिन शब्दार्थ :-

जोरी – जोड़ी सनेह – स्नेह वृषभानुजा – बैल की बहन, वीर पुरुष की पुत्नी है

हलधर के वीर – बलराम के भाई

poem.indd 13 10-01-2019 10:44:41

1. बिहारी किस जोड़ी को चिर जुड़कर रहने की कामना करते हैं ?

2. 'हलधर के वीर' दोहे में किस से सम्बंधित है ?

3. 'वृषभानुजा' इस दोहे में किस के लिए प्रयोग हुआ है ?

3. सोहत ओढ़े पीत पट, स्याम सलौनै गात ।

मनौ नीलमनि सैल पर आतपु परयौ प्रभात ॥

इस दोहे में कवि ने कृष्ण के साँवले शरीर की सुन्दरता का वर्णन किया है । कवि का कहना है कि कृष्ण के साँवले शरीर पर पीला वस्त्र ऐसी शोभा दे रहा है, जैसे नीलमणि पहाड़ पर सुबह की सूरज की किरणें पड़ रही हैं ।

कठिन शब्दार्थ :-

पीत पर – पीले वस्त्र पर सलौना – सुंदर

1. बिहारी ने कृष्ण की शोभा का किसके साथ वर्णन किया है ?

4. या अनुरागी चित्त की, गति समुझै नहिं कोइ ।

ज्यौं-ज्यौं बूड़ै श्याम रंग, त्यौं-त्यौं उज्जलु होइ ॥

बिहारी कहते हैं कि इस प्रेमी मन की गति को कोई नहीं समझ सकता । जैसे-जैसे यह कृष्ण के रंग में रंगता जाता है, वैसे-वैसे उज्जवल होता जाता है । अर्थात कृष्ण के प्रेम में रमने के बाद अधिक निर्मल हो जाते हैं ।

कठिन शब्दार्थ :-

चित्त – मन बूड़ै – डूबे

1. कृष्ण के प्रेम में रमने का परिणाम क्या होता है ?

5. घरु-घरु डोलत दीन है, जनु-जनु जाचतु जाइ ।

दिये लोभ-चसमा चखनु लघु पुनि बड़ौ लखाई ॥

लोभी व्यक्ति दीन-हीन बनकर घर-घर घूमता है, प्रत्येक व्यक्ति से याचना करता रहता है । लोभ का चश्मा आँखों पर लगा लेने के कारण उसे निम्न व्यक्ति भी बड़ा दिखने लगता है अर्थात लालची व्यक्ति विवेकहीन होकर योग्य-अयोग्य व्यक्ति को भी नहीं पहचान पाता ।

poem.indd 14 10-01-2019 10:44:41

1. लोभ का चश्मा आँखों पर लगा लेने से मनुष्य कैसे अँधा हो जाता है ?

(II) 1. सन्दर्भ सहित व्याख्या करें ।

(पाँचो दोहे)

(III) सही शब्द चुनकर खाली जगह भरिए :-

1. कृष्ण का पीला वस्त्र सूरज की किरणें पड़ने से ---------- चमक रही है ।

   i) नीलमणि-सा ii) हीरे-सा

2. कृष्ण के प्रेम में रमने के बाद मनुष्य अधिक ----------हो जाते हैं ।

   i) भाग्यवान ii) निर्मल

3. लोभी ----------होकर योग्य-अयोग्य का फरक नहीं जान सकता ।

   i) चतुर ii) विवेकहीन

4. वृषभानुजा का अर्थ है ----------।

   i) बैल का बेटा ii) बैल की बहन

5. बिहारीलाल अपने मन में ---------- बसाते हैं ।

   i) कृष्ण को ii) राम को

poem.indd 15 10-01-2019 10:44:41

पद्य 5 भारतेंदु हरिश्चंद्र चंद्रिका

भारतेंदु हरिश्चंद्र

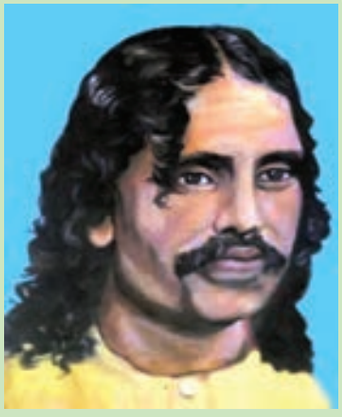

भारतेंदु हरिश्चंद्र काशी के सुप्रसिद्ध सेठ अमीचंद के वंशज थे। उनके पिता गोपालचंद्र भी कवि थे । पिता का उपनाम 'गिरिधर दास' था ।

हरिश्चंद्र का जन्म सन् 1907 में हुआ । पिताजी के प्रभाव से पाँच साल की उम्र में ही हरिश्चंद्र ने कविता लिखी । भारतेंदु की माता उन्हें पाँच वर्ष और पिताजी नौ वर्ष का छोड़कर परलोक सिधारे ।

भारतेंदु हरिश्चंद्र युग-प्रवर्तक साहित्यकार थे । हिंदी साहित्य के सभी विधाओं पर उन्होंने रचनाएँ कीं । कविता, नाटक, निबंध, एकांकी आदि लिखकर प्रसिद्ध हो गये । आपकी मृत्यु 1942 में पैंतीस वर्ष की कम उम्र में हो गई ।

उनकी काव्यकृतियों की संख्या 70 हैं । उनकी कविताओं में प्रेम-मालिका, प्रेम-सरोवर, गीत-गोविंदानंद, वर्षा विनोद, विनय-प्रेम पचासा, प्रेम-फुलवारी आदि प्रसिद्ध हैं । उनके प्रसिद्ध नाटक हैं – वैदिक हिंसा हिंसा न भवति, सत्य हरिश्चंद्र, भारत दुर्दशा, श्री चन्द्रावली, अंधेर नगरी आदि ।

भारतेंदु चंद्रिका

1. निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल ।

बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को शूल

(I) कठिन शब्दार्थ :-

1. निज – अपना, खुद का
2. उन्नति – प्रगति
3. मूल – जड़
4. नित – दिन

poem.indd 16 10-01-2019 10:44:41

भावार्थ :- भारतेंदु हरिश्चंद्र इस दोहे में मातृभाषा का महत्त्व बताते हैं । उनका कहना है कि अपनी मातृभाषा की प्रगति में ही देश का सर्वांगीण विकास होगा । मातृभाषा का प्रयोग ही देश की तरक्की का मूल है । अपनी मातृभाषा के ज्ञान के अर्जन के बिना हम अधूरे हैं ।

प्रश्न :-1. मातृभाषा का महत्त्व लेखक किस प्रकार स्पष्ट करता है ?

2. भरित नेह नव नीर नित, बरसात सुरस अघोर ।

जयति अपूरब धान कोऊ, लखि नाचन मन मोर ॥

कठिन शब्दार्थ :

1. नेह – स्नेह, प्रेम ; 2. नीर – पानी, जल ; 3. नित – रोज 4. अथोर – अत्यधिक, बहुत ; 5. जयति – जय हो! ; 6. अपूरब – अपूर्व 7. लखि – देख ; 8. घन – बादल, मेघ

यह दोहा भारतेंदु हरिश्चंद्र की नाटिका 'चन्द्रावली' से लिया गया है । यह ब्राह्मण का आशीर्वचन है ।

ब्राह्मण कहता है –" मेघ सदा प्रेम रुपी नये जल से भरा रहने वाला है । बादल प्रेम रस की वर्षा करता है । उस प्रेम मेघ को देखकर मन रुपी मोर ख़ुशी से नाचने लगता है । अतः ऐसे प्रेम बादल की जय हो । भगवान के प्रेम रुपी बादलों को देखकर ब्राह्मण का मन भी मोर के सामान नाचता है" ।

विशेष :- ईश्वर के प्रेम में मन रुपी मोर का नाचना भक्ति मार्ग का लक्षण है ।यह नाटक का मंगलाचरण है ।

प्रश्न :- 2. कवि प्रेम-बादल की जय क्यों करता है ?

3. जेहि – लहि फिर कछु लहन की, आस न जिय में होय ।

जयति जगत पावन करन, प्रेम बरन यह होय ॥

कठिन शब्दार्थ :-

लहि – पाकर, बरन – वर्ण, दोय – दो

कवि का कहना है - " पवित्र प्रेम की जय हो" ।

प्रेम के दो अक्षर संसार के लोगों को पावन बनाते हैं । उस पवित्र प्रेम के मिलने पर दूसरी वस्तुओं को पाने की इच्छा समाप्त हो जाती है ।ऐसे प्रेम की जय हो ।पवित्र प्रेम ईश्वर प्राप्ति का साधन है ।अतः प्रेम की जय हो !

poem.indd 17 10-01-2019 10:44:41

प्रश्न :- 3. हरिश्चंद्र किस पवित्र प्रेम की ओर संकेत करते हैं ?

4. चंद मिटै सूरज मिटै, मिटै जगत के नेम ।

यह दृढ़ हरिचंद को, मिटै न अविचल प्रेम ॥

कठिन शब्दार्थ : नेम –नियम , अविचल – दृढ़

यह दोहा हरिश्चंद्र नाटक से लिया गया है ।हरिश्चंद्र सत्यवादी थे । सत्य पर सदा अटल रहते थे । इस पर हरिश्चंद्र खुद कहते हैं – चंद्रमा, सूर्य जो अटल है और नियम का पालन करते हैं, वे भी बदल सकते हैं । नष्ट हो सकते हैं पर हरिश्चंद्र किसी भी हालत में अपने सत्याचरण से न हटेंगे । वे अपने सत्य पर दृढ़ रहेंगे ।

सत्य हरिश्चंद्र की सत्य परायणता का उल्लेख है ।

प्रश्न :- 4. हरिश्चंद्र अपने सत्य पालन को कैसे प्रकट करते हैं ?

5. प्राणनाथ ब्रजराज जू आरतिहार नँद नंद ।

धाइ भुजा अरि राखिये, डूबत भाव हरिचंद ॥

कठिन शब्दार्थ : आरति हर – कष्टों को दूर कर

धाइ – दौड़कर भाव – संसार

गोपी भगवान श्री कृष्ण से प्रार्थना करती है – हे प्राणनाथ ! हे व्रजराज ! तुम भक्तों के हर प्रकार के कष्ट को दूर करने वाले हो । नन्द के बेटे हो । मैं संसार सागर के कष्टों में डूबी हुई हूँ । तुम जल्दी से दौड़कर आओ । मेरी बाँहें पकड़कर डूबने से बचाओ ।

भक्तवत्सल भगवान कृष्ण वह गुण है जिसके कारण वे भक्तों की पुकार सुनकर दौड़कर आते हैं ।

प्रश्न :- 5. गोपी भगवान् कृष्ण से क्या प्रार्थना करती है ?

सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिये ।

(1) निज भाषा ----------

(2) प्राणनाथ ----------

poem.indd 18 10-01-2019 10:44:41

सही उत्तर चुनकर रिक्त स्थान भरिए ।

1. मातृभाषा देश की तरक्की का .....है ।

i) बाधक ii) मूल

2. बादल .....रस की वर्षा करता है ।

i) प्रेम ii) शंका

3. प्रेम बादल देखकर मन रुपी .....ख़ुशी से नाचता है ।

i) लहर ii) मोर

4. पवित्र .....ईश्वर प्राप्ति का साधन है ।

i) प्रेम ii) पूजा

5. हरिश्चंद्र अपने सत्य पर .....रहनेवाले हैं ।

i) दृढ़ ii) विचलित

poem.indd 19 10-01-2019 10:44:41

पद्य 6 सत्याग्रही का बयान

माखनलाल चतुर्वेदी

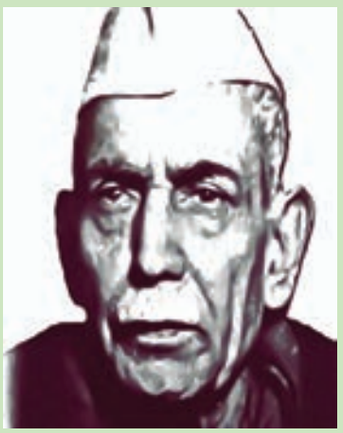

माखनलाल चतुर्वेदी जी का जन्म मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के 'बावई' नामक ग्राम में हुआ । उनके पिता वैष्णव भक्त थे ; अतः बचपन से ही इसका प्रभाव माखनलाल पर पड़ा । वे देशभक्त कवि थे । उनके नाम के साथ 'एक भारतीय आत्मा' का उपनाम जोड़ते थे ।

देश की स्वतंत्रता के संग्राम में वे बारह बार जेल गये । उनकी हर कविता में देश-प्रेम की भावना उमड़ पड़ती थी । उनके भावोद्गार में आत्मविश्वास, शक्ति, आतुरता और भावुकता का अद्भुत समावेश मिलता है ।

सत्याग्रही का बयान

कवि प्रवृति से क्रांतिकारी और व्यवहार से सत्याग्रह आन्दोलन के अहिंसक सिपाही रहे। 5 जुलाई 1921 को उन्होंने एक बंदी सत्याग्रही के रूप में अदालत में सरकार के आरोपों के जवाब में जो बयान दिया उसी पर आधारित यह कविता है । इस में सत्याग्रही कवि स्पष्ट शब्दों में कहते हैं कि मैं जो बोला, और जो मैंने किया, अपने विवेक से किया है । वे और भी कहते हैं – मैं राष्ट्रीय सभा का अनुगामी अहिंसक सैनिक हूँ । इस आन्दोलन में भाग लेना मेरा धर्म है । यह विदेशी शासन एक पापी शासन है । उसका विरोध करना श्रुति-सम्मत है । कवि यह भी घोषित करते हैं, गिरे हुए अर्थात पराधीन राष्ट्रों का उत्थान अवश्यंभावी है, जिस के लिए मैं पहले अपने जीने-मरने का धन भारत को स्वतंत्र बनाऊँगा ।

समझ-बूझकर बढ़ा क्षेत्र में
चित्त नहीं मेरा डोला,
मैंने जो कुछ कहा सच कहा,
अच्छी नीयत से बोला ॥
बोला वही देश के अगणित

poem.indd 20 10-01-2019 10:44:41

गुंजा चुके जो भाषण-मंच,
उद्योगी था वचन, भाव, कृति
में न कभी रह पावे रंच ।

हूँ राष्ट्रीय सभा का सैनिक
छोटा-सा अनुगामी हूँ ।
उसकी ध्वनि पर मर मिटने में
मैं खुद अपना स्वामी हूँ ।

पर इतना ही नहीं, राष्ट्र की
आज्ञा या उद्धारक कर्म
आज अहिंसक असहकारिता
है मेरे जीवन का धर्म ॥

सब मतवाले कहें भले ही
मैं जड़ जीव निराला हूँ
मैं मेरे पिंजरे का कैदी
असहाय मतवाला हूँ ।

हिंसा और घृणा दोनों ही
है मेरे मजहब से पाप
दोनों मेरे साथ नहीं हैं,
होते करता पश्चाताप ॥

किन्तु पापियों के पापों पर
मुझको बिलकुल प्यार नहीं,
प्यार करे अत्याचारी पर
मुझको बिलकुल स्वीकार नहीं ।

poem.indd 21 10-01-2019 10:44:41

पापी शासन पर अप्रियता
उपजाना श्रुति - सम्मत है
इसीलिए जालिम पर ममता
न हो, यही मेरा मत है ।
बाकी एक उपाय बचा था
जिसकी की गाँधी ने याद
शीघ्र अहिंसक असहयोग से
मातृभूमि होवे आजाद ।

गिरे हुए राष्ट्रों को – मेरा
मत है – शीघ्र उठाने को,
उनकी मुरझी हुई नसों में
जीवन-ज्योति जगाने को,
ये बातें हों याद, प्रथम
भारत है हृदय दुलारा देश
मेरे मरने – जीने का धन
प्यारा पूज्य हमारा देश ।

कठिन शब्दार्थ :

चित्त – मन ; जालिम – अत्याचारी

बयान – कथन ; रंच – तनिक, ज़रा ;

श्रुति – वेद ; दुलारा – प्यारा

I. प्रश्नों के उत्तर दीजिये ।

1. किस बात के लिए कवि अपने को अपना स्वामी कहते हैं ?
2. कवि दृढ़ मन से कब आगे बढ़ा ?
3. कवि क्या बोला करता था ?

poem.indd 22 10-01-2019 10:44:41

4. कवि का जीवन धर्म क्या है ?

5. कवि के मज़हब में पाप क्या है ?

6. कवि किसको कभी स्वीकार नहीं करते ?

7. कवि वेद किसे मानते थे ?

8. किस पर ममता न होनी चाहिए ?

9. देश की आज़ादी कब मिलनी है ?

10. भारत का धन क्या हैं ?

II. सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिये ।

1. सब मतवाले कहें भले ही

   मैं जड़ जीव निराला हूँ

   मैं मेरे पिंजरे का कैदी

   असहाय मतवाला हूँ

2. पापी शासन पर अप्रियता

   उपजाना श्रुति सम्मत हैं

   इसलिए जालिम पर ममता

   न हो, यही मेरा मत है ।

3. बाकि एक उपाय बचा था,

   जिसकी की गाँधी ने याद ।

   शीघ्र अहिंसक असहयोग से

   मातृभूमि होवे आज़ाद ।

III. सही शब्द चुनकर खाली जगह पूरा कीजिये ।

1. कवि राष्ट्रीय सभा का .....है । 1. नेता 2. सैनिक

2. देश की ध्वनि पर मर मिटने में कवि .....है । 1. बेगार 2. स्वामी

3. कवि के जीवन का धर्म ..... है । 1. हिंसा 2. अहिंसा

poem.indd 23 10-01-2019 10:44:41

4. कवि के मजहब में पाप .....और .....हैं । 1. नफरत, हिंसा 2. अहिंसा, प्यार

5. अत्याचारों पर प्यार करना कवि को .....है । 1. स्वीकार 2. अस्वीकार

6. कवि ने आज़ादी के उपाय को ....याद दिलायी । 1. नेहरु 2. गाँधी

7. कवि को मरने-जीने का धन .....है । 1. उच्च पद पाना 2. देश के लिए जीना-मरना

poem.indd 24 10-01-2019 10:44:41

पद्य 7 परिचय

श्रीमती महादेवी वर्मा

श्रीमती महादेवी वर्मा का जन्म उत्तर प्रदेश के फ़र्रुखाबाद में सन् 1907 में हुआ । उनकी प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई । एक पंडित, एक मौलवी, एक चित्र शिक्षक और एक संगीत शिक्षक सबने उनको पढ़ाया । छायावाद और रहस्यवाद के श्रेष्ठतम कवियों में कवयित्री श्रीमती महादेवी वर्मा प्रसिद्ध हैं ।



श्रीमती महादेवी वर्मा

महादेवी वर्मा की प्रमुख रचनाएँ हैं -

काव्य संग्रह : नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, दीपशिखा, बंगदर्शन, सप्तपर्ण, हिमालय ।

रेखा चित्र : अतीत के चलचित्र, शृंखला की कड़ियाँ, स्मृति की रेखाएँ, पथ के साथी, साहित्यकार की आत्मा आदि ।

इस गीत में कवयित्री एक तरह से अपना आत्मपरिचय ही दे डालती है । इसमें अद्वैत की भावना स्पष्ट है । अपने प्रियतम के साथ तादात्म्य का अनुभव कवयित्री करती हैं । बीन और उसकी रागिनी जिस प्रकार एक दूसरे से भिन्न नहीं, उसी प्रकार उनका भी अस्तित्व प्रियतम से अभिन्न है ।

बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ!
नींद थी मेरी अचल निस्पंद कण-कण में,
प्रथम जागृति थी जगत के प्रथम स्पंदन में;
प्रलय में मेरा पता पद –चिह्न जीवन में,

शाप हूँ जो बन गया वरदान बंधन में;
कूल भी हूँ कूलहीन प्रवाहिनी भी हूँ ।
नयन में जिसके जल्द वह तृषित चातक हूँ ।
शलभ जिसके प्राण में वह निठुर दीपक हूँ;

poem.indd 25 10-01-2019 10:44:41

शूल को उर में छिपाये विकल बुलबुल हूँ,
एक होकर दूर तन से छाँह वह चल हूँ;
दूर तुमसे हूँ अखंड सुहागिनी भी हूँ!
आग हूँ जिससे ढुलकते बिंदु हिमजल के,

शून्य हूँ जिसको बिछे हैं पाँवड़े पल के;
पुलक हूँ वह जो पला है कठिन प्रस्तर में,
हूँ वही प्रतिबिम्ब जो आधार के उर में;
नील घन भी हूँ सुनहली दामिनी भी हूँ!

नाश भी हूँ अनंत विकास का क्रम भी;
त्याग का दिन भी चरम आसक्ति का तम भी;
तार भी आघात भी झंकार की गति भी,
पात्र भी मधु भी मधुप भी मधुर विस्मृति भी;
अधर भी हूँ और स्मित की चाँदनी भी हूँ !

कठिन शब्दार्थ

बीन – वीणा कूल – नदी का किनारा तृषित - प्यासा

उर - हृदय पाँवड़े - किसी के सम्मानार्थ मार्ग में बिछाये गये कपड़े

पुलक - रोमांच प्रस्तर - पत्थर दामिनी - बिजली

I. प्रश्नों के उत्तर दीजिये :

1. परिचय कविता में कवयित्री किसका परिचय देती है ?
2. अद्वैत की भावना समझाइए ?
3. अखंड सुहागिनी का अर्थ लिखिए
4. कवयित्री के प्रियतम उनसे कैसे अभिन्न हैं ?

II. सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिये ।

poem.indd 26 10-01-2019 10:44:41

1. आग हूँ जिससे ढुलकते बिंदु हिमजल के

शून्य हूँ जिसको बिछे हैं पाँवड़े पल के ;

पुलक हूँ वर जो पला है कठिन प्रस्तर में

हूँ वही प्रतिबिम्ब जो आधार के उर में

III. सही शब्द चुनकर खाली जगह भरें :-

1. कवयित्री कठिन पत्थर में पला .....है । i) दुःख ii) आनंद
2. कवयित्री का पता प्रलय में .....में है । i) मार्ग ii) पद चिन्ह
3. कवयित्री शूल को उर में छिपाये ..... हैं। i) चातक ii) बुलबुल
4. कवयित्री वीणा है और उसकी .....है । i) तार ii) रागिनी
5. स्मित की .....हैं । i) रोशनी ii) चाँदनी

poem.indd 27 10-01-2019 10:44:41

पद्य

8 सहर्ष स्वीकारा है

गजानन माधव 'मुक्तिबोध'



गजानन माधव 'मुक्तिबोध' (1917-1964 ई.) का जन्म ग्वालियर के श्योपुर कसबे में हुआ था, जहाँ सौ साल पहले उनके पूर्वज आ बसे थे । पिता पुलिस में सब इंसपेक्टर थे, जिनकी बार-बार बदली होने के कारण 'मुक्तिबोध' की पढाई का क्रम टूटता-जुड़ता रहा । सन् 1953 में उन्होंने नागपुर विश्वविद्यालय से हिंदी में एम. ए. करने के बाद राजनाद गाँव म. प्र. के डिग्री कॉलेज में अध्यापन कार्य आरंभ किया और जीवन पर्यंत वहीं रहे । वे शिक्षक, पत्रकार तथा सरकारी और गैर सरकारी नौकरियाँ पकड़ते-छोड़ते रहे।

'मुक्तिबोध' का जीवन संघर्षों और विरोधों के बीच बीता । उन्होंने विविध दार्शनिक विचारधाराओं का गंभीर अध्ययन किया । उनकी प्रतिभा का सर्वप्रथम परिचय उस समय हुआ जब 'अज्ञेय' द्वारा संपादित तार सप्तक (1943) में उनकी रचनाएँ प्रकाशित हुईं ।

'मुक्तिबोध' की रचनाओं में जटिल बिम्ब और प्रतीक, विलक्षण बौद्धिकता, गहरी अंतर्दृष्टि और व्यापक संवेदना रहती है । उनकी अनेक लम्बी कविताओं में विराट रचनाधर्मिता पायी जाती है तथा उनका कवित्व, वैचारिक चिंतन, विस्तृत ज्ञान एवं संवेदना से भरा है । उनकी कविता आधुनिक जागरूक व्यक्तित्व के आत्मसंघर्ष की कविता है तथा उसमें सम्पूर्ण परिवेश के बीच अपने आपको खोजने-पाने के साथ-साथ अपने आपको बदलने की प्रक्रिया का भी चित्रण मिलता है । उन्होंने अपनी संवेदना और ज्ञान के अनुसार एक विशिष्ट काव्य शिल्प का निर्माण किया है । यह प्रकाल्पता शैली वास्तविकता की अबूझ रेखाओं को गौरवत्व प्रदान करती है । 'मुक्तिबोध' जीवन के वैविध्यपूर्ण विकास-क्रम को देखने के लिए काव्य के भिन्न-भिन्न रूपों को – यहाँ तक कि नाट्य तत्व को भी कविता में स्थान देने के हिमायती हैं ।

{'सहर्ष स्वीकारा है' 'मुक्तिबोध' की एक सशक्त कविता है, जिसमें कवि ने अपने जीवन के समस्त खट्टे-मीठे अनुभवों, कोमल-तीखी अनुभूतियों और दुःख-सुख की स्थितियों को इसलिए सहर्ष स्वीकारा है,

poem.indd 28 10-01-2019 10:44:42

क्योंकि वह अपने किसी भी क्षण को अपने प्रिय से न केवल अत्यंत जुड़ा हुआ अनुभव करता है, अपितु हर स्थिति-परिस्थिति को उसी की देन मानता है।}

ज़िंदगी में जो कुछ है, जो भी है
सहर्ष स्वीकारा है,
इसलिए कि जो कुछ भी मेरा है
वह तुम्हे प्यारा है ।

गरवीली गरीबी यह, ये गंभीर अनुभव सब
यह विचार – वैभव सब
दृढ़ता यह, भीतर की सरिता यह अभिनय सब
मौलिक है, मौलिक है,
इसलिए कि पल-पल में
जो कुछ भी जाग्रत है, अपलक है-
संवेदन तुम्हारा है !!

जाने क्या रिश्ता है, जाने क्या नाता है
जितना भी ऊँड़ेलता हूँ, भर-भर फिर आता है
दिल में क्या झरना है ?
मीठे पानी का सोता है
भीतर वह, ऊपर तुम
मुसकाता चाँद ज्यों धरती पर रात-भर
मुझपर त्यों तुम्हारा ही खिलता वह चेहरा है ।

सचमुच मुझे दंड दो कि भूलूँ मैं
भूलूँ मैं
तुम्हें भूल जाने की
दक्षिण ध्रुवी अन्धकार-अमावस्या
शरीर पर, चेहरे पर, अंतर में पालूँ मैं

poem.indd 29 10-01-2019 10:44:42

झेलूँ मैं, उसीमें नहा लूँ मैं

इसलिए कि तुमसे ही परिवेष्टित आच्छादित

रहने का रमणीय यह उजेला अब

सहा नहीं जाता है ।

ममता के बादल की मंडराती कोमलता-

भीतर पिराती है

कमज़ोर और अक्षम अब हो गयी है आत्मा यह

छटपटाती छाती को भवितव्यता डराती है

बहलाती सहलाती आत्मीयता बरदाश्त नहीं होती है !!

सचमुच मुझे दंड दो कि हो जाऊँ

पाताली अंधेरे की गुहाओं में, विवरों में

धुएँ के बादलों में

बिलकुल मैं लापता

लापता कि वहीं भी तो तुम्हारा ही सहारा है !!

इसलिए कि जो कुछ भी मेरा है

या मेरा जो होता-सा लगता है होता-सा संभव है

सभी वह तुम्हारे ही कारण के कार्यों का घेरा है, कार्यों का वैभव है

अब तक तो ज़िंदगी में जो कुछ था, जो कुछ है

सहर्ष स्वीकारा

इसलिए कि जो कुछ भी मेरा है

वह तुम्हें प्यारा है ।

कठिन शब्दार्थ :

स्वीकारा है – माना है

गरवीली – गर्व-भाव देनेवाली

poem.indd 30 10-01-2019 10:44:42

I. प्रश्नों के उत्तर दीजिये ।

1. कवि ने क़ैसे अपनी कठिन परिस्थितियों को सहर्ष स्वीकारा है ?
2. कवि को सहर्ष जीने के लिए कौन-कौन से मौलिक गुण मिले हैं ?
3. कवि किन बातों से सह नहीं पाता ?
4. कवि ने किसे सहर्ष स्वीकारा है ?
5. कवि के ह्रदय में माधुर्य का झरना कब उमड पडता?
6. कवि क्यों दंड चाहता है ?

II. सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिये ।

1. गरवीली गरीबी .....संवेदन तुम्हारा है ।
2. कमजोर और अक्षम ..... बर्दाश्त नहीं होती ।

III. सही शब्द का चयन करके रिक्त स्थान भरिए :-

1. गजानन माधव गरीबी के कारण .....है । 1. दुखी 2. गरवीले
2. दक्षिणी ध्रुवी अन्धकार – अमावस्या .....उसे भूल जाने का है । 1. कष्ट 2. जिंदगी
3. 'अमावस्य' अन्धकार .....प्रतीक 1. आशा का 2. निराशा का

poem.indd 31 10-01-2019 10:44:42

पद्य 9 काल तुझसे होड़ है मेरी

शमशेर बहादुर सिंह



शमशेर बहादुर सिंह का जन्म 03 जनवरी, 1911 को मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश) के एलम ग्राम में हुआ । शिक्षा देहरादून तथा प्रयाग में हुई । ये हिंदी तथा उर्दू के विद्वान थे । प्रयोगवाद और नई कविता के कवियों की प्रथम पंक्ति में इनका स्थान है । इनकी शैली अंग्रेजी कवि एजरा पाउन्ड से प्रभावित है । इनके मुख्य काव्य संग्रह हैं – 'कुछ कवितायें', 'कुछ और कवितायें', 'इतने पास अपने', 'चुका भी हूँ', 'बात बोलेगी', 'उदिता' तथा 'काल तुझसे होड़ है मेरी' ।

सहजता शमशेर बहादुर सिंह के जीवन और काव्य की प्रमुख विशेषता है । न औपचारिकता, न पाखण्ड । जैसा जीवन वैसा लेखन । उनके अनुभव का सूत्र पकड़ में आ जाए, तो दुरूह जान पड़नेवाली कविता भी खुल जाती है । निराला उनके प्रिय कवि थे, एक जैसा आर्थिक और भावात्मक अभाव । बचपन में माँ की मृत्यु, युवाकाल में पत्नी की मृत्यु, अनियमित रोजगार और अकेलापन । देर से ही सही, उन्हें बड़े-बड़े पुरस्कार भी मिले – साहित्य अकादमी पुरस्कार (1977), मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार (1987), कबीर सम्मान (1989) ।

शमशेर का अपना जीवन निम्नमध्यवर्गीय औसत जीवन था । उन्होंने स्वाधीनता और क्रांति को अपनी निजी चीज की तरह अपनाया । उनका कवि व्यक्तित्व नम्रता, दृढ़ता, फाकामस्ती तथा आत्मविश्वास के योग से बना था । वे उन कवियों में थे, जिनके लिए मार्क्सवाद की क्रन्तिकारी आस्था और भारत की सुदीर्घ सांस्कृतिक परंपरा में विरोध नहीं था। वैदिक कवियों की तरह वे प्रकृति की लीला को पूरी तन्मयता से अपनाते हैं ।

शमशेर का निधन 12 मई, 1993 को अहमदाबाद में हुआ ।

{शमशेर बहादुर सिंह 'काल तुझसे होड़ है मेरी' रचना में दिलेरी के साथ मौत से चुनौती का ऐलान करते हैं । कहते हैं – ऐ काल ! तुझसे अधिक मैं अपराजित हूँ, जो तुझमें वास करता हूँ। भाव–सुख-सत्य की सत्ता को मानते हुए भी मैं तुझसे ऊपर हूँ और यह विशेषताएँ तुझमें नहीं हैं । अनेक कला- विज्ञान और जीवित वैभव से समानांतर का मेरा सम्बन्ध है, जिससे तू अलग है ।}

poem.indd 32 10-01-2019 10:44:42

काल,

तुझसे होड़ है मेरी : अपराजित तू

तुझमें अपराजित मैं वास करूँ ।

इसलिए तेरे हृदय में समा रहा हूँ

सीधा तीर-सा, जो रुका हुआ लगता हो

कि जैसा ध्रुव नक्षत्र भी न लगे,

एक एकनिष्ट, स्थिर, कालोपरि

भाव, भावोपरि

सुख, आनंदोपरि

सत्य, सत्यासत्योपरि

मैं – तेरे भी, ओ 'काल' ऊपर !

सौंदर्य यही तो है, जो तू नहीं है, ओ काल!

जो मैं हूँ-

मैं कि जिसमें सब कुछ है .....

क्रांतियाँ, कम्यून,

कम्यूनिस्ट समाज के

नाना कला विज्ञान और दर्शन के

जीवंत वैभव से समन्वित

व्यक्ति मैं ।

मैं, जो एक हरेक हूँ

जो, तुझसे, ओ काल, परे है

कठिन शब्दार्थ :-

काल	–	यम, समय, वक्त	होड़	–	स्पर्धा
अपराजित	–	जिसे हराया नहीं जाता	वास करना	–	रहना
कालोपरि	–	काल के ऊपर			

poem.indd 33 10-01-2019 10:44:42

I. प्रश्नों के उत्तर दीजिये ।

1. कवि काल से अपराजित वासी समझाइए ?
2. कवि का तर्क क्या है?
3. कवि स्वयं को क्या मानते हैं ?

II. सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिये ।

1. जो मैं हूँ .....ओ काल, परे है ।

III. सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरें ।

1. काल कवि से .....है । 1. पराजित 2. अपराजित
2. कवि अपने को .....व्यक्ति कहते हैं । 1. समन्वित 2. एकांत
3. लेखक की होड़ .....है । 1. समाज से 2. काल से

poem.indd 34 10-01-2019 10:44:42

गद्य 10 टालस्टाय फार्म

महात्मा गाँधी

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का पूरा नाम मोहनदास करमचंद गांधी था। हम उन्हें प्यार से बापू पुकारते हैं। इनका जन्म 2 अक्टूबर 1869 को गुजरात के पोरबंदर में हुआ। सभी स्कूलों और शासकीय संस्थानों में 2 अक्टूबर को इनकी जयंती मनाई जाती है। उन्हीं की प्रेरणा से हमारा देश 15 अगस्त 1947 को आजाद हुआ।गांधीजी के पिता करमचंद गांधी राजकोट के दीवान थे। इनकी माता का नाम पुतलीबाई था। वह धार्मिक विचारों वाली थी। उन्होंने हमेशा सत्य और अहिंसा के लिए आंदोलन चलाए। गांधीजी वकालत की शिक्षा प्राप्त करने के लिए इंग्लैंड भी गए थे। वहां से लौटने के बाद उन्होंने बंबई में वकालत शुरू की। महात्मा गांधी सत्य और अहिंसा के पुजारी थे। एक बार गांधीजी मुकद्दमे की पैरवी के लिए दक्षिण अफ्रीका भी गए थे। वह अंग्रेजों द्वारा भारतीयों पर अत्याचार देख बहुत दुखी हुए। उन्होंने डांडी यात्रा भी की। गांधीजी की 30 जनवरी को प्रार्थना सभा में नाथूराम गोडसे ने गोली मारकर हत्या कर दी। महात्मा गांधी की समाधि राजघाट दिल्ली पर बनी हुई है।



{दक्षिण अफ्रीका में रहते समय गांधीजी ने एक आश्रम स्थापित किया था, जिसका नाम था टालस्टाय फार्म। उन्हीं दिनों दक्षिण अफ्रीका में रहने वाले प्रवासी भारतीयों को अपना अधिकार दिलाने के लिए वे सत्याग्रह का युद्ध कर रहे थे। वह आश्रम सत्याग्रहियों के लिए प्रशिक्षण शिविर था। उस आश्रम का वर्णन गांधीजी के ही शब्दों में नीचे दिया जाता है।}

ज़मीन 100 एकड़ थी। उसके एक सिरे पर एक छोटी-सी टुकड़ी थी, जिसपर एक छोटा-सा मकान भी था। फल के कुछ पेड़ थे, जिनमें नारंगी, अप्रिकाट, प्लम आदि खूब पैदा होते थे – इतनी तादाद में कि मौसम में सत्याग्रहियों के पेट-भर खाने पर भी बचे रहते। एक छोटा-सा झरना भी था, जिससे स्वच्छ पानी मिल सकता था। रहने के स्थान से वह कोई 600 ग़ज की दूरी पर होगा। पानी काबड़ों से लाना पड़ता।

prose.indd 35 10-01-2019 10:48:37

इस स्थान पर हमने यह नियम रखा कि नौकरों के द्वारा किसी प्रकार का घर या मकान बाँधने का या खेती का काम भी न लिया जाए। इसलिए पाखाने साफ़ करने से लेकर खाना पकाने तक के सभी काम प्रत्येक कुटुंब को स्वयं ही करना पड़ता था। कुटुम्बों को रखना तो था, पर पहले ही से यह नियम बना रखा था कि स्त्रियों और पुरुषों को अलग-अलग ही रखा जाए। इसलिए मकान भी अलग-अलग और दूर-दूर ही बनाये गये। दस स्त्रियों और साठ पुरुषों के रहने योग्य मकान बनाने का फ़ौरन निश्चय किया गया। मि. कैलनबेक के रहने के लिए भी एक मकान बनाना था और उसके साथ ही साथ एक पाठशाला के लिए भी। इनके अलावा बढ़ईखाना, मोचीखाना आदि के लिए भी एक मकान बना लेना आवश्यक था।

यहाँ पर जो लोग रहने के लिए आने वाले थे, वे गुजरात, मद्रास, आंध्र और उत्तर भारत के थे। धर्मानुसार वे हिन्दू, मुसलमान, फ़ारसी और ईसाई भी थे। लगभग 40 तरुण, दो-तीन बूढ़े, पाँच स्त्रियाँ और 25-30 बच्चे थे, जिनमें 4-5 बालाएँ थीं।

स्त्रियों में से जो ईसाई थीं, उन्हें और दूसरों को भी माँसाहार की आदत थी। मि. कैलनबेक का और मेरा अभिप्राय था कि बड़ा अच्छा हो यदि माँसाहार को स्थान न दिया जाए। पर सवाल यह था कि ऐसे लोगों को कुछ समय के लिए भी मांस छोड़ने के लिए किस तरह कहा जाए, जिन्हें जन्म ही से माँस से कोई नफ़रत न हो। माँसाहार देने से खर्च बेहद बढ़ जाता । फिर जिन्हें गो-मांस खाने की आदत हो, उन्हें क्या वह दिया जाए ? रसोई-घर कितने हो ? मेरा धर्म क्या था ? इन सब कुटुम्बों को द्रव्य देकर मैं मांसाहार गो-माँस का व्यवहार करने के लिए, अप्रत्यक्ष रूप से क्यों न हो, सहायता तो कर ही रहा था। अगर मैं यह नियम कर दूँ कि माँसाहारी को सहायता नहीं मिल सकती, तब तो मुझे शुद्ध निरामिषभोजी लोगों के बल पर ही सत्याग्रह चलाना पड़ेगा। पर यह हो भी कैसे सकता था ? युद्ध तो तमाम भारतीयों के लिए था। मैं अपना धर्म स्पष्ट रूप से समझ गया। ईसाई या मुसलमान भाई यदि गो-मांस भी माँगते, तो भी उनको मुझे वह देना ही पड़ता। मैं उनको यहाँ आने से रोक नहीं सकता।

पर प्रेम का सहायक परमात्मा है। मैंने तो सरलतापूर्वक ईसाई बहिनों के सामने अपनी संकटापन्न दशा रखी। मुसलमान माता-पिताओं ने तो मुझे यह छुट्टी दे रखी थी कि मैं केवल निरामिष पाकशाला रखूँ। बहनों के साथ मुझे बातचीत कर लेना अभी बाकी था। उनके पुत्र या पति जेलों में ही थे। वे भी मुझे सम्मति दे चुके थे। कई बार उनके साथ ऐसे प्रसंग हम लोगों के सामने उपस्थित हुए थे। बहनों के साथ इतना निकट सम्बन्ध होने का यह पहला ही अवसर था। उनके सामने मैंने मकान-संबंधी असुविधा, धनाभाव और अपने व्यक्तिगत विचार, इन तीनों बातों को रख दिया। साथ ही यह कहकर मैंने उन्हें निर्भय भी कर दिया था कि यदि वे चाहेंगी, तो मैं उन्हें गो-मांस भी दे दूँगा। बहनों ने प्रेम-भाव से यह स्वीकार कर लिया कि वे माँस नहीं मँगाएँगी।

prose.indd 36 10-01-2019 10:48:37

खाना पकाने का काम बहनों को सौंप दिया। उनकी सहायता के लिए हममें से एक-दो पुरुष भी रख दिये गये जिनमें मैं तो अवश्य ही था। मेरी उपस्थिति छोटे-छोटे मतभेद के मामलों को यों ही भगा दिया करती थी। यह भी तय हुआ कि भोजन बिलकुल सादा हो। भोजन करने का समय भी निश्चित कर दिया गया। इसके लिए पाकशाला एक ही रखी गयी। सब एक साथ ही भोजन करते। सब अपने-अपने बर्तन भी साफ़ कर लिया करते। सार्वजनिक बर्तन साफ़ करने के लिए बारियाँ मुक़र्रर कर दी गयीं थी। मुझे यहाँ पर यह कह देना चाहिए कि टालस्टाय फार्म बहुत दिन तक चलता रहा, पर वहाँ न तो कभी भाइयों ने मांसाहार के लिए इच्छा ज़ाहिर की और न बहनों ने। शराब,तम्बाकू आदि तो पहले से बंद थे।

मैं पहले लिख चुका हूँ कि हमारा यह भी आग्रह था कि मकान बाँधने का काम हमीं-हम कर लें। राज तो स्वयं कैलनबेक ही थे। उन्होंने एक और यूरोपियन साथी ढूँढ लिया। एक गुजराती बढ़ई ने मुफ़्त सहायता देना स्वीकार किया और वही दूसरे एक बढ़ई को भी कम मज़दूरी पर तय कर लिया। हम लोगों में जो मज़बूत और फुर्तीले बदनवाले थे, उन्होंने तो हद कर दी।

बिहारी नामक एक बढ़िया सत्याग्रही था। उसने बढ़ई का आधा काम अपने ज़िम्मे ले लिया। स्वच्छता रखना, शहर में आकर वहाँ से सामान लाना आदि काम सिंह के समान बहादुर तंबि नायुडू ने अपने ज़िम्मे ले लिया।

इस टुकड़ी में एक भाई प्रागजी देसाई थे। उन्होंने अपने जीवन में कभी धूप-जाड़ा नहीं सहा था। और यहाँ तो जाड़ा था, धूप थी और बारिश का मौसम था। हमने अपना श्रीगणेश तो तंबू में रहकर किया था। मकान बनकर तैयार हों, तब उनमें सोएँ। करीब दो महीनों के अन्दर मकान तैयार हो गये। मकान टीन के थे, इसलिए उनको बनाने में कोई देरी नहीं लगी। आवश्यक आकार-प्रकार की लकड़ी तैयार मिल सकती थीं। केवल नाप-नूपकर टुकड़े माल करना पड़ता। दरवाज़े, खिड़कियाँ आदि ज्यादा नहीं बनाने थे, इसलिए इतने थोड़े समय में सभी मकान तैयार हो गये। पर इस काम-काज ने भाई प्रागजी की खूब ख़बर ले डाली। जेल की बनिस्बत फ़ार्म का काम जरूर ही अधिक सख्त था। एक दिन तो परिश्रम और बुख़ार के कारण वह बेहोश तक हो गये। पर वह यों इतनी जल्दी हारने वाले आदमी न थे। यहाँ उन्होंने अपने शरीर को पूरी तरह मेहनत पर चढ़ा दिया; अंत में इतनी शक्ति प्राप्त कर ली कि वह सबके साथ-साथ काम करने लग गये।

यही हाल जोसेफ़ रायप्पन का था। वह तो बैरिस्टर थे, पर उन्हें इस बात का अहंकार नहीं था। वह अधिक कठिन परिश्रम नहीं कर सकते थे। ट्रेन से अपना असबाब उतारकर उसे बाहर गाड़ी पर रख देना भी उनके लिए कठिन था। परन्तु यहाँ तो वह भी मेहनत पर चढ़ गये। उन्होंने वह सब यथाशक्ति कर लिया। टालस्टाय फ़ार्म पर कमज़ोर आदमी सशक्त हो गये और सभी परिश्रम के आदमी हो गये।

prose.indd 37 10-01-2019 10:48:38

हाँ, तो सैर की बात! जिनको सैर करने के लिए जोहान्सबर्ग जाने की इच्छा होती, वे सप्ताह में एक या दो बार जाते। पर उसी दिन लौट आते। आश्रम जोहान्सबर्ग से 21 मील था। पैदल जाने के इस नियम से सैकड़ों रुपये बच गये और पैदल जाने वालों को भी लाभ हुआ। कितनों ही को तो चलने का नवीन अभ्यास हो गया। नियम यह था कि इस तरह जानेवालों को रात के दो बजे उठकर निकल पड़ना चाहिए। सब छः से सात घंटों के अन्दर जोहान्सबर्ग पहुँच आते। कम से कम समय में पहुँचनेवाले को क़रीब चार घंटे और अठारह मिनट लगते।

पाठक यह ख्याल न कर लें कि ये नियम हद से ज्यादा कठोर थे। सभी बड़े प्रेमपूर्वक इनका पालन करते थे। बलात्कार से तो, मैं एक भी आदमी को नहीं रोक सकता था। नौजवान तो, क्या सफ़र में और क्या आश्रम में – सभी काम हँसते-हँसते कर डालते। मज़दूरी करते समय इतना ऊधम मचाते कि उन्हें रोकते-रोकते मुश्किल हो जाती। आश्रम पर तो नियम बना लिया था कि बच्चों से उतना ही काम लिया जाए, जितना उन्हें खुश रखते हुए लिया जा सके। पर मज़ा यह कि इसके कारण कभी कम काम नहीं हुआ।

पाखानों की कथा समझ लेने योग्य है। आश्रम एक बहुत बड़ी बस्ती हो गयी थी, फिर भी कहीं किसी को कूड़ा-कचरा; मैला या जूठन ढूँढने नहीं मिल सकती थी। सभी कूड़ा-कचरा एक गड्ढे में डालकर ऊपर से मिट्टी डाल दी जाती। रास्ते में कोई पानी तक नहीं डालता था। सब पानी बर्तनों में एकत्र कर लिया जाता और पेड़ों में डाल दिया जाता। जूठन और साग के कचरे से सुन्दर खाद बन जाती। रहने के मकान के नज़दीक ज़मीन में एक चौरस टुकड़ा डेढ़ फुट गहरा खोद रखा था। उसी में सब मैला गाड़ दिया जाता और ऊपर से खोदी हुई मिट्टी दबा दी जाती। ज़रा भी दुर्गन्ध नहीं आती थी। मक्खी तक वहाँ नहीं भिनभिनाती थी। मतलब यह कि किसी को वह ख्याल तक नहीं होता था कि वहाँ मैला गड़ा हुआ है। अलावा इसके खेत को भी सुन्दर खाद मिलती। अगर हम मैल का सदुपयोग करना सीख लें, तो लाखों रुपये की खाद बचा लेंगे और स्वयं अनेक रोगों से बच जाएँगे।

अब हमारा काम यह था कि सत्याग्रही कुटुम्बों को उद्यमी रखें, पैसे बचावें और अंततः हम स्वाश्रयी बन जाएँ। हमने सोचा कि अगर हम इतना कर गुजरें, तो चाहे जितने समय तक लड़ सकेंगे। जूतों का खर्च भी तो था ही। बंद जूते पहनने से गर्मी में तो बड़ी हानि होती है। सारे पैर में पसीना हो आता है और वह नाज़ुक हो जाता है। हमारे-जैसे आबोहवावाले देशों में रहनेवालों को तो मोजों की आवश्यकता ही नहीं है। हाँ, कंकड़, पत्थर,काँटा आदि से पैर की रक्षा करने के लिए हमने एक हद तक जूते को आवश्यक माना था। इसलिए हमने कंटक-रक्षक, अर्थात् चप्पल बनाने का धंधा सीखने का निश्चय किया। दक्षिण अफ्रीका में ट्रपिस्ट नामक रोमन कैथलिक पादरियों का एक मठ है। वहाँ पर इस तरह के उद्योग चलते हैं। उनमें से एक मठ में जाकर कैलनबेक ने चप्पल बनाना सीख लिया, और मुझे तथा साथियों को भी सिखा दिया। इस तरह कितने ही युवक चप्पल

prose.indd 38 10-01-2019 10:48:38

बनाना सीख गये और हम अपने मित्र-वर्ग में उनको बेचने में लग गये। कहने की आवश्यकता नहीं कि मेरे कई चेले इस कला में मुझसे बहुत आगे बढ़ गये।

बालक-बालिकाओं और युवकों के लिए पाठशाला तो अवश्य होनी चाहिए न ? यह काम सबसे कठिन मालूम हुआ और अब तक पूर्णता को नहीं पहुँचा था। शिक्षा का भार खासकर मि. कैलनबेक और मुझपर था। पाठशाला का समय दोपहर बाद ही रखा जा सकता था। मजदूरी करते-करते हम दोनों खूब थक जाते। विद्यार्थी भी जरूर थक जाते। अर्थात् बड़ी देर तक मारे नींद के वे भी झोंके खाते और हम भी आँखों पर पानी लगाते, बच्चों के साथ हँसी खेल करते और उनका तथा अपना भी आलस्य भगाते। पर कई बार यह सब प्रयत्न निष्फल होता। शरीर को आराम देना ही पड़ता। किन्तु यह तो पहला और सबसे छोटा विघ्न हुआ, क्योंकि ऊँघते रहने पर भी वर्ग को तो शुरू ही रखते। किन्तु सबसे बड़ी कठिनाई तो यह थी कि तमिल, तेलुगु और गुजराती इन तीन भाषाओं के बोलनेवालों को एक साथ क्या और किस तरह पढ़ाया जाए। मातृभाषा के द्वारा शिक्षा देने का लोभ तो हमें अवश्य ही रहता था। तमिल तो मैं जानता भी था, पर तेलुगु तो कसम खाने को भी नहीं। इस हालत में अकेला शिक्षक क्या-क्या कर सकता था ? युवकों में से कुछ से शिक्षा का काम लेना शुरू किया। पर वह सफल नहीं हुआ । भाई प्रागजी का उपयोग अवश्य ही होता था। युवकों में कई नटखट थे, और कुछ आलसी। किताबों से उनकी कभी बनती ही नहीं थी। भला, ऐसे विद्यार्थी पाठों के पास क्योंकर जाएँ ? फिर मेरा काम भी अनियमित रहता था। आवश्यकता पड़ने पर मुझे जोहान्सबर्ग जाना ही पड़ता था। यही हाल मि. कैलनबेक का था। दूसरी कठिनाई धार्मिक शिक्षा के विषय में पड़ती। फ़ारसी लोगों को 'अवेस्ता' पढ़ने की इच्छा होती। एक खोजा बालक था। उसके पास अपने पंथ-संबंधी एक छोटी-सी किताब थी। उसे पढ़ाने का भार उसके पिता ने मुझपर डाल रखा था। मुसलमान और फारसियों के लिए तो मैंने कुछ किताबें एकत्र कीं। हिन्दू-धर्म के तत्व भी, जहाँ तक मैं उन्हें समझता था, मैंने लिख रखे थे – यह याद नहीं कि मेरे बच्चों के लिए या फ़ार्म में ! अगर वे इस समय मेरे पास होते, तो मैं अपनी गति-प्रगति जानने के लिए यहाँ लिख देता। पर यों तो मैंने अपने जीवन में ऐसी कितनी ही वस्तुएँ फेंक दी हैं या जला डाली है। ज्यों-ज्यों मुझे इनके संग्रह करने की जरूरत कम मालूम होती गयी और साथ ही साथ ज्यों-ज्यों मेरा व्यवसाय बढ़ता गया, त्यों-त्यों उनका नाश ही करता गया। पर इसके लिए मुझे किसी प्रकार का पश्चाताप भी नहीं होता। यदि मैं ऐसा न करता, तो उनका संग्रह मेरे लिए एक भारी बोझा और ख़र्चीली चीज़ हो जाता। उनको संग्रहीत करने के साधन मुझे उत्पन्न करने पड़ते। और यह तो मेरी अपरिग्रही आत्मा के लिए असह्य हो जाता।

पर यह शिक्षा-प्रयोग व्यर्थ नहीं साबित हुआ। लड़कों में कभी असहिष्णुता नहीं दिखाई दी। एक दूसरे के धर्म और रीति-नीति का वे आदर करना सीख गये और सभ्यता सीख गये। उद्यमी भी बने। आज भी उन बालकों में से जितनों को मैं जानता हूँ उनके कार्यों को देखते हुए मुझे यही मालूम होता है कि टालस्टाय फ़ार्म

prose.indd 39 10-01-2019 10:48:38

पर उन्होंने जो कुछ सीखा था, वह व्यर्थ नहीं गया। अधूरा सही, पर था वह विचारमय और धार्मिक प्रयोग। टालस्टाय फ़ार्म की अत्यंत मधुर स्मृतियों में से शिक्षा की स्मृति किसी प्रकार कम मधुर नहीं है !



I. प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिये :-

1. गाँधीजी ने दक्षिण अफ्रीका में क्यों सत्याग्रह का युद्ध आरंभ किया ?
2. दक्षिण अफ्रीका में गाँधीजी के द्वारा स्थापित आश्रम का नाम क्या है ?
3. "टालस्टाय फ़ार्म" आश्रम की जमीन कितने एकड़ की थी ?
4. आश्रम में कौन-कौन से पेड़ थे ?
5. गाँधीजी ने आश्रम में क्या नियम बनाकर रखा था ?
6. आश्रम में कौन-कौन रहने के लिए आनेवाले थे ?
7. आश्रम में रहने आने वाले कितने धर्मों के थे ?
8. माँसाहार के बारे में गाँधीजी का विचार क्या था ?
9. प्रेम का सहायक कौन होता है ?
10. माँसाहार की समस्या को गाँधीजी ने कैसे हल किया ?
11. प्रागजी देसाई कैसे आदमी थे ?
12. मकान बनाने के काम में कौन-कौन लगा ?
13. जोसफ़ रायप्पन का हाल कैसा था ?
14. सैर करने के लिए कौन-सी व्यवस्था थी ?
15. आश्रम में कूड़े-कचड़े और पाखानों की कैसी व्यवस्था की गई थी ?

prose.indd 40 10-01-2019 10:48:38

16. जूते की आवश्यकता दूर करने के लिए गाँधीजी ने कौन-सी योजना बनाई ?

17. शिक्षा की जिम्मेदारी किसने उठाई ?

18. शिक्षा के क्षेत्र में किये गये प्रयोग का परिणाम कैसा था ?

II. सविस्तार उत्तर लिखिए :-

1. टालस्टाय फ़ार्म की बनावट कैसी थी ?

2. टालस्टाय फ़ार्म के नियमों को समझाइये ।

3. धार्मिक लोगों के लिए गाँधीजी ने कौन-सी योजनाएँ बनाई ?

4. माँसाहार रहित आश्रम चलाने में गाँधीजी कैसे सफल हुए ?

5. आश्रम में पाठशाला की व्यवस्थाएँ कैसी थीं ?

6. खाना पकाने और आश्रम को साफ़-सुथरा रखने की व्यवस्था कैसी थी ?

7. सत्याग्रही कुटुम्बों को उद्यमी रखने की व्यवस्था कैसी थी ?

III. सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिये :-

1. स्त्रियों और पुरुषों को अलग-अलग ही रखा जाए ।

2. मैं उनको यहाँ आने से रोक नहीं सकता ।

3. उनके सामने मैंने मकान-संबंधी असुविधा, धनाभाव और अपने व्यक्तिगत विचार, इन तीन बातों को रख दिया ।

4. अगर हम मैल का सदुपयोग करना सीख लें तो लाखों रुपये की खाद बचा लेंगे और स्वयं अनेक रोगों से बच जाएँगे ।

5. मेरे कई चेले इस कला में मुझसे बहुत आगे बढ़ गये ।

6. इस हालत में अकेला शिक्षक क्या-क्या कर सकता था ?

7. और यह तो मेरी अपरिग्रही आत्मा के लिए असह्य हो जाता ।

8. मधुर स्मृतियों में से शिक्षा की स्मृति किसी प्रकार कम मधुर नहीं है ।

prose.indd 41 10-01-2019 10:48:38

IV. वाक्यों में प्रयोग कीजिये :-

1. संकटापन्न दशा रखना
2. उपस्थित होना
3. जाहिर करना
4. जिम्मे ले लेना
5. श्री गणेश करना
6. एकत्र करना
7. साबित होना

कठिन शब्दार्थ :-

1. तादाद – संख्या
2. ख़ासा – काफी अच्छा
3. संकटग्रस्त – विपद्ग्रस्त
4. धनाभाव – गरीबी
5. बनिस्पत – अपेक्षा
6. ऊधम मचाना – शोर मचाना
7. अपरिग्रही – आवश्यकता से ज्यादा न रखने वाला

prose.indd 42 10-01-2019 10:48:38

गद्य

11 कला का विवेचन

श्री बाबू श्यामसुन्दरदास



डॉ॰ श्यामसुंदर दास (सन् 1875 - 1945 ई.) हिंदी के अनन्य साधक, विद्वान्, आलोचक और शिक्षाविद् थे। हिंदी साहित्य और बौद्धिकता के पथ-प्रदर्शकों में उनका नाम अविस्मरणीय है। हिंदी-क्षेत्र के साहित्यिक-सांस्कृतिक नवजागरण में उनका योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उन्होंने और उनके साथियों ने मिलकर काशी नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना की।

विश्वविद्यालयों में हिंदी की पढ़ाई के लिए अगर बाबू साहब के नाम से मशहूर श्याम सुंदर दास ने पुस्तकें तैयार न की होतीं तो शायद हिंदी का अध्ययन-अध्यापन आज सबके लिए इस तरह सुलभ न होता। उनके द्वारा की गयी हिंदी साहित्य की पचास वर्षों तक निरंतर सेवा के कारण कोश, इतिहास, भाषा-विज्ञान, साहित्यालोचन, सम्पादित ग्रंथ, पाठ्य-सामग्री निर्माण आदि से हिंदी-जगत समृद्ध हुआ। उन्हीं के अविस्मरणीय कामों ने हिंदी को उच्चस्तर पर प्रतिष्ठित करते हुए विश्वविद्यालयों में गौरवपूर्वक स्थापित किया।

जिस गुण या कौशल के कारण किसी वस्तु में उपयोगिता और सुन्दरता आती है, उसकी संज्ञा 'कला' है । कला के दो प्रकार हैं – एक उपयोगी कला, दूसरी ललित कला । उपयोगी कला में बढ़ई, लुहार, सुनार, कुम्हार, राज, जुलाहे आदि के व्यवसाय सम्मिलित हैं । ललित कला के अंतर्गत वास्तु-कला, मूर्ति-कला, चित्र-कला, संगीत-कला और काव्य-कला – ये पाँच कला-भेद हैं । पहली,अर्थात् उपयोगी कलाओं के द्वारा मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति होती है । और दूसरी अर्थात् ललित कलाओं के द्वारा उसके अलौकिक आनंद की सिद्धि होती है । दोनों ही उसकी उन्नति और विकास के द्योतक हैं । भेद इतना ही है कि एक का सम्बन्ध मनुष्य की शारीरिक और आर्थिक उन्नति से है और दूसरी का उसके मानसिक विकास से ।

यह आवश्यक नहीं कि जो वस्तु उपयोगी हो वह सुन्दर भी हो । परन्तु मनुष्य सौन्दर्योपासक प्राणी है । वह सभी उपयोगी वस्तुओं को यथाशक्ति सुन्दर बनाने का उद्योग करता है । अतएव बहुत से पदार्थ ऐसे हैं, जो उपयोगी

prose.indd 43 10-01-2019 10:48:38

भी हैं और सुन्दर भी हैं, अर्थात् वे दोनों श्रेणियों के अंतर्गत आ सकते हैं। कुछ पदार्थ ऐसे भी हैं, जो शुद्ध उपयोगी तो नहीं कहे जा सकते, पर उनके सुन्दर होने में संदेह नहीं ।

खाने, पीने, पहनने, ओढ़ने, रहने, बैठने, आने-जाने आदि के सुभीते के लिए मनुष्य को अनेक वस्तुओं की आवश्यकता होती है । इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए उपयोगी कलाएँ अस्तित्व में आती है । मनुष्य ज्यों-ज्यों सभ्यता की सीढ़ी पर ऊपर चढ़ता जाता है, त्यों-त्यों उसकी आवश्यकताएँ बढ़ती जाती हैं । इस उन्नति के साथ ही मनुष्य का सौन्दर्य-ज्ञान भी बढ़ता है और उसे अपने मानसिक तृप्ति के लिए सुन्दरता का आविर्भाव करना पड़ता है । बिना ऐसा किये उसकी मनस्तृप्ति नहीं हो सकती । जिस पदार्थ के दर्शन से मन प्रसन्न नहीं होता, वह सुन्दर नहीं कहा जा सकता । यही कारण है कि भिन्न-भिन्न देशों के लोग अपनी-अपनी सभ्यता की कसौटी के अनुसार ही सुन्दरता का आदर्श स्थिर करते हैं ; क्योंकि सबका मन एक-सा संस्कृत नहीं होता ।

ललित कलाएँ दो मुख्य भागों में विभक्त की जा सकती हैं -- एक तो वे जो नेत्रेन्द्रिय के सन्निकर्ष से मानसिक तृप्ति करती है, और दूसरी वे जो श्रवणेनिन्द्रय के सन्निकर्ष से उस तृप्ति का साधन बनती है । इस विचार से वास्तु (मंदिर निर्माण), मूर्ति (तक्ष-कला) और चित्र-कलाएँ तो नेत्र द्वारा तृप्ति का विधान करनेवाली है और संगीत तथा श्रव्य काव्य कानों के द्वारा । पहली कला में किसी मूर्त –आधार की आवश्यकता होती है, पर दूसरी में उसकी उतनी आवश्यकता नहीं होती । इस मूर्त आधार की मात्रा के अनुसार ही ललित कलाओं की श्रेणियाँ, उत्तम और मध्यम, स्थिर की गयी है । जिस कला में मूर्त आधार जितना ही कम होगा, उतना ही उच्च कोटि की वह समझी जाएगी । इसी भाव के अनुसार हम काव्य-कला को सबसे ऊँचा स्थान देते हैं । क्योंकि उसमें मूर्त आधार का एक प्रकार से पूर्ण अभाव रहता है और इसी के अनुसार हम वास्तु-कला को सबसे नीचा स्थान देते हैं ; क्योंकि मूर्त आधार की विशेषता के बिना उसका अस्तित्व ही संभव नहीं । सच पूछिये तो आधार को सुचारु रूप से सज़ाने में ही वास्तु-कला को कला की पदवी प्राप्त होती है । इसके अनंतर दूसरा स्थान मूर्तिकला की है । उसका भी आधार मूर्त ही होता है, परन्तु मूर्तिकार किसी प्रस्तर-खंड या धातु-खंड को ऐसा रूप दे देता है जो उस आधार से सर्वथा भिन्न होता है ।

वह उस प्रस्तर-खंड या धातु-खंड में सजीवता की अनुरूपता उत्पन्न कर देता है । मूर्ति-कला के अनंतर तीसरा स्थान चित्र-कला का है । उसका भी आधार मूर्त ही होता है । प्रत्येक मूर्त अर्थात् साकार पदार्थ में लम्बाई, चौड़ाई और मोटाई होती है । वास्तुकार अर्थात् भवन-निर्माणकर्ता और मूर्तिकार को अपना कौशल दिखाने के लिए मूर्त आधार के पूर्वोक्त तीनों गुणों का आश्रय लेना पड़ता है, परन्तु चित्रकार को अपने चित्रपट के लिए लंबाई और चौड़ाई का ही आधार लेना पड़ता है, मोटाई तो चित्र में नाम-मात्र ही का होती है । तात्पर्य यह कि ज्यों-ज्यों हम ललित कलाओं में उत्तरोत्तर उत्तमता की ओर बढ़ते हैं, त्यों-त्यों मूर्त आधार का परित्याग होता जाता है । चित्रकार अपने चित्रपट पर किसी मूर्त पदार्थ का प्रतिबिम्ब अंकित कर देता है, जो असली वस्तु रूप-रंग आदि के समान ही देख पड़ता है ।

prose.indd 44 10-01-2019 10:48:38

अब संगीत के विषय में विचार कीजिये । संगीत में नाद का परिमाण अर्थात् स्वरों का आरोह या अवरोह (उतार-चढ़ाव) ही उसका मूर्त आधार होता है । उसे सुचारु रूप से व्यवस्थित करने से भिन्न-भिन्न रसों और भावों का आविर्भाव होता है । अंतिम, अर्थात् सर्वोच्च स्थान काव्य-कला का है । उसमें मूर्त आधार की आवश्यकता ही नहीं होती । उसका प्रादुर्भाव शब्द-समूहों या वाक्यों से होता है, जो मनुष्य के अर्थ की रमणीयता रहती है, तब तो मूर्त आधार का अस्तित्व मानसिक भावों के द्योतक होते हैं । काव्य में जब केवल अर्थ की रमणीयता रहती है, तब तो मूर्त आधार का अस्तित्व नहीं रहता, पर शब्द की रमणीयता आने से संगीत के सदृश ही नाद-सौंदर्य-रूप मूर्त आधार की उत्पत्ति हो जाति है । भारतीय काव्य कला में पाश्चात्य काव्य-कला की अपेक्षा नाद रूप मूर्त आधार की योजना अधिक रहती है । पर यह अर्थ की रमणीयता के समान काव्य का अनिवार्य अंग नहीं है । अर्थ की रमणीयता काव्य-कला का प्रधान गुण है और नाद की रमणीयता उसका गौण गुण है ।

ऊपर जो कुछ कहा गया है, उससे ललित कलाओं के सम्बन्ध में नीचे लिखी बातें ज्ञात होती हैं –

1. सब कलाओं में किसी न किसी प्रकार के आधार की आवश्यकता होती है । ये आधार ईंट-पत्थर के टुकड़ों से लेकर शब्द-संकेतों तक हो सकते हैं । लक्षण में अपवाद इतना ही है कि अर्थ रमणीय काव्य-कला में इस आधार का अस्तित्व नहीं रहता ।



2. जिन उपकरणों द्वारा इन कलाओं का सन्निकर्ष मन से होता है वे चक्षुरिन्द्रिय और कर्नेंद्रिय हैं ।

3. ये आधार और उपकरण केवल एक प्रकार के माध्यम का काम देते हैं, जिनके द्वारा कला के उत्पादक का मन देखने या सुननेवाले के मन से सम्बन्ध स्थापित करता है और अपने भावों को उस तक पहुँचाकर उसे प्रभावित

prose.indd 45 10-01-2019 10:48:39

करता है, अर्थात् सुनने या देखनेवाले का मन अपने मन के सदृश कर देता है । अतएव यह सिद्धांत निकला कि ललित कला वह वस्तु या वह कारीगरी है, जिसका अनुभव इन्द्रियों की मध्यस्थता द्वारा मन को होता है और जो उन बाह्यार्थों से भिन्न है, जिनका प्रत्यक्ष ज्ञान इन्द्रिय प्राप्त करती है । इसलिए हम कह सकते हैं कि ललित कलाएँ मानसिक दृष्टि में सौन्दर्य का प्रत्यक्षीकरण हैं ।

इस लक्षण को समझने के लिए यह आवश्यक है कि हम प्रत्येक ललित कला के सम्बन्ध में नीचे लिखी तीन बातों पर विचार करें – (1) उनका मूर्त आधार (2) वह साधन, जिसके द्वारा वह आधार गोचर होता है और (3) मानसिक दृष्टि में नित्य पदार्थ का जो प्रत्यक्षीकरण होता है, वह कैसा और कितना है ।

वास्तु-कला में मूर्त आधार निकृष्ट होता है, अर्थात् ईंट, पत्थर, लोहा, लकड़ी आदि जिनसे ईमारत बनाई जाती है । ये सब पदार्थ मूर्त हैं, अतएव इसका प्रभाव आँखों पर वैसा ही पड़ता है, जैसा कि किसी दूसरे मूर्त पदार्थ का पड़ सकता है । प्रकाश, छाया, रंग, प्राकृतिक स्थिति आदि साधन कला के सभी उत्पादकों को उपलब्ध रहते हैं । वे उनका उपयोग सुगमता से करके आँखों के द्वारा दर्शक के मन पर अपनी कृति की छाप डाल सकते हैं। इसके दो कारण हैं, एक तो उन्हें जीवित पदार्थों की गति आदि प्रदर्शित करने की आवश्यकता नहीं होती, दूसरे उनकी कृति में रूप, रंग, आधार आदि के वे ही गुण वर्तमान रहते हैं, जो अन्य निर्जीव पदार्थों में रहते हैं । यह सब होने पर भी वे जो कुछ प्रदर्शित करते हैं, उनमें स्वाभाविक अनुरूपता होने पर भी मानसिक भावों की प्रतिच्छाया प्रस्तुत रहती है। किसी इमारत को देखकर सज्ञान जन, सुगमता से कह सकते हैं कि यह मंदिर, मसजिद या गिरजा है अथवा यह महल यह मकबरा है । विशेषज्ञ यह भी बता सकते हैं कि इसमें हिन्दू, मुसलमान अथवा यूनानी वास्तु – कला की प्रधानता है । धर्मस्थानों में भिन्न-भिन्न जातियों के धार्मिक विचारों के अनुकूल उनके धार्मिक विश्वासों के निदर्शक, कलश, गुम्बज, मिहरावें, जालियाँ, झरोखे आदि बनाकर वास्तुकार अपने मानसिक भावों को स्पष्ट कर दिखाता है । यही उसके मानसिक भावों का प्रत्यक्षीकरण है । परन्तु इस कला में मूर्त पदार्थों का इतना बाहुल्य रहता है कि दर्शक उन्हीं को प्रत्यक्ष देखकर प्रभावित और आनंदित होता है चाहे वे पदार्थ वास्तुकार के मानसिक भावों के यथार्थ निदर्शक हों, चाहे न हों, अथवा दर्शक उनको समझने में समर्थ हो न हों ।

मूर्ति-कला में मूर्त आधार पत्थर, धातु, मिट्टी या लकड़ी आदि के टुकड़े होते हैं, जिन्हें मूर्तिकार काट-छांटकर या ढालकर अपने अभीष्ट आकर में परिणत करता है । मूर्तिकार की छेनी में असली सजीव या निर्जीव पदार्थ के सब गुण अन्तर्निहित रहते हैं । वह सब कुछ, अर्थात् रंग, रूप, आकार आदि प्रदर्शित कर सकता है ; केवल गति देना उसके सामर्थ्य के बाहर रहता है, जब तक कि वह किसी कल या पुर्जे का आवश्यक उपयोग न करे । परन्तु ऐसा करना उसकी कल की सीमा के बाहर है । इसलिए वास्तुकार से मूर्तिकार की स्थिति अधिक महत्त्व की है । उसमें मानसिक भावों का दर्शन वास्तुकार की कृति की अपेक्षा अधिकता से हो सकता है । मूर्तिकार अपने प्रस्तर-खंड या धातु-खंड में जीवधारियों की प्रतिच्छाया बड़ी सुगमता से संघटित कर सकता है । यही कारण है कि मूर्ति-कला का मुख्य उद्देश्य शारीरिक या प्राकृतिक सुन्दरता को प्रदर्शित करना है ।

prose.indd 46 10-01-2019 10:48:39

चित्र-कला का आधार कपड़े, कागज़, लकड़ी आदि का चित्रपट है,जिसका चित्रकार अपने ब्रश या कलम की सहायता से भिन्न-भिन्न पदार्थों का जीवनधारियों के प्राकृतिक रूप, रंग और आकार आदि का अनुभव करता है । परन्तु मूर्तिकार की अपेक्षा उसे मूर्त आधार का आश्रय कम रहता है । इसी से उसे अपनी कला की खूबी दिखलाने के लिए अधिक कौशल से काम करना पड़ता है । वह अपने ब्रश या कलम से समतल या सपाट सतह पर स्थूलता, लघुता, दूरी और नैकट्य आदि दिखाता है । वास्तविक पदार्थ को दर्शक जिस परिस्थिति में देखता है,उसी के अनुसार अंकन द्वारा वह अपने चित्रपट पर एक ऐसा चित्र प्रस्तुत करता है, जिसे देखकर दर्शक को चित्रपट की वस्तु असली वस्तु-सी लगती है । इस प्रकार वास्तुकार और मूर्तिकार की अपेक्षा चित्रकार को अपनी कला के ही द्वारा मानसिक दृष्टि उत्पन्न करने का अधिक अवसर मिलता है । उसकी कृति में मूर्त्तता कम और मानसिकता अधिक रहती है । किसी ऐतिहासिक घटना या प्राकृतिक दृश्य को अंकित करने में चित्रकार की केवल उस घटना या दृश्य के बाहरी अंगों को ही जानना और अंकित करना आवश्यक नहीं होता, किन्तु उसे अपने विचार के अनुसार उस घटना या दृश्य को सजीवता देने और मनुष्य या प्रकृति की भावभंगी का प्रतिरूप आँखों के सामने खड़ा करने के लिए, अपना ब्रश चलाना और परोक्ष रूप से अपने मानसिक भावों का सजीव चित्र-सा प्रस्तुत करना पड़ता है । अतएव यह स्पष्ट है कि इस कला में मूर्तता का अंश थोड़ा और मानसिक का बहुत अधिक होता है ।

यहाँ तक तो उन कलाओं के सम्बन्ध में विचार किया गया, जो आँखों द्वारा मानसिक तृप्ति प्रदान करती है । अब अवशिष्ट दो ललित कलाओं अर्थात् संगीत और काव्य पर विचार किया जायेगा, जो कर्ण द्वारा मानसिक तृप्ति प्रदान करती है । इन दोनों में मूर्त आधार की न्यूनता और मानसिक भावना की अधिकता रहती है ।

संगीत का आधार नाद है, जिसे या तो मनुष्य अपने कंठ से या कई प्रकार के यंत्रों द्वारा उत्पन्न करता है । इस नाद का नियमन कुछ् निश्चित सिद्धांतों के अनुसार किया गया है; इन सिद्धांतों के स्थिरीकरण में मनुष्य-समाज को अनंत समय लगा है । संगीत के सात स्वर इन सिद्धांतों के आधार हैं । वे ही संगीत कला के प्राणरूप या मूल कारण हैं । इससे स्पष्ट है कि संगीत कला का आधार या संवाहक नाद है । इसी नाद से हम अपने मानसिक भावों को प्रकट करते हैं । संगीत की विशेषता इस बात में है कि उसका प्रभाव बड़ा विस्तृत है, और वह प्रभाव अनादि काल से मनुष्य मात्र की आत्मा पर पड़ता चला आ रहा है । जंगली से जंगली मनुष्य से लेकर सभ्यातिसभ्य मनुष्य तक उसके प्रभाव के वशीभूत हो सकते हैं । मनुष्यों को जाने दीजिये, पशु-पक्षी तक उसका अनुशासन मानते हैं । संगीत हमें रुला सकता है, हमें हँसा सकता है, हमारे हृदय में आनंद की हिलोरें उत्पन्न कर सकता है, हमें शोक-सागर में डुबा सकता है, हमें क्रोध या उद्वेग के वशीभूत करके उन्मत्त बना सकता है, शांत रस का प्रवाह बहाकर हमारे हृदय में शांति की धारा बहा सकता है । परन्तु जैसे अन्य कलाओं के प्रभाव की सीमा है, वैसा ही संगीत की भी सीमा है । संगीत द्वारा भिन्न-भिन्न भावों या दृश्यों का अनुभव कानों की मध्यस्थता से मन को कराया जा सकता है, उसके द्वारा तलवारों की झंकार, पत्तियों की खड़खड़ाहट, पक्षियों का कलरव, हमारे कर्णकुहरों में पहुँचाया जा सकता है । परन्तु यदि कोई

prose.indd 47 10-01-2019 10:48:39

चाहे कि वायु का प्रचंड वेग, बिजली की चमक, मेघों की गड़गड़ाहट तथा समुद्र की लहरों के आघात भी हम स्पष्ट देख या सुनकर उन्हें पहचान लें, तो यह बात संगीत की सीमा के बाहर है । संगीत का उद्देश्य हमारी आत्मा को प्रभावित करना है और इसमें यह कला इतनी सफल हुई है कि जितनी काव्य-कला को छोड़कर और कोई कला नहीं हो पायी। संगीत हमारे मन को अपने इच्छानुसार चंचल कर सकता है और उसमें विशेष भावों का उत्पादन कर सकता है । इस विचार से यह कला वास्तु, मूर्ति और चित्रकला से बढ़कर है । एक बात यहाँ और जान लेना अत्यंत आवश्यक है । वह यह कि संगीत कला और काव्य-कला में परस्पर बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध है । उनमें अन्योन्याश्रय है, एकांकी होने से दोनों का प्रभाव बहुत कुछ कम हो जाता है ।

ललित कलाओं में सबसे ऊँचा स्थान काव्य-कला का है । इसका आधार कोई मूर्त पदार्थ नहीं होता । यह शाब्दिक संकेतों के आधार पर अपना अस्तित्व प्रदर्शित करती है । मन को इसका ज्ञान चक्षुन्द्रिय या कर्नेंद्रिय द्वारा होता है । मस्तिष्क तक अपना प्रभाव पहुँचाने में इस कला के लिए किसी दूसरे साधन के अवलंबन की आवश्यकता नहीं होती । कानों या आँखों को शब्दों का ज्ञान सहज ही हो जाता है, पर यह ध्यान रखना चाहिए कि जीवन की घटनाओं और प्रकृति के बाहरी दृश्यों के, जो काल्पनिक रूप इन्द्रियों द्वारा मस्तिष्क या मन पर अंकित होते हैं वे केवल भावमय होते हैं, और उन भावों के द्योतक कुछ सांकेतिक शब्द हैं । अतएव वे भाव या मानसिक चित्र ही वह सामग्री है, जिसके द्वारा काव्य-कला-विशारद दूसरे के मन से अपना सम्बन्ध स्थापित करता है । इस सम्बन्ध-स्थापना का वाहक या सहायक भाव है, जिसका कवि उपयोग करता है ।

I. प्रश्नों के उत्तर दीजिये ।

1. कला किसे कहते हैं ?
2. कला के कितने प्रकार हैं ?
3. उपयोगी कला के कितने और कौन-कौन से भेद हैं ?
4. उपयोगी कला में कितने व्यवसाय सम्मिलित हैं ?
5. कलाओं से क्या लाभ होता है ?
6. मानसिक विकास की कला क्या है ? क्यों ?
7. मनुष्य कैसा प्राणी है ?
8. क्या उपयोगी कला जरूर सुन्दर होनी चाहिए ?
9. उपयोगी कला की आवश्यकता क्यों बढ़ती जाती है ?
10. मनुष्य को क्यों सुन्दरता का आविर्भाव करना पड़ता है ?
11. सुन्दरता का आधार क्या है ?

prose.indd 48 10-01-2019 10:48:40

12. नेत्र द्वारा तृप्ति का विधान करने वाली कला कौन-सी है ?

13. कानों द्वारा तृप्ति का विधान करने वाली कलाएँ कितनी और कौन-कौन सी हैं ?

14. नाद का महत्व क्या है ?

15. किन उपकरणों द्वारा कलाओं का सन्निकर्ष मन से होता है ?

16. ललित कलाएँ किस दृष्टि में सौंदर्य का प्रत्यक्षीकरण है ?

17. कौन-सी बात संगीत की सीमा से बाहर है ?

18. संगीत और काव्य दोनों अन्यान्योश्रय हैं । स्पष्ट कीजिये ।

19. कवि कैसे दूसरे के मन में अपना सम्बन्ध स्थापित करता है ?

20. ललित कलाओं में सब से ऊँचा स्थान किस कला को दे सकते हैं ? क्यों ?

II. विस्तृत उत्तर दीजिये :

1. कला के भेदों को सविस्तार समझाइए ।

2. उपयोगी कला को सुन्दर बनाना क्यों आवश्यक माना जाता है ?

3. ललित कला में संगीत कला का महत्त्व समझाइए ।

4. काव्य कला और संगीत कला दोनों अन्यान्योश्रित हैं ; फिर भी काव्य कला को ऊँचा स्थान क्यों दिया गया है ?

III. सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिये ।

1. एक का सम्बन्ध मनुष्य की शारीरिक और आर्थिक उन्नति से है और दूसरे का उनके मानसिक विकास से ।

2. जो शुद्ध उपयोगी तो नहीं कहे जा सकते, पर उनके सुन्दर होने में संदेह नहीं ।

3. पहली कला में किसी मूर्त आधार की आवश्यकता होती है, पर दूसरी में उसकी उतनी आवश्यकता नहीं होती।

4. अर्थ की रमणीयता काव्य कला का प्रधान गुण है और नाद की रमणीयता उसका गौण गुण है।

5. इस सम्बन्ध-स्थापना का वाहक या सहायक भाव है जिसका कवि उपयोग करता है ।

IV. वाक्यों में प्रयोग कीजिये ।

1. सहयोग करना	2. यथाशक्ति	3. आविर्भाव
4. प्रसन्न होना	5. विधान करना	6. सुचारु रूप
7. द्योतक होना	8. सन्निकर्ष	9. मध्यावस्था
10. वशीभूत होना	11. कसौटी	12. ज्ञात होना

prose.indd 49 10-01-2019 10:48:40

कठिन शब्दार्थ :

द्योतक – प्रतीक, प्रकट करना

अस्तित्व – स्थायित्व

कसौटी करना – परीक्षा करना

आविर्भाव – उदय

सन्निकर्ष – सम्बन्ध, लगाव

प्रस्तर – पत्थर

उत्तरोत्तर – क्रमशः

ज्ञात होना – मालूम होना

अन्तर्निहित – अन्दर छिपा हुआ, समाहित

प्रतिच्छाया – परछाई

उपलब्ध रहना – मिलना

कर्णकुहर – कान का छेद

चक्षुन्द्रिय – आँख

कर्नेंद्रिय – कान

सामग्री – चीज, सामान



prose.indd 50 10-01-2019 10:48:40

गद्य

12 भाव या मनोविकार

निबंधकार – आचार्य रामचंद्र शुक्ल

लेखक परिचय



आचार्य रामचंद्र शुक्ल का जन्म उत्तरप्रदेश के औगाना ग्राम में सन् 1884 में हुआ । उनकी प्रारंभिक शिक्षा उर्दू और अंग्रेजी में हुई थी । विधिवत शिक्षा ये केवल इंटरमीडिएट तक कर सके । फिर मिर्जापुर के मिशन स्कूल में अध्यापक बने । बाबू श्यामसुंदर दास ने इनकी विद्वता से प्रभावित होकर हिंदी शब्द सागर के संपादन में उन को अपना सहयोगी बनाया ।

हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के हिंदी विभाग के अध्यापक बने । डॉ. श्यामसुंदर दास के अवकाश ग्रहण करने पर हिंदी विभाग के अध्यक्ष हो गये।

उनकी कई भाषाएँ पढ़ने की इच्छा हुई । संस्कृत, अंग्रेजी, बंगला और हिंदी भाषा में निपुण बने । हिंदी साहित्य में वे प्रसिद्द कवि और निबंधकार बने । उनके प्रसिद्द ग्रंथ हैं – 1. तुलसीदास 2. जायसी ग्रंथावली की भूमिका 3. सूरदास 4. चिंतामणि – I और II भाग 5. हिंदी साहित्य का इतिहास 6. रस-मीमांसा

भाव या मनोविकार

अनुभूति के द्वंद्व ही से प्राणी के जीवन का आरंभ होता है । उच्च प्राणी मनुष्य भी केवल एक जोड़ी अनुभूति लेकर इस संसार में आता है । बच्चे के छोटे से हृदय में पहले सुख और दुःख की सामान्य अनुभूति भरने के लिए जगह होती है । पेट का भरा या खाली रहना ही ऐसी अनुभूति के लिए पर्याप्त होता है । जीवन के आरंभ में इन्हीं दोनों के चिन्ह हँसना और रोना देखे जाते हैं । पर ये अनुभूतियाँ बिलकुल सामान्य रूप में रहती हैं, विशेष – विशेष विषयों की ओर – विशेष रूपों में ज्ञानपूर्वक उन्मुख नहीं होतीं ।

prose.indd 51 10-01-2019 10:48:40

नाना विषयों के बोध का विधान होने पर ही उनसे सम्बन्ध रखनेवाली इच्छा की अनेकरूपता के अनुसार अनुभूति भिन्न-भिन्न योग संघटित होते हैं जो भाव या मनोविकार कहलाते हैं । अतः हम कह सकते हैं कि सुख और दुःख की मूल अनुभूति ही विषय भेद के अनुसार प्रेम, हास, उत्साह, आश्चर्य, क्रोध, भय, करुणा, घृणा इत्यादि मनोविकार का जटिल रूप धारण करती है । जैसे यदि शरीर में कहीं सुई चुभने की पीड़ा हो तो केवल सामान्य दुःख होगा; पर यदि साथ ही यह ज्ञात हो जाए कि सुई चुभानेवाला कोई व्यक्ति है तो उस दुःख की भावना कई मानसिक और शारीरिक वृत्तियों के साथ संश्लिष्ट होकर उस मनोविकार की योजना करेगी जिसे क्रोध कहते हैं ।



जिस बच्चे को पहले अपने ही दुःख का ज्ञान होता था, असंलक्ष्यक्रम अनुमान द्वारा उसे और बालकों का कष्ट या रोना देखकर भी एक विशेष प्रकार का दुःख होने लगता है जिसे दया या करुणा कहते हैं । इसी प्रकार जिस पर अपना वश न हो ऐसे कारण से कष्ट पहुंचाने वाले भावी अनिष्ट के निश्चय से जो दुःख होता है वह भय कहलाता है । बहुत छोटे बच्चे को, जिसे यह निश्चयात्मिकता बुद्धि नहीं होती, भय कुछ भी नहीं होता । यहाँ तक कि उसे मारने के लिए हाथ उठाएँ तो भी वह विचलित न होगा, क्योंकि वह निश्चय नहीं कर सकता कि इस हाथ उठाने का परिणाम दुःख होगा ।

prose.indd 52 10-01-2019 10:48:40

मनोविकारों या भावों की अनुभूतियाँ परस्पर तथा सुख या दुःख की मूल अनुभूति से ऐसी ही भिन्न होती है जैसे रासायनिक मिश्रण परस्पर तथा अपने संयोजक द्रव्यों से भिन्न होते हैं । विषय बोध की विभिन्नता तथा उससे सम्बन्ध रखनेवाली इच्छाओं की विभिन्नता के अनुसार मनोविकारों की अनुरूपता का विकास होता है । हानि या दुःख के कारण में हानि या दुःख पहुँचाने की चेतन वृत्ति का पता पाने पर हमारा काम उस मूल अनुभूति से नहीं चल सकता जिसे दुःख कहते हैं बल्कि उसके योग से संघटित क्रोध नामक जटिल भाव की आवश्यकता होती है । जब हमारी इन्दियाँ दूर से आती हुई क्लेषरिणी बातों का पट देने लगती हैं, हमारा अंतःकरण हमें भावी आपदा का निश्चय कराने लगता है; तब हमारा काम दुःख मात्र से नहीं चल सकता बल्कि भागने या बचने की प्रेरणा करनेवाले भय से चल सकता है । इसी प्रकार अच्छी लगने वाली वस्तु य व्यक्ति के प्रति जो सुखानुभूति होती है उसी तक प्रयत्नवान व्यक्ति नहीं रह सकता, बल्कि उसकी प्राप्ति, रक्षा या संयोग की प्रेरणा करनेवाले लोभ या प्रेम के वशीभूत होता है । अपने मूल रूपों में सुख और दुःख दोनों की अनुभूतियाँ कुछ बँधी हुई शारीरिक क्रियाओं की ही प्रेरणा प्रवृति के रूप में करती हैं । उनकी भावना इच्छा और प्रयत्न अनेक रूपता का स्फुरण नहीं होता । विशुद्ध सुख की अनुभूति होने पर हम बहुत करेंगे डांट निकालकर हँसेंगे, कूदेंगे या सुख पहुँचाने वाली वास्तु में लगे रहेंगे । इसी प्रकार शुद्ध दुःख में हम बहुत करेंगे हाथ-पैर पटकेंगे, रोयेंगे या दुःख पहुँचाने वाली वस्तु से हटेंगे- पर हम चाहे कितना ही उछल-कूदकर हँसे, कितना ही हाथ-पैर पटककर रोयें, इस हँसने या रोने को प्रयत्न नहीं कह सकते । ये सुख और दुःख के अनिवार्य लक्षण मात्र हैं जो किसी प्रकार की इच्छा का पट नहीं देते । इच्छा के बिना कोई शारीरिक क्रिया प्रयत्न नहीं कर सकती ।

शरीर धर्म मात्र के प्रकाश से बहुत थोड़े भावों की निर्दिष्ट और पूर्ण व्यंजना हो सकती है । उदाहरण के लिए कंप लीजिये । कंप शीत की संवेदना से भी हो सकता है, भय से भी, क्रोध से भी और प्रेम के वेग से भी । अतः जब तक भागना, छिपना या मारना, झपटना इत्यादि प्रयोगों के द्वारा इच्छा के स्वरुप का पता न लगेगा तब तक भय या क्रोध की सत्ता पूर्णतया व्यक्त न होगी । सभ्य जातियों के बीच इन प्रयत्नों का स्थान बहुत कुछ शब्दों ने लिया है । मुँह से निकले हुए वचन ही अधिकतर भिन्न-भिन्न प्रकार की इच्छाओं का पता देकर भावों की व्यंजना किया करते हैं । इसीसे साहित्य – मीमांसकों ने अनुभव के अंतर्गत आश्रय की उक्तियों को विशेष स्थान दिया है ।

क्रोधी चाहे किसी ओर झपटे या न झपटे, उसका यह कहना ही कि 'मैं उसे पीस डालूँगा' क्रोध की व्यंजना के लिए काफ़ी होता है । इसी प्रकार लोभी चाहे लपके या न लपके, उसका कहना ही कि 'कहीं वह वस्तु हमें मिल जाती' उसके लोभ का पता देने के लिए बहुत है । वीर रस की जैसी अच्छी और परिष्कृत अनुभूति उत्साहपूर्ण उक्तियों द्वारा होती है । वैसी तत्परता के साथ हथियार चलाने और रणक्षेत्र में उछलने कूदने के वर्णन में नहीं । बात यह है कि भावों द्वारा प्रेरित प्रयत्न या व्यापार परिमित होते हैं । पर वाणी के प्रसार की कोई सीमा नहीं । उक्तियों में जितनी नवीनता और अनेकरूपता आ सकती है या भावों का जितना अधिक वेग व्यंजित हो सकता है उतना अनुभाव कहलाने वाले व्यापारों द्वारा नहीं । क्रोध के वास्तविक व्यापार तोडना-फोड़ना, मारना- पीटना इत्यादि हुआ करते हैं, पर क्रोध को

prose.indd 53 10-01-2019 10:48:40

उक्ति चाहे जहाँ तक बढ़ सकती है । किसी को धूल में मिला देना, चटनी कर डालना, किसी का घर खोदकर तालाब बना डालना तो मामूली बात है । यही बात सब भावों के सम्बन्ध में समझिए ।

समस्त मानव – जीवन के प्रवर्तक भाव या मनोविकार ही होते हैं । मनुष्य की प्रवृत्तियों की तह में अनेक प्रकार के भाव ही प्रेरक के रूप में पाये जाते हैं । शील या चरित्र का मूल भी भावों के विशेष प्रकार के संगठन में ही समझना चाहिए । लोक-रक्षा और लोक-रंजन की सारी व्यवस्था का ढाँचा इन्हीं पर ठहराया गया है । धर्म शासन, राज-शासन, मत-शासन- सब में इनसे पूरा काम लिया गया है । इनका सदुपयोग भी हुआ है, दुरुपयोग भी । जिस प्रकार लोक-कल्याण के व्यापक उद्देश्य की सिद्धि के लिए मनुष्य के मनोविकार काम में लाये गये हैं उसी प्रकार किसी संप्रदाय या संस्था के संकुचित और परिमित विधान की सफलता के लिए भी ।

सब प्रकार के शासन में चाहे धर्म- शासन हो, चाहे राज- शासन या संप्रदाय-शासन- मनुष्य- जाति के भय और लोभ से पूरा काम लिया गया है । दंड का भय और अनुग्रह का लोभ दिखाते हुए धर्म शासन और मन शासन चलते आ रहे हैं । इनके द्वारा भय लोभ का प्रवर्तन उचित सीमा के बाहर भी प्रायः हुआ है और होता रहता है । जिस प्रकार शासक वर्ग अपनी रक्षा और स्वार्थ-सिद्ध के लिए भी इनसे काम लेते आये हैं उसी प्रकार धर्म-प्रवर्तक और आचार्य अपने स्वरुप-वैचित्र्य की रक्षा और अपने प्रभाव की प्रतिष्ठा के लिए भी । शासक वर्ग अपने अन्याय और अत्याचार के विरोध की शांति के लिए भी डराते और ललचाते आये हैं । मत प्रवर्तक अपने द्वेष और संकुचित विचारों के प्रचार के लिए भी जनता को कंपाते और लपकाते आये हैं । एक जाति को मूर्ति पूजा करते देख दूसरी जाति के प्रवर्तक ने उसे गुनाहों में दाखिल किया है । एक संप्रदाय को भस्म और रूद्राक्ष धारण करते देख दूसरे संप्रदाय के प्रचारक ने उसके दर्शन तक में पाप लगाया है । भाव क्षेत्र अत्यंत पवित्र होता है । उसे इस प्रकार गन्दा करना लोक के प्रति भारी अपराध समझना चाहिए ।

शासन की पहुँच प्रवृत्ति और निवृत्ति की बाहरी व्यवस्था तक ही होती है । उनके मूल या मर्म तक उनकी गति नहीं होती । भीतरी या सच्ची प्रवृत्ति – निवृत्ति को जागृत रखनेवाली शक्ति कविता है जो धर्म यन्त्र में शक्ति भावना को जगाती रहती है । भक्ति धर्म की रसात्मक अनुभूति है । अपने मंगल और लोक के मंगल का संगम उसी के भीतर दिखाई पड़ता है । इस मंगल के लिए प्रकृति क्षेत्र के बीच मनुष्य को अपने हृदय के प्रसार का अभ्यास करना चाहिए। जिस प्रकार का ज्ञान नर सत्ता के प्रसार के लिए है, उसी प्रकार हृदय भी । रागात्मक वृत्ति के प्रसार के बिना विश्व के साथ जीवन का प्राकृत सामंजस्य घटित नहीं हो सकता । जब मनुष्य के सुख और आनंद का मेल शेष प्रकृति के सुख-सौन्दर्य के साथ हो जाएगा उसकी रक्षा का भाव तृण – गुल्म, वृक्ष-लता, पशु-पक्षी, कीट-पतंग, सब की रक्षा के भाव के साथ समन्वित हो जाएगा, तब उसके अवतार का उद्देश्य पूर्ण हो जाएगा और वह जगत का सच्चा प्रतिनिधि हो जाएगा । काव्य योग की साधना इसी भूमि पर पहुँचाने के लिए है। सच्चे कवियों की वाणी बराबर पुकारती आ रही है –

prose.indd 54 10-01-2019 10:48:40

विधि के बनाये जीव जेते हैं जहाँ के तहाँ

खेलत – फिरत तिन्हें खेलन फिरन देव – ठाकुर ।

कठिन शब्दार्थ :

1. अनुभूति – महसूस
2. द्वंद्व – संग्राम, दुविधा\
3. पर्याप्त – काफ़ी
4. उन्मुख होना – देखना
5. संघटित होना – एकत्रित, खूब बनाया हुआ
6. जटिल – जटिल
7. संश्लिष्ट होना – मिला हुआ
8. असंलक्ष्य होना – बेमेल
9. परिणाम – फल
10. ढांचा – बनावट
11. प्रतिष्ठा – गौरव
12. संकुचित – संकीर्ण
13. लपकाना – उचक्काना
14. दाखिल करना – प्रवेश
15. गुनाह – अपराध
16. प्रवृत्ति – मन का झुकाव; आरंभ; आचार-व्यवहार
17. निवृत्ति – त्याग; मुक्त
18. समन्वित होना – मिला हुआ; लगा हुआ

I. सन्दर्भ सहित व्याख्या :

1. पेट का भरा या खाली रहना ही ऐसी अनुभूति के लिए पर्याप्त होता है ।
2. वह निश्चय नहीं कर सकता कि इस हाथ उठाने का परिणाम दुःख होगा ।
3. सभ्य जातियों के बीच इन प्रयत्नों का स्थान बहुत कुछ शब्दों ने लिया है ।
4. धर्म शासन, राज-शासन, मत-शासन सब में इन से पूरा काम लिया जाता है ।
5. भाव-क्षेत्र अत्यंत पवित्र क्षेत्र है । उसे इस प्रकार गन्दा करना लोक के प्रति भारी अपराध समझना चाहिए ।
6. काव्य योग की साधना इसी भूमि पर पहुँचाने के लिए है ।
7. पर वाणी के प्रसार की कोई सीमा नहीं ।

prose.indd 55 10-01-2019 10:48:40

II. प्रश्नों के उत्तर दीजिये ।

1. 'भाव या मनोविकार' निबंध का लेखक कौन है ?
2. छोटे बच्चे के हृदय की सामान्य अनुभूतियाँ क्या-क्या हैं ?
3. मनोविकार का क्या अर्थ है ?
4. सुख और दुःख की मूल अनुभूतियाँ जटिल रूप के मनोविकार के रूप में कैसे बदलती हैं ?
5. 'क्रोध' का मनोविकार किसे कहते हैं ?
6. 'करुणा' का मनोविकार किसे कहते हैं ?
7. 'भय' का मनोविकार किसे कहते हैं ?
8. मनोविकारों की अनेकरूपता का विकास कैसे होता है ?
9. विशुद्ध सुख के भाव में हम क्या-क्या करेंगे ?
10. विशुद्ध दुःख के भाव में हम क्या-क्या करेंगे ?
11. शरीर में कंप किन-किन कारणों से होता है ?
12. क्रोध की व्यंजना कैसे प्रकट होती है ?
13. क्रोधी कैसे व्यवहार करता है ?
14. मनुष्य को अनुशासन में कैसे रखा जाता है ?
15. भीतरी और बाहरी प्रवृत्ति-निवृत्ति को कैसे स्थाई रूप में जागृत रख सकते हैं ?

prose.indd 56 10-01-2019 10:48:40

एकांकी 13 रीढ़ की हड्डी

जगदीशचन्द्र माथुर

जीवन परिचय



जगदीशचन्द्र माथुर का जन्म 16 जुलाई, 1917 ई. खुर्जा, बुलंदशहर ज़िला, उत्तर प्रदेश में हुआ। प्रारंभिक शिक्षा खुर्जा में हुई। उच्च शिक्षा युइंग क्रिश्चियन कॉलेज, इलाहाबाद और प्रयाग विश्वविद्यालय में हुई। प्रयाग विश्वविद्यालय का शैक्षिक वातावरण औऱ प्रयाग के साहित्यिक संस्कार रचनाकार के व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका हैं। 1939 ई. में प्रयाग विश्वविद्यालय से एम.ए. (अंग्रेज़ी) करने के बाद 1941 ई. में 'इंडियन सिविल सर्विस' में चुन लिए गए।

पात्र-परिचय

उमा	:	लड़की
रामस्वरूप	:	लड़की के पिता
प्रेमा	:	लकड़ी की माँ
शंकर	:	लड़का
गोपालदास	:	लड़के का बाप
रतन	:	नौकर
उमा	:	लड़की
रामस्वरूप	:	लड़की का पिता
प्रेमा	:	लड़की की माँ
शंकर	:	लड़का

prose.indd 57 10-01-2019 10:48:40

गोपालप्रसाद : लड़के का बाप

रतन : नौकर

[मामूली तरह से सजा हुआ एक कमरा। अंदर के दरवाजे से आते हुए जिन महाशय की पीठ नजर आ रही है वह अधेड़ उम्र के मालूम होते हैं , एक तख्त को पकड़े हुए पीछे की ओर चलते-चलते कमरे में आते हैं। तख्त का दूसरा सिरा उनके नौकर ने पकड़ रखा है।]

बाबू : अबे, धीरे-धीरे चल!..... अब तख्त को उधर मोड़ दे.....उधर.....बस, बस!

नौकर : बिछा दूँ, साहब?

बाबू : (जरा तेज आवाज में) और क्या करेगा? परमात्मा के यहाँ अक्ल बँट रही थी तो तू देर से पहुँचा था क्या?... बिछा दूँ साहब!.....और यह पसीना किसलिए बहाया है?

नौकर : (तख्त बिछाता है) ही-ही-ही।

बाबू : हँसता क्यों है?.....अबे, हमने भी जवानी में कसरतें की हैं। कलसों से नहाता था लोटों की तरह। यह तख्त क्या चीज है?...उसे सीध कर...यों...हाँ, बस।...और सुन बहूजी से दरी मांग ला, इसके ऊपर बिछाने के लिए।....चद्दर भी, कल जो धोबी के यहाँ से आई है, वही।

[नौकर जाता है। बाबूसाहब इस बीच में मेजपोश ठीक करते हैं। एक झाड़न से गुलदस्ते को साफ करते हैं। कुर्सियों पर भी दो-चार हाथ लगाते हैं। सहसा घर की मालकिन प्रेमा आती है। गंदुमी रंग, छोटा। चेहरे और आवाज से जाहिर होता है कि किसी काम में बहुत व्यस्त है। उसके पीछे-पीछे भीगी बिल्ली की तरह नौकर आ रहा है - खाली हाथ। बाबू साहब रामस्वरूप दोनों की तरफ देखने लगते हैं।]

प्रेमा : मैं कहती हूँ तुम्हें इस वक्त धोती की क्या जरूरत पड़ गई! एक तो वैसे ही जल्दी-जल्दी में...

रामस्वरूप : धोती!

प्रेमा : हाँ, अभी तो बदल कर आये हो और फिर न जाने किस लिए.....

राम : लेकिन तुमसे धोती माँगी किसने?

प्रेमा : यही तो कह रहा था रतन।

prose.indd 58 10-01-2019 10:48:40

राम : क्यों बे रतन, तेरे कानों में डाट लगी है क्या? मैंने कहा था-धोबी के यहाँ से जो चद्दर आई है, उसे माँग ला.... अब तेरे लिए दूसरा दिमाग कहाँ से लाऊँ? उल्लू कहीं का।

प्रेमा : अच्छा जा, पूजावाली कोठरी में लकड़ी के बक्स के ऊपर धुले हुए कपड़े रक्खे हैं, उन्हीं में से एक चद्दर उठा ला।

रतन : और दरी?

प्रेमा : दरी यहीं तो रक्खी है, कोने में। वह पड़ी तो है।

रामस्वरूप : (दरी उठाते हुए) और बीबीजी के कमरे में से हारमोनियम उठा ला और सितार भी।... जल्दी जा!

(रतन जाता है। पति-पत्नी तख्त पर दरी बिछाते हैं।)

प्रेमा : लेकिन वह तुम्हारी लाड़ली बेटी तो मुँह फुलाए पड़ी है।

रामस्वरूप : मुँह फुलाए!... और तुम उसकी माँ किस मर्ज की दवा हो? जैसे-तैसे करके वे लोग पकड़ में आए हैं। अब तुम्हारी बेवकूफी से सारी मेहनत बेकार जाय तो मुझे दोष मत देना!

प्रेमा : तो मैं ही क्या करूँ? सारे जतन करके तो हार गई। तुम्हीं ने उसे पढ़ा- लिखाकर इतना सिर चढ़ा रक्खा है। मेरी समझ में तो यह लिखाई-पढ़ाई के जंजाल आते नहीं। अपना जमाना अच्छा था! 'आ-ई' पढ़ ली, गिनती सीख ली और बहुत हुआ तो 'स्त्री-सुबोधिनी' पढ़ ली। सच पूछो तो स्त्री- सुबोधिनी में ऐसी-ऐसी बातें लिखीं हैं - ऐसी बातें कि क्या तुम्हारी बी.ए., एम.ए. की पढ़ाई होगी। और आजकल के तो लच्छन ही अनोखे हैं...

रामस्वरूप : ग्रामोफोन बाजा होता है न!

प्रेमा : क्यों?

रामस्वरूप : दो तरह का होता है। एक तो आदमी का बनाया हुआ। उसे एक बार चलाकर जब चाहे रोक लो। और दूसरा परमात्मा का बनाया हुआ; उसका रिकार्ड एक बार चढ़ा तो रुकने का नाम नहीं।

प्रेमा : हटो भी! तुम्हें ठठोली ही सूझती रहती है। यह तो होता नहीं कि उस अपनी उमा को राह पर लाते। अब देर ही कितनी रही है उन लोगों के आने में!

रामरूवरूप : तो हुआ क्या?

prose.indd 59 10-01-2019 10:48:40

प्रेमा : तुम्हीं ने तो कहा था कि जरा ठीक-ठीक करके नीचे लाना। आजकल तो लड़की कितनी ही सुंदर हो, बिना टीमटाम के भला कौन पूछता है? इसी मारे मैंने तो पौडर-वौडर उसके सामने रक्खा था। पर उसे तो इन चीजों से न जाने किस जन्म की नफरत है। मेरा कहना था कि आँचल में मुँह लपेटकर लेट गई। भई, मैं तो बाज आई तुम्हारी इस लड़की से।

रामस्वरूप : न जाने कैसा इसका दिमाग है! वरना आजकल की लड़कियों के सहारे तो पौडर का कारबार चलता है।

प्रेमा : अरे, मैंने तो पहले ही कहा था। इंट्रेंस ही पास करा देते - लड़की अपने हाथ रहती; और इतनी परेशानी न उठानी पड़ती! पर तुम तो -

रामस्वरूप : (बात काटकर) चुप, चुप!... (दरवाजे में झाँकते हुए) तुम्हें कतई अपनी जबान पर काबू नहीं है। कल ही यह बता दिया था कि उन लोगों के सामने जिक्र और ढंग से होगा, मगर तुम अभी से सब-कुछ उगले देती हो। उनके आने तक तो न जाने क्या हाल करोगी!

प्रेमा : अच्छा बाबा, मैं न बोलूँगी। जैसी तुम्हारी मर्जी हो करना। बस, मुझे तो मेरा काम बता दो।

रामस्वरूप : तो उमा को जैसे हो तैयार कर लो। न सही पौडर, वैसे कौन बुरी है! पान लेकर भेज देना उसे। और नाश्ता तो तैयार है न? (रतन का आना) आ गया रतन।.....इधर ला, इधर! बाजा नीचे रख दे। चद्दर खोल।... पकड़ तो जरा इधर से।

[चद्दर बिछाते हैं]

प्रेमा : नाश्ता तो तैयार है। मिठाई तो वे लोग ज्यादा खाएँगे नहीं, कुछ नमकीन चीजें बना दी हैं। फल रक्खे हैं ही। चाय तैयार है, और टोस्ट भी। मगर हाँ, मक्खन? मक्खन तो आया ही नहीं।

रामस्वरूप : क्या कहा? मक्खन नहीं आया? तुम्हें भी किस वक्त याद आई है! जानती हो कि मक्खनवाले की दुकान दूर है; पर तुम्हें तो ठीक वक्त पर कोई बात सूझती ही नहीं। अब बताओ, रतन मक्खन लाए कि यहाँ का काम करे। दफ्तर के चपरासी से कहा था आने के लिए सो, नखरों के मारे...

प्रेमा : यहाँ का काम कौन ज्यादा है? कमरा तो सब ठीक-ठाक है ही। बाजा- सितार आ ही गया। नाश्ता यहाँ बराबरवाले कमरे में 'ट्रे' में रक्खा हुआ है, सो तुम्हें पकड़ा दूँगी। एकाध चीज खुद ले आना। इतनी देर में रतन मक्खन ले ही आएगा। दो आदमी ही तो हैं?

रामस्वरूप : हाँ, एक तो बाबू गोपालप्रसाद और दूसरा खुद लड़का है। देखो, उमा से कह देना कि जरा करीने से आए।

prose.indd 60 10-01-2019 10:48:41

ये लोग जरा ऐसे ही हैं। गुस्सा तो मुझे बहुत आता है इनके दकियानूसी खयालों पर। खुद पढ़े-लिखे हैं, वकील हैं, सभा-सोसाइटियों में जाते हैं, मगर लड़की चाहते हैं ऐसी कि ज्यादा पढ़ी- लिखी न हो।

प्रेमा : और लड़का?

रामस्वरूप : बताया तो था तुम्हें। बाप सेर है तो लड़का सवा सेर। बी.एस.सी. के बाद लखनऊ में ही तो पढ़ता है मेडिकल कालेज में। कहता है कि शादी का सवाल दूसरा है, तालीम का दूसरा। क्या करूँ, मजबूरी है! मतलब अपना है वरना इन लड़कों और इनके बापों को ऐसी कोरी-कोरी सुनाता कि ये भी...

रतन : (जो अब तक दरवाजे के पास चुपचाप खड़ा हुआ था, जल्दी-जल्दी) बाबूजी, बाबूजी!

रामस्वरूप : क्या है?

रतन : कोई आते हैं।

रामस्वरूप : (दरवाजे से बाहर झाँककर जल्दी मुँह अंदर करते हुए) अरे, ऐ प्रेमा, वे आ भी गए। (नौकर पर नजर पड़ते ही) अरे, तू यहाँ खड़ा है, बेवकूफ! गया नहीं मक्खन लाने?... सब चौपट कर दिया।... अबे, उधर से नहीं, अंदर के दरवाजे से जा (नौकर अंदर आता है।) और तुम जल्दी करो, प्रेमा। उमा को समझा देना, थोड़ा-सा गा देगी।

[प्रेमा जल्दी से अंदर की तरफ आती है। उसकी धोती जमीन पर रक्खे हुए बाजे से अटक जाती है।]

प्रेमा : ऊँह! यह बाजा वह नीचे ही रख गया है, कमबख्त।

रामस्वरूप : तुम जाओ, मैं रखे देता हूँ।... जल्दी!

[प्रेमा जाती है। बाबू रामस्वरूप बाजा उठाकर रखते हैं। किवाड़ों पर दस्तक।]

रामस्वरूप : हँ-हँ-हँ। आइए, आइए.....हँ-हँ-हँ।

[बाबू गोपालप्रसाद और उनके लड़के शंकर का आना। आँखों से लोक- चतुराई टपकती है। आवाज से मालूम होता है कि काफी अनुभवी और फितरती महाशय हैं। उनका लड़का कुछ खीस निपोरनेवाले नौजवानों में से है। आवाज पतली है और खिसियाहट-भरी। झुकी कमर इनकी खासियत है।]

रामस्वरूप : (अपने दोनों हाथ मलते हुए) हँ-हँ, इधर तशरीफ लाइए, इधर...!

prose.indd 61 10-01-2019 10:48:41

[बाबू गोपालप्रसाद उठते हैं, मगर बेंत गिर पड़ता है।]

रामस्वरूप : यह बेंत!....लाइए, मुझे दीजिए। (कोने में रख देते हैं। सब बैठते हैं।) हँ-हँ....मकान ढूँढ़ने में कुछ तकलीफ तो नहीं हुई?

गोपालप्रसाद : (खखारकर) नहीं। ताँगेवाला जानता था।....और फिर हमें तो यहाँ आना ही था। रास्ता मिलता कैसे नहीं!

रामस्वरूप : हँ-हँ-हँ, यह तो आपकी बड़ी मेहरबानी है। मैंने आपको तकलीफ तो दी -

गोपालप्रसाद : अरे नहीं साहब। जैसा मेरा काम, वैसा आपका काम। आखिर लड़के की शादी तो करनी ही है। बल्कि यों कहिए कि मैंने आपके लिए खासी परेशानी कर दी।

रामस्वरूप : हँ-हँ-हँ! यह लीजिए, आप तो मुझे काँटों में घसीटने लगे। हम तो आपके हँ-हँ-हँ- सेवक ही हैं। हँ-हँ! (थोड़ी देर बाद लड़के की ओर मुखातिब होकर) और कहिए शंकरबाबू, कितने दिनों की छुट्टियाँ हैं?

शंकर : जी, कालिज की तो छुट्टियाँ नहीं हैं। 'वीक एंड' में चला आया था।

रामस्वरूप : तो आपके कोर्स खत्म होने में तो अब साल-भर रहा होगा?

शंकर : जी, यही कोई साल-दो साल।

रामस्वरूप : साल-दो साल!

शंकर : हँ-हँ-हँ.....जी, एकाध साल का 'मार्जिन' रखता हूँ।

गोपालप्रसाद : बात यह है, साहब कि यह शंकर एक साल बीमार हो गया था। क्या बताएँ, इन लोगों को इसी उम्र में सारी बीमारियाँ सताती हैं। एक हमारा जमाना था कि स्कूल से आकर दर्जनों कचौड़ियाँ उड़ा जाते थे, मगर फिर जो खाना खाने बैठते तो वैसी-की-वैसी ही भूख!

रामस्वरूप : कचौड़ियाँ भी तो उस जमाने में पैसे की दो आती थीं।

गोपालप्रसाद : जनाब, यह हाल था कि चार पैसे में ढेर-सी बालाई आती थी और अकेले दो आने की हजम करने की ताकत थी, अकेले! और अब तो बहुतेरे खेल वगैरह भी होते हैं स्कूल में। तब न बॉलीवाल जानता था, न टेनिस, न बैडमिंटन। बस, कभी हॉकी या कभी क्रिकेट कुछ लोग खेला करते थे। मगर मजाल कि कोई कह

prose.indd 62 10-01-2019 10:48:41

जाय कि यह लड़का कमजोर है।

[शंकर और रामस्वरूप खीसें निपोरते हैं।]

रामस्वरूप : जी हाँ, जी हाँ! उस जमाने की बात ही दूसरी थी। हँ-हँ!

गोपालप्रसाद : (जोशीली आवाज में) और पढ़ाई का यह हाल था कि एक बार कुर्सी पर बैठा कि बारह घंटे की 'सिटिंग' हो गई, बारह घंटे! जनाब मैं सच कहता हूँ कि उस जमाने का मैट्रिक भी वह अंग्रेजी लिखता था फर्राटे की कि आजकल के एम.ए. भी मुकाबला नहीं कर सकते।

रामस्वरूप : जी हाँ, जी हाँ! यह तो है ही।

गोपालप्रसाद : माफ़ कीजिएगा बाबू रामस्वरूप, उस जमाने की जब याद आती है, अपने को जब्त करना मुश्किल हो जाता है।

रामस्वरूप : हँ-हँ-हँ!... जी हाँ, वह तो रंगीन जमाना था, रंगीन जमाना! हँ हँ हँ।

[शंकर भी हीं-हीं करता है।]

गोपालप्रसाद : (एक साथ अपनी आवाज और तरीका बदलते हुए) अच्छा तो साहब, फिर 'बिजनेस' की बातचीत हो जाय।

रामस्वरूप : (चौंककर बिजनेस?....बिजि....समझकर)ओह....अच्छा, अच्छा! लेकिन जरा नाश्ता तो कर लीजिए।

[उठते हैं।]

गोपालप्रसाद : यह सब आप क्या तकल्लुफ़ करते हैं?

रामस्वरूप : हँ....हँ...हँ, तकल्लुफ़ किस बात का! हँ-हँ! यह तो मेरी बड़ी तकदीर है कि आप मेरे यहाँ तशरीफ लाए; वरना मैं किस काबिल हूँ! हँ - हँ!....माफ कीजिएगा जरा, अभी हाजिर हुआ।

[अंदर जाते हैं।]

गोपालप्रसाद : (थोड़ी देर बाद दबी आवाज में) आदमी तो भला है, मकान-वकान से हैसियत भी बुरी नहीं मालूम होती। पता चले, लड़की कैसी है!

prose.indd 63 10-01-2019 10:48:41

शंकर : जी....

(कुछ खखारकर इधर-उधर देखता है।)

गोपालप्रसाद : क्यों, क्या हुआ?

शंकर : कुछ नहीं।

गोपालप्रसाद : झुककर क्यों बैठते हो? ब्याह तय करने आए हो, कमर सीधी करके बैठो। तुम्हारे दोस्त ठीक कहते हैं कि शंकर 'बैकबोन'...

[इतने में बाबू रामस्वरूप आते हैं, हाथ में चाय की ट्रे लिए। मेज पर रख देते हैं।]

गोपालप्रसाद : आखिर आप माने नहीं!

रामस्वरूप : (चाय प्याले में डालते हुए) हँ-हँ-हँ, आपको विलायती चाय पसंद है या हिंदुस्तानी?

गोपालप्रसाद : नहीं-नहीं साहब, मुझे आधा दूध और आधी चाय दीजिए। और जरा चीनी ज्यादा डालिएगा। मुझे तो भाई, यह नया फैशन पसंद नहीं। एक तो वैसे ही चाय में पानी काफी होता है, और फिर चीनी भी नाम के लिए डाली, तो जायका क्या रहेगा?

रामस्वरूप : हँ-हँ, कहते तो आप सही हैं।

(प्याले पकड़ाते हैं।)

शंकर : (खखारकर) सुना है, सरकार अब ज्यादा चीनी लेनेवालों पर 'टैक्स' लगाएगी।

गोपालप्रसाद : (चाय पीते हुए) हूँ। सरकार जो चाहे सो कर ले; पर अगर आमदनी करनी है तो सरकार को बस एक ही टैक्स लगाना चाहिए।

रामस्वरूप : (शंकर को प्याला पकड़ाते हुए) वह क्या?

गोपालप्रसाद : खूबसूरती पर टैक्स! (रामस्वरूप और शंकर हँस पड़ते हैं) मजाक नहीं साहब, यह ऐसा टैक्स है, जनाब कि देनेवाले चूँ भी न करेंगे। बस शर्त यह है कि हर एक औरत पर यह छोड़ दिया जाय कि वह अपनी खूबसूरती के 'स्टैंडर्ड' के माफिक अपने ऊपर टैक्स तय कर ले। फिर देखिए, सरकार की कैसी आमदनी बढ़ती है!

prose.indd 64 10-01-2019 10:48:41

रामस्वरूप : (जोर से हँसते हुए) वाह-वाह! खूब सोचा आपने! वाकई आजकल यह खूबसूरती का सवाल भी बेढ़ब हो गया है। हम लोगों के जमाने में तो यह कभी उठता भी न था। (तश्तरी गोपालप्रसाद की तरफ बढ़ाते हैं।) लीजिए!

गोपालप्रसाद : (समोसा उठाते हुए) कभी नहीं साहब, कभी नहीं।

रामस्वरूप : (शंकर को मुखातिब होकर) आपका क्या ख्याल है, शंकर बाबू?

शंकर : किस मामले में?

रामस्वरूप : यही कि शादी तय करने में खूबसूरती का हिस्सा कितना होना चाहिए?

गोपालप्रसाद : (बीच में ही) यह बात दूसरी है बाबू रामस्वरूप, मैंने आपसे पहले भी कहा था, लड़की का खूबसूरत होना निहायत जरूरी है। कैसे भी हो, चाहे पाउडर वगैरा लगाए, चाहे वैसे ही। बात यह है कि हम आप मान भी जायें, मगर घर की औरतें तो राजी नहीं होतीं। आपकी लड़की तो ठीक है?

रामस्वरूप : जी हाँ, वह तो अभी आप देख लीजिएगा।

गोपालप्रसाद : देखना क्या? जब आपसे इतनी बातचीत हो चुकी है, तब तो यह रस्म ही समझिए।

रामस्वरूप : हँ - हँ, यह तो आपका मेरे ऊपर भारी अहसान है। हँ - हँ!

गोपालप्रसाद : और जायचा (जन्म-पत्र) तो मिल ही गया होगा!

रामस्वरूप : जी, जायचे का मिलना क्या मुश्किल बात है! ठाकुरजी के चरणों में रख दिया। बस खुद-ब-खुद मिला हुआ समझिए।

गोपालप्रसाद : यह ठीक कहा है आपने, बिल्कुल ठीक (थोड़ी देर रुककर) लेकिन हाँ, यह जो मेरे कानों में भनक पड़ी है, यह तो गलत है न?

रामस्वरूप : (चौंककर) क्या?

गोपालप्रसाद : यही पढ़ाई-लिखाई के बारे में।... जी हाँ, साफ बात है साहब, हमें ज्यादा पढ़ी-लिखी लड़की नहीं चाहिए। मेमसाहब तो रखनी नहीं, कौन भुगतेगा उनके नखरों को। बस, हद-से-हद मैट्रिक होनी चाहिए... क्यों शंकर?

prose.indd 65 10-01-2019 10:48:41

शंकर : जी हाँ, कोई नौकरी तो करानी नहीं।

रामस्वरूप : नौकरी का तो कोई सवाल ही नहीं उठता।

गोपालप्रसाद : और क्या साहब! देखिए कुछ लोग मुझसे कहते हैं कि जब आपने अपने लड़कों को बी.ए., एम.ए. तक पढ़ाया है तब उनकी बहुएँ भी ग्रेजुएट लीजिए। भला पूछिए इन अक्ल के ठेकेदारों से कि क्या लड़कों और लड़कियों की पढ़ाई एक बात है। अरे, मर्दों का काम तो है ही पढ़ना और काबिल होना। अगर औरतें भी वही करने लगीं, अंग्रेजी अखबार पढ़ने लगीं और 'पालिटिक्स वगैरह बहस करने लगीं तब तो हो चुकी गृहस्थी! जनाब, मोर के पंख होते हैं, मोरनी के नहीं; शेर के बाल होते हैं, शेरनी के नहीं।

रामस्वरूप : जी हाँ, मर्द के दाढ़ी होती है, औरत के नहीं। हँ... हँ...हँ।

[शंकर भी हँसता है, मगर गोपालप्रसाद गंभीर हो जाते हैं।]

गोपालप्रसाद : हाँ, हाँ। वह भी सही है। कहने का मतलब यह है कि कुछ बातें दुनिया में ऐसी हैं जो सिर्फ मर्दों के लिए हैं और ऊँची तालीम भी ऐसी ही चीजों में से एक है।

रामस्वरूप : (शंकर से) चाय और लीजिए!

शंकर : धन्यवाद, पी चुका।

रामस्वरूप : (गोपालप्रसाद से) आप?

गोपालप्रसाद : बस साहब, यह खत्म ही कीजिए!

रामस्वरूप : आपने तो कुछ खाया नहीं। चाय के साथ 'टोस्ट' नहीं थे। क्या बताएँ, वह मक्खन

गोपालप्रसाद : नाश्ता ही तो करना था साहब, कोई पेट तो भरना था नहीं; और फिर टोस्ट-वोस्ट मैं खाता भी नहीं।

रामस्वरूप : हँ-हँ (मेज को एक तरफ सरका देते हैं। अंदर के दरवाजे की तरफ मुँह कर जरा जोर से) अरे जरा पान भिजवा देना...! सिगरेट मँगवाऊँ?

गोपालप्रसाद : जी नहीं।

prose.indd 66 10-01-2019 10:48:41

[पान की तश्तरी हाथों में लिए उमा आती है। सादगी के कपड़े, गर्दन झुकी हुई। बाबू गोपालप्रसाद आँखें गड़ाकर और शंकर आँखें छिपाकर उसे ताक रहे हैं।]

रामस्वरूप : हँ... हँ!... यह... हँ... हँ, आपकी लड़की है? लाओ बेटी, पान मुझे दो।

[उमा पान की तश्तरी अपने पिता को देती है। उस समय उसका चेहरा ऊपर को उठ जाता है और नाक पर रक्खा हुआ सोने की रिमवाला चश्मा दीखता है। बाप-बेटे दोनों चौंक उठते हैं।]

गोपालप्रसाद और शंकर : (एक साथ) - चश्मा !

रामस्वरूप : (जरा सकपकाकर) - जी, वह तो... वह... पिछले महीने में इसकी आँखें दुखने आ गई थीं, सो कुछ दिनों के लिए चश्मा लगाना पड़ रहा है।

गोपालप्रसाद : पढ़ाई-वढ़ाई की वजह से तो नहीं है कुछ?

रामस्वरूप : नहीं साहब; वह तो मैंने अर्ज किया न!

गोपालप्रसाद : हूँ (संतुष्ट होकर कुछ कोमल स्वर में)बैठो बेटी!

रामस्वरूप : वहाँ बैठ जाओ, उमा, उस तख्ते पर, अपने बाजे-बाजे के पास।

[उमा बैठती है।]

गोपालप्रसाद : चाल में तो कुछ खराबी है नहीं। चेहरे पर भी छवि है!... हाँ, कुछ गाना- बजाना सीखा है?

रामस्वरूप : जी हाँ, सितार भी, और बाजा भी। सुनाओ तो उमा, एकाध गीत सितार के साथ।

[उमा सितार उठाती है। थोड़ी देर बाद मीरा का मशहूर गीत 'मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरों न कोई' गाना शुरू कर देती है। स्वर से जाहिर है कि गाने का अच्छा ज्ञान है। उसके स्वर में तल्लीनता आ जाती है, यहाँ तक कि उसका मस्तक उठ जाता है। उसकी आँखें शंकर की झेंपती-सी आँखों से मिल जाती हैं और वह गाते-गाते एक साथ रुक जाती है।]

रामस्वरूप : क्यों, क्या हुआ? गाने को पूरा करो, उमा!

गोपालप्रसाद : नहीं-नहीं साहब, काफी है। लड़की आपकी अच्छा गाती है।

prose.indd 67 10-01-2019 10:48:41

[उमा सितार रखकर अंदर जाने को उठती है।]

गोपालप्रसाद : अभी ठहरो, बेटी!

रामस्वरूप : थोड़ा और बैठी रहो, उमा! (उमा बैठती है)

गोपालप्रसाद : (उमा से) तो तुमने पेंटिंग-वेंटिग भी...?

उमा : (चुप)

रामस्वरूप : हाँ, वह तो मैं आपको बताना भूल ही गया। यह जो तस्वीर टँगी हुई है, कुत्तेवाली, इसी ने खींची है; और वह दीवार पर भी।

गोपालप्रसाद : हूँ। यह तो बहुत अच्छा है; और सिलाई वगैरह?

रामस्वरूप : सिलाई तो सारे घर की इसी के जिम्मे रहती है, यहाँ तक कि मेरी कमीजें भी। हँ... हँ... हँ...

गोपाल : ठीक!... लेकिन, हाँ बेटी, तुमने कुछ इनाम-विनाम भी जीते हैं?

[उमा चुप। रामस्वरूप इशारे के लिए खाँसते हैं। लेकिन उमा चुप है, उसी तरह गर्दन झुकाए। गोपालप्रसाद अधीर हो उठते हैं और रामस्वरूप सकपकाते हैं!]

राम : जवाब दो, उमा! (गोपाल से) हँ-हँ, जरा शरमाती है। इनाम तो इसने...

गोपाल : (जरा रूखी आवाज में) जरा इसे भी तो मुंह खोलना चाहिए।

राम : उमा, देखो, आप क्या कह रहे हैं। जवाब दो न!

उमा : (हल्की लेकिन मजबूत आवाज में) क्या जवाब दूँ, बाबूजी! जब कुर्सी-मेज बिकती है, तब दुकानदार कुर्सी-मेज से कुछ नहीं पूछता, सिर्फ खरीदार को दिखला देता है। पसंद आ गई तो अच्छा है, वरना...

राम : (चौंककर खड़े हो जाते हैं।) उमा, उमा!

उमा : अब मुझे कह लेने दीजिए, बाबूजी!.... ये जो महाशय मेरे खरीदार बनकर आए हैं, इनसे जरा पूछिए कि क्या लड़कियों के दिल नहीं होता? क्या उनके चोट नहीं लगती? क्या वे बेबस भेड़-बकरियाँ हैं, जिन्हें कसाई अच्छी तरह देख-भालकर खरीदते हैं?

prose.indd 68 10-01-2019 10:48:41

गोपाल : (ताव में आकर) बाबू रामस्वरूप, आपने मेरी इज्जत उतारने के लिए मुझे यहाँ बुलाया है?

उमा : (तेज़ आवाज़ में) जी हाँ; हमारी बेइज्जती नहीं होती जो आप इतनी देर से नाप-तोल कर रहे हैं? और जरा अपने इस साहबजादे से पूछिए कि अभी पिछली फरवरी में ये लड़कियों के होस्टल के इर्द-गिर्द क्यों घूम रहे थे, और वहाँ से क्यों भगाए गए थे!

शंकर : बाबूजी, चलिए!

गोपाल : लड़कियों के होस्टल में?... क्या तुम कालेज में पढ़ी हो?

[रामस्वरूप चुप!]

उमा : जी हाँ, मैं कालेज में पढ़ी हूँ। मैंने बी.ए. पास किया है। कोई पाप नहीं किया, कोई चोरी नहीं की, और न आपके पुत्र की तरह ताक-झाँककर कायरता दिखाई है। मुझे अपनी इज्जत - अपने मान का खयाल तो है। लेकिन इनसे पूछिए कि ये किस तरह नौकरानी के पैरों में पड़कर अपना मुंह छिपाकर भागे थे!

राम : उमा! उमा!

गोपाल : (खड़े होकर गुस्से से) बस, हो चुका। बाबू रामस्वरूप, आपने मेरे साथ दगा किया। आपकी लड़की बी.ए. पास है और आपने मुझसे कहा था कि सिर्फ मैट्रिक तक पढ़ी है। लाइए, मेरी छड़ी कहाँ है। मैं चलता हूँ। (छड़ी ढूँढ़कर उठाते हैं।) बी.ए. पास? ओफ्फोह! गजब हो जाता! झूठ का भी कुछ ठिकाना है! आओ बेटे, चलो.....

(दरवाजे की ओर बढ़ते हैं।)

उमा : जी हाँ, जाइए, जरूर चले जाइए! लेकिन घर जाकर जरा यह पता लगाइएगा कि आपके लाड़ले बेटे के रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं - यानी बैकबोन, बैकबोन -

prose.indd 69 10-01-2019 10:48:41



[बाबू गोपालप्रसाद के चेहरे पर बेबसी का गुस्सा है और उनके लड़के के रुलासापन। दोनों बाहर चले जाते हैं। बाबू रामस्वरूप कुर्सी पर धम से बैठ जाते हैं। उमा सहसा चुप हो जाती है। लेकिन उसकी हँसी सिसकियों में तबदील हो जाती है। प्रेमा का घबराहट की हालत में आना।]

प्रेमा : उमा, उमा....रो रही है?

[यह सुनकर रामस्वरूप खड़े होते हैं। रतन आता है।]

रतन : बाबूजी, मक्खन!

[सब रतन की तरफ देखते हैं और परदा गिरता है।]

I) प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. 'रीढ़ की हड्डी' किसकी रचना है?
2. 'रीढ़ की हड्डी' का प्रमुख पात्र कौन है?
3. 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी का उद्देश्य क्या है?
4. उमा गीत गाते-गाते क्यों रोई?
5. उमा ने गोपालप्रसाद से क्या प्रश्न किया?
6. गोपालप्रसाद ने उमा की बातें सुनकर क्या कहा?
7. उमा की परीक्षा गोपालप्रसाद ने कैसे ली?

prose.indd 70 10-01-2019 10:48:41

8. रामस्वरूप क्या झूठ बोला?

9. शंकर ने क्या किया?

10. मध्यवर्गीय परिवार की कहानी संक्षेप में लिखिए।

11. गोपालप्रसाद ने उमा से क्या प्रश्न किया?

12. 'रीढ़ की हड्डी' का सार लिखिए।

13. उमा का चरित्र-चित्रण कीजिए।

II) संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।

1. आदमी तो भला है, मकान-वकान से हैसियत भी बुरी नहीं मालूम होती। पता चले, लड़की कैसी है?

2. सरकार जो चाहे सो कर ले, पर अगर आमदनी करनी है तो सरकार को बस एक ही टैक्स लगाना चाहिए।

3. मजाक नहीं साहब, यह ऐसा टैक्स है जनाब कि देने वाले चूँ भी न करेंगे। बस शर्त यह है कि हर एक औरत पर यह छोड़ दिया जाए कि वह अपनी खूबसूरती के स्टैन्डर्ड के माफिक अपने ऊपर टैक्स तय कर ले।

4. कहने का मतलब यह है कि कुछ बातें दुनिया में ऐसी हैं जो सिर्फ मर्दों के लिए हैं और ऊँची तालीम भी ऐसी चीजों में से एक है।

5. जब कुर्सी मेज बिकती है तब दुकानदार कुर्सी-मेज से कुछ नहीं पूछता, सिर्फ खरीददार को दिखला देता है। पसंद गई तो अच्छा, वरना।

6. लेकिन घर जाकर जरा यह पता लगाइयेगा कि आपके लाड़ले बेटे के रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं यानी बैकबोन, बैकबोन-।

prose.indd 71 10-01-2019 10:48:41

गद्य 14 नागरिकों के मूल अधिकार

संकलित

हमारे देश का नाम भारत है । इसे हिन्द, हिंदुस्तान और इण्डिया भी कहते हैं । बहुत दिनों तक इस देश पर अंग्रेज जाति का राज्य था । अंग्रेजों का राजा ही भारत का सम्राट होता था । सम्राट का एक प्रतिनिधि आकर भारत में रहता था और उसी के हुक्म से यहाँ का सारा कारोबार चलता था । भारत की जनता का उसमें कोई हाथ नहीं था । आखिर गांधीजी-जैसे नेताओं और जनता के प्रयत्न से भारत स्वतंत्र हुआ और सन् 1947 में यहाँ जनता की सरकार क़ायम हुई ।

अंग्रेजों के यहाँ से जाने के बाद देश के बड़े-बड़े आदमियों की एक सभा बुलायी गयी । उसमें सब दलों के नेता शामिल हुए । सबने मिलकर हिंदुस्तान की हुकूमत कैसी होनी चाहिए, इस सवाल पर विचार किया । एक लम्बी चर्चा के बाद उन्होंने देश का शासन करने के लिए एक नियमावली बनायी । उसको भारत का संविधान कहते हैं । इसी संविधान के मुताबिक हमारे देश का राजकाज चलता है ।



उस संविधान के शुरू में लिखा है कि भारत एक गणतंत्र राज्य है । जिस देश का राज्य उसी देश की जनता के द्वारा चलता है और जहाँ कोई राजा नहीं होता, उसे गणतंत्र राज्य कहते हैं । फिर हमारे संविधान में लिखा है कि हमारे गणतंत्र राज्य में सबके साथ न्याय होगा, लोग किसी भी धर्म या मज़हब के माननेवाले हों, सब समान माने जाएँगे सबके समान अधिकार होंगे और सबकी रक्षा का भार सरकार पर होगा ।

prose.indd 72 10-01-2019 10:48:42

हमारे संविधान में देश के सभी नागरिकों को कुछ अधिकार दिए गये हैं । इन अधिकार को मूल अधिकार कहते हैं । ये अधिकार निम्नलिखित हैं –

समता का अधिकार

मूल अधिकारों में सबसे पहला अधिकार समता का अधिकार है, जिसमें लिखा है कि भारत के सब नागरिकों को क़ानून के सामने बराबर समझा जाएगा । कोई क़ानून ऐसा नहीं बनाया जाएगा, जिससे कि उनके साथ भेदभाव प्रकट हो । आदमी चाहे किसी जाति या धर्म का हो, चाहे वह कहीं भी पैदा हुआ हो – सबके अधिकार समान होंगे । इसी प्रकार स्त्री और पुरुष, दोनों को बराबर समझा जाएगा ।

पहले भारत में जाति-पाँति और छुआछूत का बहुत जोर था । होटलों, दूकानों आदि में सब लोग नहीं जा सकते थे । तालाबों, नदियों, सड़कों आदि का उपयोग करने में भी भेदभाव किया जाता था । अब संविधान में इस चीज़ की मनाही कर दी गयी है । सबको समान अधिकार है कि वे किसी भी दूकान या होटल में जा सकते हैं और किसी नदी, तालाब या सड़क का उपयोग कर सकते हैं ।

संविधान में यह भी लिखा है कि सरकारी नौकरियों में सब नागरिकों को समान अवसर दिया जाएगा । मतलब यह कि आदमी किसी भी जाति या धर्म का मानने वाला हो, उसे उसकी योग्यता के अनुसार कोई भी सरकारी नौकरी पाने का अधिकार होगा । किसी पद के लिए स्त्री को अयोग्य नहीं समझा जाएगा । वे भी बड़े से बड़े पद पर नियुक्त हो सकती हैं ।

पहले अंग्रेजों के राज्य में लोगों को ख़िताब दिये जाते थे । कोई राय साहब, राय बहादुर, दीवान बहादुर या खान साहब बना दिया जाता, तो किसी को 'सर' की उपाधि दी जाती थी । वे लोग अपने आप को दूसरे लोगों से बड़ा समझते थे । इस बड़े-छोटे के भेदभाव को मिटाने के लिए संविधान में लिखा है कि सरकार किसी को कोई ख़िताब या पदवी नहीं देगी । विधान में यह भी लिखा है कि भारत का कोई नागरिक किसी दूसरे देश की सरकार से भी कोई ख़िताब स्वीकार नहीं करेगा ।

स्वतंत्रता का अधिकार

समता के अधिकार के बाद भारत के लोगों को स्वतंत्रता का अधिकार भी दिया गया है । भारत के सभी नागरिकों को भाषण देने की स्वतंत्रता है, लेखन की स्वतंत्रता है, सभा-संस्थाएँ बनाने की स्वतंत्रता है । इतना ही नहीं, उन्हें भारत में कहीं भी जाकर व्यापार या नौकरी करने की भी पूरी स्वतंत्रता है । किसी नागरिक को बिना कारण कैद भी नहीं किया जा सकता । यदि किसी को कैद किया गया, तो सरकार को इसके लिए सफाई देनी होगी । यदि सरकार की सफाई ठीक नहीं हुई, तो न्यायालय उस कैदी को रिहा कर सकता है ।

prose.indd 73 10-01-2019 10:48:42

पहले भारत में सरकारी अफसर और बड़े-बड़े आदमी गरीब लोगों से मुफ़्त में काम लेते थे । उसे 'बेगार' कहते हैं । संविधान में बेगार को बिल्कुल बंद कर दिया गया है । अब कोई भी आदमी किसी से मुफ़्त में काम नहीं ले सकता । कोई किसी से जबरदस्ती उसकी इच्छा के विरुद्ध काम नहीं ले सकता । जो ऐसा करेगा, वह सज़ा पाएगा ।

पहले कुछ मिल-मालिक छोटे-छोटे बच्चों से कारख़ानों और खानों में काम लेते थे । इससे बच्चों का स्वास्थ्य बिगड़ जाता था और वे कमज़ोर हो जाते थे । उन्हें शिक्षा भी नहीं मिल पाती थी । इसलिए अब संविधान में यह नियम बना दिया गया है कि 14 वर्ष से कम आयुवाले किसी बच्चे को किसी कारख़ाने या खान में नौकर नहीं रखा जाएगा ।

धर्म-स्वातंत्र्य का अधिकार

संविधान में सबको अपना धर्म मानने का, उसपर अमल करने का तथा उसका प्रचार करने का अधिकार दिया गया है । हमारा राज्य ऐसा राज्य है, जो धर्म या दीन के आधार पर नहीं बना है । इसलिए यह 'धर्मनिरपेक्ष राज्य' कहा जाता है । यह किसी धर्म के साथ पक्षपात नहीं करता । यह भी नियम है कि किसी सरकारी स्कूल में किसी धर्म की शिक्षा नहीं दी जाएगी ।

संस्कृति और शिक्षा-संबंधी अधिकार

हमारे संविधान में सब लोगों को अपनी भाषा, लिपि या संस्कृति बनाये रखने का पूरा अधिकार दिया गया है । सब धर्मों के लोगों को अपनी रुचि के अनुसार धार्मिक संस्थाएँ बनाने और शिक्षा-संस्थाएँ स्थापित करने का समान अधिकार दिया है । सरकार इस तरह के कामों में कभी रुकावट नहीं डाल सकती ।

संपत्ति और अधिकार

भारत के सभी नागरिकों को भारत के किसी भी भाग में जाकर रहने, घर बनाने तथा संपत्ति उपार्जन करने का अधिकार दिया गया है । संविधान में यह भी नियम रखा गया है कि सरकार किसी आदमी की संपत्ति नहीं ले सकती और यदि सार्वजनिक हित के लिए उसका लेना जरूरी हो, तो उसका उचित मूल्य देकर ही ले सकती है।

हकों की रक्षा का अधिकार

अब आपने पढ़ लिया कि भारत के प्रत्येक नागरिक को संविधान में क्या-क्या अधिकार दिये गये हैं । लेकिन केवल किसी को अधिकारों के दे देने से काम नहीं चलता । उन अधिकारों की रक्षा का प्रबंध होना चाहिए । कोई भी सरकार ऐसा कानून बना सकती है, जिससे नागरिक के अधिकार छिन जाएँ या उनमें कुछ कमी हो जाए । इसलिए हमारे विधान में इन अधिकारों की रक्षा का भार देश के उच्चतम न्यायालय को सौंपा गया है । वह न्यायालय सरकार की ग़लती को पकड़ सकता है । वह सरकार के कामों से जनता की रक्षा कर सकता है ।

prose.indd 74 10-01-2019 10:48:42

अगर सरकार इन मूल अधिकारों को बदलने का कोई कानून बनाए, तो अदालत कह सकती है कि यह क़ानून संविधान के ख़िलाफ़ है । तब ऐसा कानून रद्द समझा जाएगा । कोई भी नागरिक उस अदालत में अपने मूल अधिकारों की रक्षा के लिए फ़रियाद कर सकता है । इस उच्चतम न्यायालय का निर्णय भारत की सभी अदालतों को मानना पड़ेगा और सरकार को भी उसे मानना पड़ेगा । इसलिए यह अदालत जनता के अधिकारों की रक्षक और पहरेदार है ।

ये मूल अधिकार जनता की पवित्र निधि है । इनकी रक्षा हमें सब तरह से करनी चाहिए । जो नागरिक अपने अधिकारों को समझता है और देश के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करता है, वही सच्चा नागरिक है । इसलिए हम सब लोगों को भारत के सच्चे नागरिक बनने का प्रयत्न करना चाहिए ।

I. प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिये ।

1. हमारे देश का असली नाम क्या है ?
2. हमारे देश में जनता की सरकार कब क़ायम हुई ?
3. भारत का संविधान किसे कहते हैं ?
4. हमारे संविधान के शुरू में क्या लिखा गया है ?
5. गणतंत्र राज्य किसे कहते हैं ?
6. मूल अधिकार किसे कहते हैं ?
7. अंग्रेजों के राज्य में लोगों को कौन-कौन से ख़िताब दिए जाते थे ?
8. सरकार किस तरह के कामों में कभी रुकावट नहीं डाल सकती ?
9. हकों की रक्षा के अधिकार की विशेषता क्या है ?
10. भारत का सच्चा नागरिक कौन है ?

II. सविस्तार उत्तर दीजिये :-

1. समता के अधिकार की विशेषताएँ लिखिए ।
2. स्वतंत्रता के अधिकार का महत्त्व समझाइए ।
3. धर्म-स्वातंत्रय के अधिकार का अर्थ क्या है ?
4. संस्कृति के अधिकार के बारे में लिखिए ।
5. हकों की रक्षा के अधिकार की विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए ।

prose.indd 75 10-01-2019 10:48:42

III. सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिये ।

1. यदि सरकार की सफाई ठीक नहीं हुई तो न्यायालय उस कैदी को रिहा कर सकता है ।
2. उन्हें शिक्षा भी नहीं मिल पाती ।
3. सरकार इस तरह के कामों में रुकावट नहीं डाल सकती ।
4. सार्वजनिक हित के लिए उसका लेना जरुरी हो तो उसका उचित मूल्य देकर ही ले सकती है ।

IV. वाक्यों में प्रयोग कीजिये ।

1. के मुताबिक	2. क़ायम होना	3. नियुक्त होना
4. सफाई देना	5. सज़ा पाना	6. के ख़िलाफ़
7. प्रयत्न करना	8. पालन करना	9. रिहा करना
10. फ़रियाद		

कठिन शब्दार्थ :

1. अधिकार – हक़
2. क़ायम होना – स्थापित होना
3. सफाई देना – स्पष्टीकरण देना
4. अवसर – सन्दर्भ, मौका
5. ख़िताब – उपाधि, सम्मान
6. रिहा करना – मुक्त करना
7. रुकावट – बाधा, अड़चन
8. फ़रियाद – शिकायत
9. कर्त्तव्य – फ़र्ज़

prose.indd 76 10-01-2019 10:48:42

गद्य

15 हमारी ताकत और जिम्मेदारियाँ

-पं. जवाहरलाल नेहरू



जवाहरलाल नेहरू (नवंबर १४, १८८९ - मई २७, १९६४) भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री थे और स्वतन्त्रता के पूर्व और पश्चात् की भारतीय राजनीति में केन्द्रीय व्यक्तित्व थे। महात्मा गांधी के संरक्षण में, वे भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के सर्वोच्च नेता के रूप में उभरे और उन्होंने १९४७ में भारत के एक स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप में स्थापना से लेकर १९६४ तक अपने निधन तक, भारत का शासन किया। वे आधुनिक भारतीय राष्ट्र-राज्य – एक सम्प्रभु, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, और लोकतान्त्रिक गणतन्त्र - के वास्तुकार मानें जाते हैं। कश्मीरी पण्डित समुदाय के साथ उनके मूल की वजह से वे पण्डित नेहरू भी बुलाएँ जाते थे, जबकि भारतीय बच्चे उन्हें चाचा नेहरू के रूप में जानते हैं। स्वतन्त्र भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री का पद सँभालने के लिए कांग्रेस द्वारा नेहरू निर्वाचित हुएँ, यद्यपि नेतृत्व का प्रश्न बहुत पहले 1941 में ही सुलझ चुका था, जब गांधीजी ने नेहरू को उनके राजनीतिक वारिस और उत्तराधिकारी के रूप में अभिस्वीकार किया। प्रधानमन्त्री के रूप में, वे भारत के सपने को साकार करने के लिए चल पड़े। भारत का संविधान 1950 में अधिनियमित हुआ, जिसके बाद उन्होंने आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक सुधारों के एक महत्त्वाकांक्षी योजना की शुरुआत की। मुख्यतः, एक बहुवचनी, बहु-दलीय लोकतन्त्र को पोषित करते हुएँ, उन्होंने भारत के एक उपनिवेश से गणराज्य में परिवर्तन होने का पर्यवेक्षण किया। विदेश नीति में, भारत को दक्षिण एशिया में एक क्षेत्रीय नायक के रूप में प्रदर्शित करते हुएँ, उन्होंने गैर-निरपेक्ष आन्दोलन में एक अग्रणी भूमिका निभाई। नेहरू के नेतृत्व में, कांग्रेस राष्ट्रीय और राज्य-स्तरीय चुनावों में प्रभुत्व दिखाते हुएँ और 1951, 1957, और 1962 के लगातार चुनाव जीतते हुएँ, एक सर्व-ग्रहण पार्टी के रूप में उभरी।

{ अगस्त सन् 1951 को दिल्ली के लाल किले से स्वतंत्रता-दिवस के अवसर पर दिये गये भाषण का एक अंश । }

prose.indd 77 10-01-2019 10:48:42

आज पाँचवी बार मैं यहाँ लाल किले की दीवार पर आया हूँ, इस प्यारे झंडे को फहराने के लिए । चार बरस हुए और मुनासिब था कि आप और हम उस मौके को मनाने के लिए यहाँ जमा हों, यहाँ इस लाल किले की दीवार पर या इसके क़रीब, क्योंकि इस किले की एक-एक ईंट और पत्थर और जैसे कि इस दिल्ली की एक-एक ईंट और पत्थर हिंदुस्तान की तारीखों से भरा है । इस शहर ने हिंदुस्तान की शान देखी और हिंदुस्तान का गिरना देखा, हिंदुस्तान का आगे बढ़ना देखा और उसका पतन देखा । दिल्ली की याद में दिल्ली की दिमाग में, ये सब पुरानी तस्वीरें हैं । तो इसलिए मुनासिब था कि इस वक़्त जब कि एक नयी करवट कौम ने ली, दिल्ली शहर और यह दिल्ली का लाल किला इन बातों को देखता और उससे इसका भी कोई सम्बन्ध किया जाता ।

आप और हम चार बरस हुए, यहाँ जमा हुए थे । इस शहर में और हिंदुस्तान के हर एक गाँव और शहर में ख़ुशी मनायी गयी थी, क्योंकि अपने बड़े सफ़र की एक मंजिल पर हम पहुँचे थे, जो हमारी पुरानी आरजू थी, जिसके लिए ज़द्दोज़हद की थी, जिसके लिए एक बड़े साम्राज्य के ख़िलाफ़ हमने मुक़ाबला किया । उसमें हमारी कामयाबी हुई और हम आख़िर में मंज़िल पर पहुँचे ।

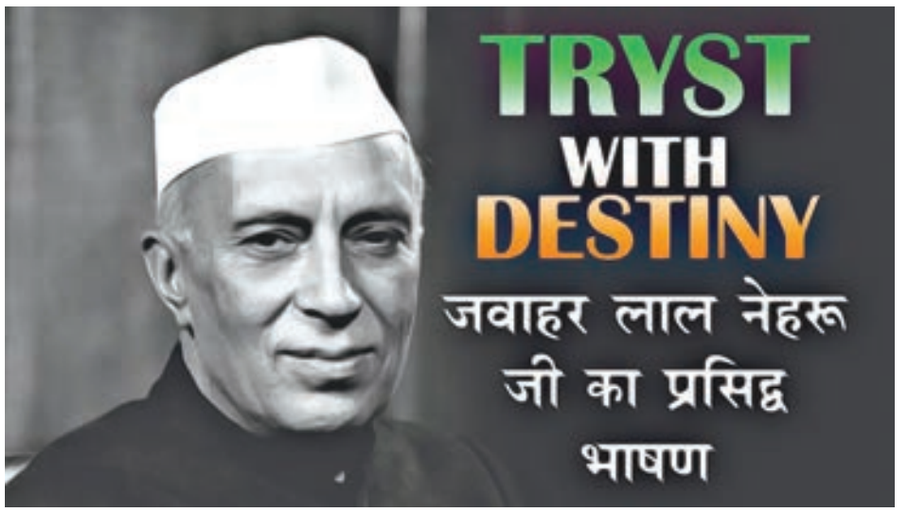

हमारी रूहानी ताकत

हमने आज़ादी हासिल की ; किस तरह से ? कौन-सी ताकत थी, जो हमने पैदा की ? वह ताकत थी एक रूहानी ताकत और एक दिल की ताक़त जो कि कभी दुश्मन के सामने झुकती नहीं थी , जो कि कोई भी मुसीबत आये, फिर भी उससे घबराती नहीं थी । यह ताक़त महात्माजी ने हमारे दिलों में डाली । हम तो मामूली आदमी थे, कमज़ोर दिल के, आपस में लड़नेवाले ;लेकिन उन्होंने यह सबक हमें सिखाया –अपने मिसाल से और अपने लफ़्ज़ों से, अपनी बात से कि हमें ऊँचे रास्ते पर, चलना है, हमें आपस में मिलकर रहना है,क्योंकि मिल्लत में ही ताकत होती है । हमें इस देश को ज़बर्दस्त, मज़बूत देश बनाना है । इसके चालीस करोड़ आदमी मिलकर एक तरफ देखते हैं, एक दूसरे की मदद करते हैं और अगर कोई दुश्मन हो तो उसका मुकाबला करते हैं । इस तरह से हमारी ताकत बढ़ी ।

prose.indd 78 10-01-2019 10:48:42

किसकी ताकत थी वह ? बड़े हथियार के नहीं, बल्कि हमारे करोड़ों आदमियों के दिलों की ताकत थी और दिलों का मेल था । अगर वह ताकत कम हो, तो कोई ऊपर की ताकत हमें बहुत दूर नहीं ले जाएगी ।

लोग समझते हैं कि हम आज़ाद हो गये, तो यह काम पूरा हुआ और फिर अब हम आपस में जो चाहे करें – चाहे हम आपस में लड़ाई भी लड़ें या और तरह से अपनी ताकत को ज्यादा करें । यह गलत बात है । याद रखिये, आज़ादी एक ऐसी चीज़ है कि जिस वक़्त गफ़लत में पड़े, यह फिसल जाएगी ।

आज की हालत

आज अजीब हालत है । मैंने देखा, पुराने ज़माने में अकसर बड़े जोरों से काम होते थे, मुकाबला होता था आज़ादी की लड़ाई में, और फिर मैं देखने लगा कि अकसर लोग जो पहले काम करते थे, अब उस काम की याद में आराम करते हैं । जहाँ काम के बजाय आराम ज्यादा हुआ, वहाँ कौम कमज़ोर हुई । हिम्मत के बजाय सुस्ती आ गयी, तो कौम कमजोर हुई । इसलिए ज़रा हमें बुनियादी बातों की तरफ देखना है ।

एक दिन सबेरे हमारे राष्ट्रपति राजघाट गये । मैं भी गया, कुछ और लोग भी गये । महज़ एक फ़र्ज अदा करने नहीं, बल्कि कुछ ताकत लेने अपने दिमाग और दिल को उस पुरानी याद से । यह तो हमेशा हरी रहती है । लेकिन फिर भी मुनासिब है कि हम उसको बार-बार अपने सामने लाएँ, उन उसूलों को, उस सबक को । तो मैं वहाँ गया और वह तस्वीर मेरे सामने आयी और वह लफ्ज़ मेरे कानों में गूँजे, जो बरसों हुए हम सुना करते थे और अब उनके सुनने से महरूम हो गये । वहाँ से यहाँ आपके सामने हाज़िर हुआ और मेरा ख्याल दौड़ा इस आजकल के हिंदुस्तान की हालत की तरफ कि हम सब, आप हम और इस मुल्क के रहनेवाले एक किश्ती पर हैं और किश्ती हिली, तो हम सब डूबे । यह न कोई समझे कि अगर मुल्क गिरे, तो कोई बच जाता है । अगर मुल्क आगे बढ़े, सब लोग आगे बढ़ते हैं । तो हमें यह समझना है कि हमारा नाता क्या है और रिश्ता क्या है । आपस में आप बहस करें, अलग-अलग दल और अलग-अलग पार्टी बनाएँ और चुनाव में जाएँ । लेकिन हमारा नाता और रिश्ता ज़बरदस्त और हर वक़्त का है । और खासकर इस वक़्त, जब कि दुनिया में ख़तरा और हमारे मुल्क में तरह-तरह के बाहरी और अंदरूनी खतरे हैं, तब और भी जरूरी हो जाता है कि हम अपनी छोटी-छोटी बातों को दबाएँ और गिराएँ और अपने को तगड़ा करें, मजबूत करें और आपस में एकता करें । याद रखिये, हम 40 करोड़ लोग हैं । ज़ाहिर है कि कोई 40 करोड़ हिंदुस्तान में फ़रिश्ते नहीं हैं । कमजोर दिल के हैं, डरपोक दिल के हैं । कई लोग ऐसे भी हैं कि जो मुल्क के साथ गद्दारी करें । सब तरह के लोग मुल्क में होते हैं । तो हमें इस बात से घबराना नहीं है । बाहर के मुल्कों से लोग आ सकते हैं झगड़ा-फ़साद करने, क्योंकि हर एक जानता है कि आखिर में ताक़त मुल्क में अमन और एकता क़ायम करने से होती है । लेकिन कुछ लोग तो बेवकूफ़ी से या अपनी ज़िहालत से, और कुछ लोग समझ-बूझकर झगड़ा पैदा करते हैं, ताकि मुल्क कमजोर हो ।

prose.indd 79 10-01-2019 10:48:42

असली लड़ाई

हमारे मुल्क के अन्दर काफ़ी बड़े-बड़े सवाल हैं । हमारी उम्मीदें थीं हमने तरह-तरह के नक़्शे बनाये थे । हमने एक काम पूरा किया, हिन्दुस्तान आज़ाद हुआ । इसके बाद दूसरी लड़ाई हमें लड़नी है और वह लड़ाई है असली लड़ाई हिंदुस्तान की गरीबी से लड़ाई, हिन्दुस्तान की बेकारी से लड़ाई और उसमें जीतें तो सारी कौम, 30-40 करोड़ आदमी, हिंदुस्तान के हलके-हलके उठेंगे और इनकी मुसीबतें कम होंगी । यह असली लड़ाई थी जो हम लड़ना चाहते थे ; लेकिन बदकिस्मती से आज़ादी आयी, सियासी आज़ादी आयी ; हम फँस गये किस-किस मुसीबत में, और उधर आगे न बढ़ सके । सबसे बड़े रंज की बात यह हुई कि जो आज़ादी का फायदा कौम को मिलना चाहिए था, कुछ मिला जरूर –इसमें कुछ शक नहीं, लेकिन पूरी तौर से नहीं मिला और काफ़ी परेशानियाँ आप लोगों को और हिंदुस्तान के रहने वालों को रहीं, इन्हें आप जानते हैं ।

आप शायद जानते हो कि अभी कुछ दिन हुए एक योजना – एक पंचवर्षीय योजना निकाली गयी है, जिसका मतलब यह है कि किस तरह से हम इस बड़ी लड़ाई को जीतें, यानी हिंदुस्तान की ग़रीबी के ख़िलाफ़ लड़ाई और बेकारी के ख़िलाफ़ लड़ाई ; किस तरह से हिन्दुस्तान में ज्यादा काम हो, ज्यादा पैदावार हो, ज्यादा धन और दौलत निकले, जो कि आम लोगों में जाए । बड़ा काम है, थोड़े-से आदमियों का नहीं, चालीस करोड़ आदमियों के लिए है ।

स्वाबलंबी बनें

आज लोग कहते हैं कि बाहर से मदद लेकर सारे काम को करो । हम बाहर से मदद लेने को तैयार हैं, बशर्ते कि उसमें किसी किस्म का कोई बंधन न हो, और बाहर की मदद कुछ-कुछ हमें मिलती भी है । लेकिन आप याद रखें कि बहुत ज्यादा बाहर की तरफ देखना, मदद के लिए भरोसा करना –चाहे पैसे के लिए या किसी और बात के लिए –कौम को कमजोर करना है । वह कौम अपाहिज़ हो जाती है जो दूसरों की तरफ देखती है । आपका सरकारी अफसरी की तरफ ही देखना कि हर बात गवर्नमेंट कर दे, वह भी गलत है । गवर्नमेंट का तो फर्ज है उन बातों का करना ; लेकिन यह पुराना रिवाज अंग्रेजी राज्य के ज़माने में था । अंग्रेजी राज्य के ज़माने में मशहूर था कि जो अंग्रेज अफ़सर थे उनके खुशामदी में लोग उनसे कहते थे कि आप मां-बाप हैं । खैर, अब कोई माँ-बाप यहाँ नहीं रहा है । मैं आपसे यह कह देता हूँ और हम नहीं चाहते कि हम लोगों का ध्यान हर वक़्त ऊपर रहे या दायें-बायें रहे कि कोई आदमी कुछ कर दे, या कोई हुकूमत या म्युनिसिपैलिटी । अगर हुकूमत या म्युनिसिपैलिटी, जो कुछ हो वह अपना फर्ज ठीक नहीं निभाती, तो आप आवाज़ उठाइये। ठीक है, आपका हक है । अपनी राय दीजिये, जो जाब्ते से है ।

पड़ोसी की नुक्ताचीनी तो सब कर सकते हैं, लेकिन जो बात आपके समझने की है, वह यह कि हम खुद क्या कर सकते हैं । हम बड़ी-बड़ी योजनाएँ बनाते हैं और योजनाओं में बेशुमार रुपया खर्च होता है । कहाँ से रुपया

prose.indd 80 10-01-2019 10:48:42

आए ? आखिर रुपया प देते हैं, टैक्स में । न आसमान से तो नहीं टपकता । अगर हम और मुल्कों से कर्जा लें, तो उस कर्ज का बोझ होता है, कर्ज अदा करना होता है । तो फिर कैसे हम ये बातें करें – बड़ी-बड़ी चीजें जो करनी है ? खैर, बहुत तरीके हैं, लेकिन एक बात है । अगर बड़ी-बड़ी बातों को छोड़कर एक- एक गाँव में और एक- एक शहर में एक-एक इंसान थोड़ी मेहनत भी करे, तो कुछ न कुछ होता है ।

मैं मिसाल आपको देता हूँ और तजुरबे से । अपने कई प्रदेशों में, प्रान्तों में खासकर देहातों में, हमने प्रोग्राम बनाया कि लोग अपनी मेहनत से सड़कें बनाएँ । सड़क बहुत कम है, आप जानते हैं । देहातों में मकान बनाएँ । पंचायत-घर-बनाएँ कहीं-कहीं छोटी नहरें खोदें । कहीं-कहीं छोटे स्कूल-विद्यालय बनाएँ । अपनी मेहनत से, यानी सरकारी तौर से नहीं । सरकारी तौर से उन्हें कुछ मदद मिल जाए ; यह न समझिये । कि यह कोई सरकारी चीज है । ऊपर से करने की तो है, लेकिन एक-एक आदमी की चीज़ है और सब लोग मिले, तो फिर हमें न बाहर के पैसे की जरूरत है, न मदद की ।

असली दौलत

याद रखिए कि पैसे की जो बड़ी चर्चा होती है, इससे हमारे दिमाग कुछ फिर गये हैं । बहुत ज्यादा दुकानदारी के दिमाग हो गये हैं और कुछ गलत समझने लगे हैं कि पैसा क्या चीज़ है । अफ़सोस यह है कि पैसा एक जरूरी चीज है आजकल की जिंदगी में, लेकिन आखिर में जो दौलत है इंसान के पास, वह उसकी मेहनत ; दिमाग की काबिलियत और हाथ-पैर की ताकत है । आप और हम अपनी मेहनत से दौलत पैदा करते हैं । इसलिए जो असली दौलत है वह इन्सान की मेहनत है ; तो इन्सान काफी है – तगड़े , काम करनेवाले । क्यों न हम उनके काम से और मेहनत से नयी दौलत पैदा करें, जो उनके पास जाए और मुल्क आगे बढ़े ? अमरीका एक देश है, बड़ा दौलतमंद देश है, लेकिन आप यह न भूलिये कि उसकी दौलत आती कहाँ से है । दौलत उसकी मेहनत से और काबिलियत से आती है कोई बाहर से नहीं टपक पड़ती है, क्योंकि आखिर में कोई देश अपनी मेहनत से, अपने बाहुबल से चल सकता है, औरों के बल से नहीं ।

इसलिए कभी-कभी मैं देखता हूँ हिंदुस्तान में, तो मुझे ख्याल आता है कि कुछ पुरानी गुलामी के तर्ज और ख्यालात हमसे दूर नहीं हुए और फिर हर वक़्त ऊपर देखते हैं, सरकार की तरफ कि वह कर दे और कुछ इंतज़ार करते हैं या नाराज होते हैं या अपने को बदकिस्मत समझकर बैठ जाते हैं । यह नहीं कि हमें और कुछ काम नहीं है, तो बजाय इसके कि दरवाज़े, दरवाज़े या दफ्तरों में टकरावें, हम फावड़ा लेकर खोदें और कुछ काम करें, अपना शरीर भी अच्छा करें, और कुछ पैदा भी करें उससे ।

मुश्किल तो यह है कि हर एक घर में ऐसे लोग हैं – अब चाहे पहले से कम हों, लेकिन अब भी काफी हैं – समझते हैं कि इज्ज़त एक बाबू होने में और बाबुओं के काम करने में है । खैर, बाबू लोग अच्छे होते है,

prose.indd 81 10-01-2019 10:48:42

यानि बाबू से मेरा मतलब है जो कि दफ्तरों में काम करें या बड़े अफ़सर हों या छोटे, सब एक तरह उस किस्म का काम करते हैं । वह जरूरी काम है । लेकिन मुल्क बढ़ता है हज़ार बातों से, हज़ार कामों से, न कि हर एक आदमी के कान पर कलम रखकर दफ़्तर में बैठकर काम करने से मुल्क में बहुत काफी काम है । लोग मिलकर करें खुद कुछ पैदा करें, बजाय इसके किहर एक आदमी नौकरी की तरफ देखे ।

आज के दिन खास तौर से हमें उन पुराने उसूलों को याद रखना है, जो महात्माजी ने हमारे सामने रखे – जिस रास्ते पर चलकर मुल्क को आज़ाद किया । आख़िर उस रास्ते को हम छोड़ दें, फिर क्या हमारा हशर होगा ? खैर, मुझे तो इतमीनान है कि हमारे लिए बुनियादी तौर से वही एक रास्ता है, जो गांधीजी ने दिखाया । उसपर हमें चलना है ।

शान्ति का प्रतीक : हमारा झण्डा

इस झण्डे के नीचे मैं खड़ा हूँ और आप भी इस झंडे को देख रहे है । यह एक प्यारा झंडा है और इसमें बहुत सारी बातें हैं । एक तो यह कि यह निशानी है आज़ादी की लड़ाई की । इसके नीचे खड़े होकर कितनी बार हमने प्रतिज्ञा ली, इकरार लिया कि हम उन उसूलों पर क़ायम रहेंगे, हम हिन्दुस्तान की हिफ़ाज़त करेंगे और आज़ाद रखेंगे, हम हिंदुस्तान में एकता करेंगे और मिलकर रहेंगे, कभी नीच बात नहीं करेंगे । यह हमने प्रतिज्ञा की । यह एक पुरानी निशानी है । यह याद दिलाती है हमारी आज़ादी की लड़ाई की और उसमें की कुर्बानियों की। उसी के साथ उसमें आजकल की निशानी है और आप देखें कि पुराना जो झंडा था, उसको हमने रखा और उसमें थोडा-सा फर्क भी कर दिया । वह फर्क क्या था ? इसके बीच में एक चक्र आ गया । और उस चक्र ने आकर क्या किया ? सारे हिन्दुस्तान के पिछले हज़ार वर्ष की तारीख को इस झंडे में लाकर रख दिया, क्योंकि यह चक्र हिन्दुस्तान की हज़ारों वर्ष पुरानी निशानी है । हिंदुस्तान की लड़ने की नहीं बल्कि हिन्दुस्तान के शांति – प्रिय होने की, अमन- पसंद होने की यह निशानी है । हिंदुस्तान के लोग हमेशा इसे याद रखें, और सच्चाई और धर्म के रास्ते पर चलें । यह निशानी पुरानी है अशोक के पहले की, लेकिन सम्राट अशोक के नाम से खास तौर से बँधी है ।

इसके इस झंडे में रखने से हमारी हजारों बरस की तारीख इस झंडे से बंध गयी, और उन हजारों बरसों से जो हमारा सामूहिक ध्येय था, जिस तरफ हिंदुस्तान के ऊँचे लोगों की निगाहें थीं, वे बातें इसमें आ गयीं । तो इसमें पुराना ज़माना आया, हजारों बरस का, इसमें पिछला ज़माना आया, चालीस –पचास बरस का, आज़ादी की लड़ाई का और इसमें आया और आखिर इसमें आनेवाला कल आया, जो हमें दिखाता है कि हम किधर जाएँगे । पुराना ज़माना हुआ । उससे हम सबक सीखें । उसकी अच्छी बातें याद रखें, लेकिन आखिर में हमारी निगाहें आगे होनी है भविष्य की तरफ होनी है । जो आनेवाला ज़माना है, उसके लिए हमें तैयार होना है, तगड़ा होना है, मजबूत होना है, और जो –जो तकलीफें –मुसीबतें आएँ उनसे हिम्मत हारें नहीं, बल्कि उनका मजबूती से सामना करना है ।

prose.indd 82 10-01-2019 10:48:42

हिंदुस्तान का ज़बर्दस्त भविष्य

मुझे इतमीनान है कि हिंदुस्तान का भविष्य एक ज़बर्दस्त भविष्य है, इस माने में नहीं कि हम और मुल्कों को फ़तह करें और हराएँ। वह ज़माने गये मुल्कों के लिए और जो कोई बड़े से बड़ा मुल्क दूसरे मुल्क को दबाना चाहे और अपनी हुकूमत में लाना चाहे, वह आजकल के ज़माने में बदनाम होता है और आखिर में उसे हार माननी होती है । इसलिए हममें बड़प्पन यह यह नहीं है कि हम और कौमों को दबाएँ । बड़प्पन यह है कि हम अपने मुल्क को ऊँचा करें और कौमों से दोस्ती करें, अपना फ़ायदा करें और दुनिया का फायदा करें । इस रास्ते पर हमें चलना है और इस नाज़ुक मौके पर हमें हर बात के लिए तैयार रहना है । आप सबको उसमें मिलकर आगे बढ़ना है, क्योंकि हम सब हम सफ़र हैं । एक यात्रा पर हमें आगे बढ़ना है और अगर हम रास्ते में एक-दूसरे से लड़ें तो आगे कैसे बढ़ सकते हैं।

जय हिन्द !

I. संक्षिप्त उत्तर दीजिये ।

1. पं. जवाहरलाल नेहरु लाल किले की दीवार पर क्यों आये हैं ?
2. लाल किले के बारे में नेहरु ने क्या भाषण दिया ?
3. नेहरु जी ने "हमारी ताकत और जिम्मेदारियाँ" के बारे में क्या कहा ?
4. देश भर में क्यों खुशियाँ मनाई गई ?
5. हमने आज़ादी किस तरह से हासिल की ?
6. गाँधीजी ने हमें क्या सिखाया ?
7. हमारी ताकत कैसे बढ़ी ?
8. नेहरु के अनुसार आज़ादी कब फिसल जाएगी ?
9. आज़ादी के बाद लोगों का मनोभाव कैसे बदला ?
10. नेहरु ने क्यों कहा कि 40 करोड़ हिन्दुस्तानी में सब के सब फ़रिश्ते नहीं हैं ?
11. नेहरु ने क्यों कहा कि हमें दूसरी लड़ाई लड़नी हैं ?
12. नेहरुजी ने क्यों कहा कि बदकिस्मती से आज़ादी आयी ?
13. पंचवर्षीय योजना क्यों बनाई गई ?
14. नेहरु ने विदेशों से कर्जा लेने को रोकने के लिए कौन-सी सलाह दी है ?

prose.indd 83 10-01-2019 10:48:43

15. इंसान के पास कौन-सी असली दौलत है ?

16. नेहरु ने क्यों कहा कि हमारा दिमाग दुकानदारी का दिमाग हो गया है ?

17. दौलत मनुष्य को कैसे प्राप्त होती है ?

18. नेहरु जी ने कैसे समझाया है कि हर एक आदमी नौकरी की तरफ न देखे ?

19. राष्ट्रीय झंडा कैसी निशानी है ?

20. राष्ट्रीय झंडे में चक्र का महत्व क्या है ?

21. हमारा बड़प्पन किसमें है ?

II. विस्तृत उत्तर दीजिये :-

1. नेहरु जी ने अपने भाषण में ताकत को बनाये रखने के लिए क्या सन्देश दिया है ?

2. हमें धनी बनने के लिए क्या-क्या करना चाहिए ?

3. आज़ादी के बाद की हालत का नेहरु ने कैसे वर्णन किया ?

III. सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिये :-

1. उसमें हमें कामयाबी हुई औरे हम आखिर में मंजिल पर पहुँचे ।

2. अगर वह ताकत कम हो तो कोई ऊपर की ताकत हमें बहुत दूर नहीं ले जाएगी ।

3. आज़ादी एक ऐसी चीज है कि जिस वक्त गफ़लत में पड़े, यह फिसल जाएगी ।

4. यह न कोई समझे कि अगर मुल्क गिरे, तो कोई बच जाता है ।

5. बड़ा काम है, थोड़े-से आदमियों का नहीं, चालीस करोड़ आदमियों के लिए है ।

6. सब लोग मिले, तो फिर हमें न बाहर के पैसे की ज़रुरत है, न मदद की ।

7. एक यात्रा पर हमें आगे बढ़ना है और अगर हम रास्ते में एक-दूसरे से लड़ें तो आगे कैसे बढ़ सकते हैं ?

IV. वाक्यों में प्रयोग कीजिये :-

1. तारीख – इतिहास, दिनांक
2. आरज़ू – इच्छा, चाह
3. ज़द्दोजहद – संघर्ष
4. रूहानी – आत्मिक
5. मिसाल – उदाहरण
6. लफ्ज – शब्द

prose.indd 84 10-01-2019 10:48:43

7. मिल्लत – एकता, मेल

8. जाया करना – नष्ट करना

9. गफ़लत – असावधानी

10. बुनियादी – मूल

11. महज – सिर्फ

12. फ़र्ज़ – कर्तव्य

13. उसूल – सिद्धांत

14. महरूम – वंचित

15. किश्ती – नाव

16. अंदरूनी – भीतरी

17. तगड़ा – मज़बूत

18. फ़रिश्ता – देवदूत

19. गद्दारी – विश्वासघात

20. अमन – शांति

21. जिलाहत – अज्ञान

22. सियासी – राजनैतिक

23. बाज़ – कोई-कोई

24. बशर्ते कि – इस शार्ट के साथ कि

25. अपाहिज़ – अंगहीन

26. जाब्ते से – फायदे से

27. नुक्ता चीनी – टीका-टिप्पणी

28. बेशुमार – असंख्य

29. तजुर्बा – अनुभव

30. काबिलियत – योग्यता

31. दौलतमंद – सम्पत्तिवान

32. फावड़ा – कुदाली

33. इकरार करना – प्रतिज्ञा करना

34. फ़तह करना – जीतना

prose.indd 85 10-01-2019 10:48:43

कहानी 16

आकाश-दीप

-जयशंकर 'प्रसाद'



जयशंकर प्रसाद (30 जनवरी 1890 - 15 नवम्बर 1937)[1][2], हिन्दी कवि, नाटककार, कहानीकार, उपन्यासकार तथा निबन्धकार थे। वे हिन्दी के छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक हैं। उन्होंने हिंदी काव्य में एक तरह से छायावाद की स्थापना की जिसके द्वारा खड़ी बोली के काव्य में न केवल कमनीय माधुर्य की रससिद्ध धारा प्रवाहित हुई, बल्कि जीवन के सूक्ष्म एवं व्यापक आयामों के चित्रण की शक्ति भी संचित हुई और कामायनी तक पहुँचकर वह काव्य प्रेरक शक्तिकाव्य के रूप में भी प्रतिष्ठित हो गया। बाद के प्रगतिशील एवं नयी कविता दोनों धाराओं के प्रमुख आलोचकों ने उसकी इस शक्तिमत्ता को स्वीकृति दी। इसका एक अतिरिक्त प्रभाव यह भी हुआ कि खड़ीबोली हिन्दी काव्य की निर्विवाद सिद्ध भाषा बन गयी।

उन्हें 'कामायनी' पर मंगलाप्रसाद पारितोषिक प्राप्त हुआ था। उन्होंने जीवन में कभी साहित्य को अर्जन का माध्यम नहीं बनाया, अपितु वे साधना समझकर ही साहित्य की रचना करते रहे। कुल मिलाकर ऐसी बहुआयामी प्रतिभा का साहित्यकार हिंदी में कम ही मिलेगा जिसने साहित्य के सभी अंगों को अपनी कृतियों से न केवल समृद्ध किया हो, बल्कि उन सभी विधाओं में काफी ऊँचा स्थान भी रखता हो।

युगप्रवर्तक महाकवि स्वर्गीय जयशंकर प्रसाद की प्रतिभा चतुर्मुखी थी। कविता, नाटक, कहानी, निबंध आदि साहित्य के सभी अंगों को उन्होंने समृद्ध किया। कथा-साहित्य के क्षेत्र में प्रेमचंद की तरह ही उनका अपना स्कूल है और नाटककार तो वह सर्वश्रेष्ठ माने जाते ही हैं। प्रसादजी की कहानियों भावात्मक होती है और उनमें अतीत-वैभव की गरिमा विशेष रूप से पायी जाती है। कल्पना की प्रचुरता और संस्कृत-शब्दावली की बहुलता उनकी रचनाओं को क्लिष्ट नहीं बनाती, वरन् उन्हें विशिष्ट सौन्दर्य प्रदान करती है।

story.indd 86 10-01-2019 10:50:27

आकाश-दीप प्रसादजी की श्रेष्ठतम कहानियों में से है। इसका कथानक भारत के उस गौरवमय अतीत से संबंधित है, तब कि यहाँ के नाविक सागर की छाती को चीरकर बाली, जावा, सुमात्रा आदि द्वीपों में जा पहुँचे थे। कर्तव्य और प्रेम का द्वन्द दिखाते हुए लेखक ने उसी युग की काल्पनिक एवं भव्य चित्र हमारे सामने उपस्थित किया है।

बंदी"

"क्या है सोने दो।"

"मुक्त होना चाहते हो?"

"अभी नहीं, निद्रा खुलने पर। चुप रहो।"

"फिर अवसर न मिलेगा।"

"बड़ा शीत है, कहीं से एक कंबल डालकर कोई शीत से मुक्त करता!"

"आँधी आने की संभावना है। यही अवसर है। आज मेरे बंधन शिथिल हैं।"

"तो क्या तुम भी बंदी हो?"

"हाँ, धीरे बोलो, इस नाव पर केवल दस नाविक और प्रहरी हैं।"

"शस्त्र मिलेगा?"

"मिल जाएगा। पोत संबद्ध रज्जु काट सकोगे?"

"हाँ।"

समुद्र में हिलोरें उठने लगीं। दोनों बन्दी आपस में टकराने लगे। पहले बन्दी ने अपने को स्वतंत्र कर लिया। दूसरे का बंधन खोलने का प्रयत्न करने लगा। लहरों के धक्के एक-दूसरे को स्पर्श से पुलकित कर रहे थे। मुक्ति को आशा-स्नेह का असम्भावित आलिंगन। दोनों ही अंधकार में मुक्त हो गये। पहले बन्दी ने हर्षातिरेक से दूसरे को गले से लगा लिया। सहसा उस बन्दी ने कहा, "यह क्या? तुम स्त्री हो?"

"क्या स्त्री होना कोई पाप है?" अपने को अलग करते हुए स्त्री ने कहा।

"शस्त्र कहाँ हैं? तुम्हारा नाम?"

"चम्पा"

story.indd 87 10-01-2019 10:50:27

तारक खचित लीन अम्बर और नील समुद्र अवकाश में पवन ऊधम मचा रहा था। अंधकार से मिलकर पवन दुष्ट हो रहा था। समुद्र आंदोलित था। नौका लहरों में विफल थी। स्त्री सतर्कता से लुढ़कने लगी। एक मतवाले नाविक के शरीर के टकराती हुई सावधानी से उसका कृपाण निकालकर फिर ढुलकते हुए बन्दी के समीप पहुँची गयी। सहसा पोत के पथ-प्रदर्शक ने चिल्लाकर हुए कहा,"आँधी!"

घंटा बजने लगा। सब सावधान होने लगे। बंदी युवक उसी तरह पड़ा रहा। किसी ने रस्सी पकड़ी, कोई पाल खोल रहा था। पर युवक बन्दी ढुलकते हुए बन्दी उस रज्जु के पास पहुँचा जो पोत से संलग्न थी। तारे ढँक गये, तरंगें उद्वेलित हुई, समुद्र गरजने लगा। भीषण आँधी पिशाचिनी के समान नाव को अपने हाथों में लेकर कन्दुक-क्रीड़ा और अट्टहास करने लगी।

एक झटके के साथ ही नाव स्वतंत्र थी। उस संकट में दोनों बन्दी खिलखिलाकर हँस पड़े। आँधी के हाहाकार में उसे कोई न सुन सका।

(2)

अनन्त जलनिधि में उषा का आलोक फूट उठा। सुनहली किरणों और लहरों की कोमल सृष्टि मुस्कुराने लगी। सागर शांत था। नाविकों ने देखा पोत का पता नहीं, बन्दीमुक्त है। नायक ने कहा, 'बुद्धगुप्त! तुमको मुक्त किसने किया?" कृपाण दिखाकर बुद्धगुप्त ने कहा, 'इसने।'

नायक ने कहा, "तो तुम्हें फिर बन्दी बनाऊँगा।"

"किसलिए! पोताध्यक्ष मणिभद्र अतल जल में होगा। नायक! अब नौका का स्वामी मैं हूँ!"

"तुम !जलदस्यु बुद्धगुप्त! कदापि नहीं।" चौंककर नायक ने कहा और अपनी कृपाण टटोलने लगा।! चंपा ने इसके पहले उस पर अधिकार कर लिया था। वह क्रोध से उछल पड़ा।

"तो तुम द्वन्द्व युद्ध के लिए प्रस्तुत हो जाओ। जो विजयी होगा वही स्वामी होगा!" इतना कह बुद्धगुप्त ने कृपाण देने का संकेत किया। चम्पा ने कृपाण नायक के हाथ में दे दिया।

भीषण घात-प्रतिघात आरंभ हुआ। दोनों कुशल, दोनों त्वरित-गतिवाले थे। बड़ी निपुणता से बुद्धगुप्त ने अपना कृपाण दाँतों से पकड़कर अपने दोनों हाथ स्वतंत्र कर लिये। चम्पा भय और विस्मय से देखने लगी। नाविक प्रसन्न हो गये। परंतु बुद्धगुप्त ने लाघव से नायक का कृपाण वाला हाथ पकड़ लिया और विकट हुँकार से दूसरा हाथ कटि में डाल उसे गिरा दिया। दूसरे ही क्षण प्रभात की किरणों में बुद्धगुप्त का विजयी कृपाण उसके हाथों में चमक उठा। नायक की कातर आँखें प्राणभिक्षा माँगने लगीं।

बुद्धगुप्त ने कहा, "बोलो, अब स्वीकार है कि नहीं?"

story.indd 88 10-01-2019 10:50:27

"मैं अनुचर हूँ, वरुणदेव की शपथ, मैं विश्वासघात न करूँगा।"

बुद्धगुप्त ने उसे छोड़ दिया। चंपा ने युवक जलदस्यु के समीप आकर उसके क्षतों को अपनी स्निग्धदृष्टि और कोमल करों से वेदना-विहीन कर दिया। बुद्धगुप्त के सुगठित शरीर पर रक्त बिंदु विजय-तिलक कर रहे थे।

विश्राम लेकर बुद्धगुप्त ने पूछा,"हम लोग कहाँ होंगे?"

"बालीद्वीप से बहुत दूर; सम्भवत: एक नवीन दीप के पास जिसमें अभी लोगों का बहुत कम आना-जाना होता है। सिंहल के वणिकों का वहाँ प्रधान्य है"

"कितने दिनों में हम लोग वहाँ पहुँचेंगे?"

"अनुकूल पवन मिलने पर दो दिन में। तब तक के लिए खाद्य का अभाव न होगा।"

सहसा नायक ने नागरिकों को दाँत लगाने की आज्ञा दी और पतवार पकड़कर बैठ गया। बुधगुप्त के पूछने पर उसने कहा,"यहाँ एक जलमग्न शैलखण्ड है! सावधान न रहने से नाव के टकराने का भय है।"

(3)

"तुम्हें उन लोगों ने बन्दी क्यों बनाया?"

"वणिक मणिभद्र की पाप वासना से।"

"तुम्हारा घर कहाँ हैं?"

"जाह्नवी के तट पर। चम्पा नगरी की एक क्षत्रिय बालिका हूँ। पिताजी इसी मणिभद्र के यहाँ प्रहरी का काम करते थे। माता का देहावसान हो जाने पर मैं भी पिताजी के साथ नाव पर ही रहने लगी। आठ बरस से समुद्र ही मेरा घर है। तुम्हारे आक्रमण के समय मेरे पिताजी ने सात दस्युओं को मारकर जल-समाधि ली। एक मास हुआ, मैं इस नील नभ के नीचे, नील जलनिधि के ऊपर, एक भयानक अनन्तता में निस्सहाय हूँ, अनाथ हूँ। मणिभद्र ने मुझसे एक दिन घृणित प्रस्ताव किया। मैंने उसे गालियाँ सुनायीं। उसी दिन से बन्दी बना दी गयी।" चम्पा रोष से जल रही थी।

"मैं भी ताम्रलिप्ति का एक क्षत्रिय हूँ चंपा! परन्तु दुर्भाग्य से जलदस्यु बनकर जीवन बिताता हूँ। अब तुम क्या करोगी?" "मैं अपने अदृष्ट को अनिर्दिष्ट ही रहने दूँगी। वह जहाँ ले जाए।"

चंपा की आँखें निस्सीम प्रदेश में निरुद्देश्य थीं। उनमें किसी आकांक्षा के लाल डोर न थे। धवल अपांग में बालकों के सदृश विश्वास था। हत्या-व्यवसायी दस्यु भी उसे देखकर काँप गया। उसके मन में एक सम्भ्रमपूर्ण श्रद्धा यौवन की पहली लहरी को जगाने लगी। समुद्र- वक्ष पर विलंबमयी राग-रंजिन संध्या थिरकने लगी। चंपा के असंयत कुंतल उसकी पीठ पर बिखरे थे। दुर्दांत दस्यु ने देखा, अपनी महिमा में अलौकिक एक वरुण बालिका। वह विस्मय

story.indd 89 10-01-2019 10:50:27

से अपने हृदय को टटोलने लगा। उसे एक नयी वस्तु का पता चला। वह थी कोमलता। उसी समय नायक ने कहा, "हम लोग द्वीप पहुँच गये।"

बेला से नाव टकरायी। चंपा निर्भीकता से कूद पड़ी। माँझी भी उतरे। बुद्धगुप्त ने कहा, "जब इसका कोई नाम नहीं है तो हम लोग इसे चंपाद्वीप कहेंगे।" चंपा हँस पड़ी।

(4)

पाँच बरस बाद -

शरद के धवल नक्षत्र नील गगन में झलमला रहे थे। चंद की उज्जवल विजय पर अंतरिक्ष में शरद लक्ष्मी ने आशीर्वाद के फूलों और खीलों को बिखेर दिया।

चंपाद्वीप के एक उच्च सौध पर बैठी हुई तरुणी चंपा दीपक जला रही थी। बड़े यत्न से अभ्रक की मंजूषा में दीप धरकर उसने अपनी सुकुमार उँगलियों से डोरी खींची। वह दीपाधार ऊपर चढ़ने लगा। भोली-भाली आँखें उसे ऊपर चढ़ते बड़े हर्ष से देख रही थी। डोरी धीरे-धीरे खींची गयी। चंपा की कामना थी कि उसका आकाश-दीप नक्षत्रों से हिलमिल जाए, किंतु वैसा होना असंभव था। उसने आशा भरी आँखें फिरा लीं।

सामने जलराशि का रजत श्रृंगार था। वरुण बालिकाओं के लिए लहरों से हीरे और नीलम की क्रीड़ा-शैलमालाएँ बन रही थी और वे मायाविनी छलनाएँ अपनी हँसी का कलनाद छोड़कर छिप जाती थीं। दूर-दूर से धीवरों की वंशी की झंकार उनके संगीत-सा मुखरित होता था। चंपा ने देखा की तरंग-संकुल जलराशि में उसके कंदील का प्रतिबिंब अस्त व्यस्त था। वह अपनी पूर्णता के लिए सैकड़ों चक्कर काटता था। वह अनमनी होकर उठ खड़ी हुई। किसी को पास न देखकर पुकारा, "जया"

एक श्यामा युवती सामने आकर खड़ी हुई, वह जंगली थी। नील नभोमंडल-से मुख में शुभ्र नक्षत्रों की पंक्ति के समान उसके दाँत हँसते ही रहते। वह चम्पा को रानी कहती। बुद्धगुप्त की आज्ञा थी।

"महानाविक कब तक आएँगे, बाहर पूछो तो"। चंपा ने कहा। जया चली गयी। दूरागत पवन चंपा के आंचल में विश्राम लेना चाहता था। उसके हृदय में गुदगुदी हो रही थी। आज न जाने वह क्यों बेसुध थी। एक दीर्घकाय दृढ़ पुरुष ने उसकी पीठ पर हाथ रखकर उसे चमत्कृत कर दिया। उसने फिरकर कहा, "बुद्धगुप्त"

बावली हो क्या? यहाँ बैठी हुई अभी तक दीप जला रही हो, तुम्हें यह काम करना है?"

"क्षीरनिधिशायी अनन्त की प्रसन्नता के लिए क्या दासियों से आकाश-दीप जलवाऊँ?"

हँसी आती है। तुम किसको दीप जलाकर पथ दिखलाना चाहती हो? उसको, जिसको तुमने भगवान मान लिया है?" "हाँ, वह भी कभी भटकते हैं, भूलते हैं। नहीं तो बुद्धगुप्त को इतना ऐश्वर्य क्यों देते ?"

story.indd 90 10-01-2019 10:50:27

"तो बुरा क्या हुआ, इस द्वीप की अधिश्वरी चंपा रानी?"

"मुझे इस बंदीगृह से मुक्त करो। अब तो बोली, जावा और सुमित्रा का वाणिज्य केवल तुम्हारे ही अधिकार में है महानाविक! परंतु मुझे उन दिनों की स्मृति सुहावनी लगती है जब तुम्हारे पास एक ही नाव थी और चंपा के उपकूल में पण्य लादकर हमलोग सुखी जीवन बिताते थे। इस जल में अगणित बार हम लोगों की तरी आलोकमय प्रभाव में तारिका ओं की मधुर ज्योति में थिरकती थी। बुद्धगुप्त! उस विजन अनंत में जब माँझी सो जाते थे। दीपक बुझ जाते थे, हम तुम परिश्रम से थक कर पालों में शरीर लपेटकर एक दूसरे का मुँह क्यों देखते थे।वह नक्षत्रों की मधुर छाया.....।"

" तो चंपा अब उससे भी अच्छी ढंग से हम लोग विचर सकते हैं । तुम मेरी प्राणदात्री हो, मेरी सर्वस्व है।

"नहीं, नहीं तुमने दस्युवृत्ति छोड़ दी, परंतु हृदय वैसा ही अकरुण, संतृष्ण और ज्वलनशील है। तुम भगवान के नाम पर हँसी उड़ाते हो। मेरे आकाश-दीप पर व्यंग्य कर रहे हो। नाविक उस प्रचंड आँधी में प्रकाश की एक-एक किरण के लिए हम लोग कितने व्याकुल थे! मुझे स्मरण है, जब मैं छोटी थी, मेरे पिता नौका पर समुद्र में जाते थे। मेरी माता मिट्टी का दीपक, बाँस की पिटारी में जलाकर भागीरथी के तट पर बाँस के साथ ऊँचे टाँग देती थी। उस समय वह प्रार्थना करती - "भगवान! मेरे पथ भ्रष्ट नाविक को अंधकार में ठीक पथ पर ले चलना। और जब मेरे पिता बरसों बाद घर लौटते,तो कहते - "साधवी!तेरी....

प्रार्थना से भगवान ने भयानक संकटों में मेरी रक्षा की है। वह गदगद हो जाती। मेरी माँ....आह, नाविक!! यह उसी की पुण्य स्मृति है। मेरे पिता, वीर पिता की मृत्यु के निष्ठुर कारण जलदस्यु ! हट जाओ। सहसा चम्पा का मुख क्रोध से भीषण होकर रंग बदलने लगा।महानाविक ने यह रुप न देखा था। वह ठठाकर हँस पड़ा।" "यह क्या चम्पा ? तुम अस्वस्थ हो जाओगी, सो रहो।" कहता हुआ चला गया। चंपा मुट्ठी बाँधे उन्मादिनी-सी घूमती रही।

(5)

समुद्र के निर्जन उपकूल में बेला से टकराकर लहरें बिखर जाती हैं। पश्चिम का पथिक थक गया था। उसका मुख पीला पड़ गया। अपनी शांत गंभीर हलचल में जलनिधि विचार में निमग्न था। वह जैसे प्रकाश की उन मलिन किरणों से विरक्त था।

चंपा और जया धीरे-धीरे उस तट पर आकर खड़ी हो गयीं। तरंग से उठते हुए पवन ने उनके वसन को अस्त-व्यस्त कर दिया। जया के संकेत से एक छोटी-सी नौका आई, दोनों के उस पर बैठते ही नाविक उतर गया।जया नाव खेने लगी। चम्पा मुग्ध सी समुद्र के उदास वातावरण में अपने को मिश्रित कर देना चाहती थी। "इतना जल! इतनी शीतलता!!हृदय की प्यास न बुझी। पी सकूँगी? नहीं!तो जैसे बेला से चोट खाकर सिंधु चिल्ला उठता है, उसी के समान रोदन करूँ या जलते हुए उस स्वर्ण गोल के सदृश्य अनंत जल में डूब कर बुझ जाऊँ ?" चंपा के देखते -देखते बीड़ा

story.indd 91 10-01-2019 10:50:27

और ज्वलन से आश्वत बिंब धीरे-धीरे सिंधु में चौथाई, आधा फिर संपूर्ण विलीन हो गया। एक दीर्घ निःश्वास लेकर चंपा ने मुँह फिरा लिया। देखा तो महानाविक का बजरा उसके पास है। बुद्धगुप्त ने झुककर हाथ बढ़ाया। चम्पा उसके सहारे बजरे पर चढ़ गई। दोनों पास बैठ गए। "इतनी छोटी नाव पर इधर घूमना ठीक नहीं। पास ही वह जलमग्न शैलखण्ड है। कहीं नाव टकरा जाती या ऊपर चढ़ जाती, चम्पा, तो?"

अच्छा होता बुद्धगुप्त! जल में बन्दी होना कठोर प्राचीरों से तो अच्छा है।

आह, चंपा ! तुम कितनी निर्दय हो। बुद्ध को आज्ञा दे कर देखो तो, वह क्या नहीं कर सकते?"जो तुम्हारे लिए नये द्वीप की सृष्टि कर सकता है, नयी प्रजा खोज सकता है, जो तुम्हारे लिए नये राज्य बना सकता है, उसकी परीक्षा ले कर देखो तो..... कहो चंपा , वह कृपाण से अपना हृदय पिण्ड निकाल अपने हाथों अतल जल में विसर्जन कर दे। "महा नाविक जिसके नाम से बाली, जावा और चंपा का आकाश गूँजता था, थर्राता था, घुटनों के बल चंपा के सामने छलछलायी आँखों से बैठा था।

सामने शैलमाला की चोटी पर, हरियाली में, विस्तृत जल प्रदेश में नील-पिंगल संध्या प्रकृति की एक सुहृदय कल्पना विश्राम की शीतल छाया स्वप्नलोक का सृजन करने लगी। उस मोहिनी के रहस्य पूर्ण नील जाल का कुहक स्फुट हो उठा। जैसे मदिरा से सारा अंतरिक्ष सिक्त हो गया। सृष्टि नील कमलों से भर उठी। उस सौरभ से पागल चंपा ने बुद्धगुप्त के दोनों हाथ पकड़ लिए। वहाँ एक आलिंगन हुआ, जैसे क्षितिज में आकाश और सिन्धु-वीचि का। किंतु उस परिदृश्य में सहसा चैतन्य होकर चंपा ने अपनी कंचुकी से एक कृपाण निकाल लिया।

" बुद्धगुप्त। आज मैं अपना प्रतिशोध का कृपाण अतल जल में डुबो देती हूँ । हृदय ने छल किया, बार-बार धोखा दिया।" चमककर वह कृपाण समुद्र का हृदय वेधता हुआ विलीन हो गया।

" तो आज से मैं विश्वास करूँ. मैं क्षमा कर दिया गया?" आश्चर्यकम्पित कण्ठ से महानायक ने पूछा।

" विश्वास कदापि नहीं, बुद्धगुप्त ! जब मैं अपने हृदय पर विश्वास नहीं कर सकी, उसी ने धोखा दिया, तब मैं कैसे कहूँ ? मैं तुम्हें घृणा करती हूँ, फिर भी तुम्हारे लिए मर सकती हूँ । अंधेर है जलदस्यु! तुम्हें प्यार करती हूँ ।" चंपा रो पड़ी। वह सपनों की रंगीन संध्या तुमसे अपनी आँखें बंद करने लगी थीं दीर्घ निःश्वास लेकर महानाविक ने कहा, "इस जीवन की पुण्यतम घड़ी की स्मृति में एक प्रकाश-गृह बनाऊँगा चंपा। यहीं उस पहाड़ी पर। संभव है कि मेरे जीवन की धुँधली संध्या उससे आलोक पूर्ण हो जाए ।"

(6)

चंपा के दूसरे भाग में मनोरम शैलमाला थी। बहुत देर तक सिंधु जल में निमग्न थी। सागर का चंचल जल उस पर उछलता हुआ उसे छिपाया था। आज उसी शैलमाला पर चंपा के आदिनिवासियों का समारोह था।उन सबों ने चंपा को वनदेवी-सा सजाया था ।ताम्रलिपि के बहुत से सैनिकों और नाविकों की श्रेणी में वन -कुसुम-विभूषिता चम्पा शिबिकारूढ होकर जा रही है।

story.indd 92 10-01-2019 10:50:27

शैल के एक ऊँचे शिखर पर चंपा के नाविकों को सावधान करने के लिए सुदृढ़ दीप- स्तंभ बनवाया गया था। आज उसी का महोत्सव है। बुद्धगुप्त स्तंभ के द्वार पर खड़ा था। शिविका की सहायता देकर चंपा को उसने उतारा। दोनों ने भीतर पदार्पण किया था और बाँसुरी और ढोल बजने लगे। पंक्तियों में कुसुम-भूषण से सजी बन-बालाएँ फूल उछालती हुई नाचने लगीं। दीपस्तंभ के ऊपर खिड़की से बाहर देखती हुई चंपा ने जया से पूछा, "यह क्या है जया ? इतनी बालिकाएँ कहाँ से बटोर लाई"।

"आज रानी का ब्याह है न?" कहकर जया ने हँस दिया।

बुद्धगुप्त विस्तृत जलनिधि की ओर देख रहा था। उसे झकझोड़ कर चंपा ने पूछा, "क्या यह सच है?"

" यदि तुम्हारी इच्छा हो तो यह भी हो सकता है चंपा! कितने वर्षों से मैं ज्वालामुखी को अपनी छाती में दबाए हूँ। "

" चुप रहो महानाविक ! क्या मुझे निस्सहाय और कंगाल जानकर तुमने आज प्रतिशोध लेना चाहा?"

"तुम्हारे पिता का घातक मैं नहीं हूँ चम्पा !वह एक दूसरे दस्यु के शस्त्र से मरे ।"

"यदि मैं इसका विश्वास कर सकती ! बुद्धगुप्त ! वह दिन कितना सुन्दर होता, वह क्षण कितना स्पृहणीय होता ! आह ! तुम इस निष्ठुरता में भी कितने महान होते ।" जया नीचे चली गयी थी । स्तंभ के संकीर्ण प्रकोष्ठ में बुद्धगुप्त और चम्पा एकांत में एक-दूसरे के सामने बैठे थे ।

बुद्धगुप्त ने चम्पा के पैर पकड़ लिये। उच्छ्वासित शब्दों में वह कहने लगा, "चम्पा! हम लोग जन्मभूमि भारतवर्ष से कितनी दूर इन निरीह प्राणियों में इंद्र और शसी के समान पूजित हैं । पर न जाने कौन अभिशाप हम लोगों को अभी तक अलग किये हैं । स्मरण होता है वह दार्शनिकों का देश ! वह महिमा की प्रतिमा ! मुझे वह स्मृति नित्य आमंत्रित करती; परन्तु मैं क्यों नही जाता, जानती हो ?" इतना महत्त्व प्राप्त करने पर भी मैं कंगाल हूँ । मेरा पत्थर-सा हृदय एक दिन सहसा तुम्हारे स्पर्श से चंद्रकांत-मणि की तरह द्रवित हुआ ।

"चम्पा, मैं ईश्वर को नहीं मानता, मैं पाप को नहीं मानता, मैं दया को नहीं समझ सकता, मैं उस लोक में विश्वास नहीं करता । पर मुझे अपने हृदय के एक दुर्बल अंश पर श्रद्धा हो चली है । तुम न जाने कैसे एक बहकी हुई तारिका के समान मेरे शून्य में उदित हो गयी हो । आलोक की एक कोमल रेखा इस निबिड़ तम में मुस्कुराने लगी । पशुबल और धन के उपासक के मन किसी शांत और कान्त कामना की हँसी खिलखिलाने लगी, पर मै न हँस सका ।

"चलोगी चम्पा पोतवाहिनी पर असंख्य धनराशि लादकर राजा-रानी सी जन्भूमि के अंक में ? आज हमारा परिणय हो, कल ही हमलोग भारत के लिए प्रस्थान करें । महानाविक बुद्धगुप्त की आज्ञा सिन्धु की लहरें मानती हैं । वे स्वयं उन पोत पुंज को दक्षिण पवन के समान भारत में पहुँचा देंगी । आह चम्पा ।चलो !

story.indd 93 10-01-2019 10:50:27

चम्पा ने उसके हाथ पकड़ लिये। किसी आकस्मिक झटके ने एक पल-भर के लिए दोनों के अधरों को मिला दिया । सहसा चैतन्य होकर चम्पा ने कहा, "बुद्धगुप्त! मेरे लिए सब भूमि मिट्टी है, सब जल तरल है, सब पवन शीतल है, ।कोई विशेष आकांक्षा हृदय में अग्नि के समान प्रज्ज्वलित नहीं । सब मिलाकर एक शून्य है । प्रिय नाविक ! तुम स्वदेश लौट जाओ, विभावों का सुख भोगने के लिये और मुझे छोड़ दो इन निरीह भोले-भाले प्राणियों के दुःख की सहानुभूति और सेवा के लिए ।"

तब मैं अवश्य चला जाऊँगा, चम्पा ! यहाँ रहकर मैं अपने हृदय पर अधिकार रख सकूँगा, इसमें संदेह है । आह ! किन लहरों से मेरा विनाश हो जाए" ! महानाविक के उच्छ्वास में विकलता थी । फिर उसने पूछा, "तुम अकेली यहाँ क्या करोगी ?"

"पहले विचार था कि कभी-कभी इसी दीप-स्तंभ पर से आलोक जलाकर अपने पिता की समाधि का इस जल में अन्वेषण करुँगी । किन्तु देखती हूँ, मुझे भी इसी में जलना होगा जैसे आकाश-दीप"!

(7)

एक दिन स्वर्ण रहस्य के प्रभाव में चंपा ने अपने दीप-स्तंभ पर से देखा, सामुद्रिक नावों की एक श्रेणी चम्पा का उपकूल छोड़कर पश्चिमोत्तर की ओर महाजल-व्याल के समान संतरण कर रही है। उसकी आँखों से आँसू बहने लगे।

यह कितनी ही शताब्दियों पहले की कथा है। चंपा आजीवन उस दीपस्तंभ में आलोक जलाती ही रही। किंतु उसके पास भी बहुत दिन द्वीप निवासी, उस माया ममता और स्नेह-सीमा की देवी की समाधि-सदृश उसकी पूजा करते थे।

काल के कठोर हाथों ने उसे भी अपनी चंचलता से गिरा दिया।

----------x----------

कठिन शब्दार्थ

शिथिल – ढीला; पहरी – पहरेदार; अंबर – आकाश; कंदुक - गेंद; अट्टहास - जोर की हँसी; जलनिधि – सागर; जलदस्यु - समुद्री डाकू; द्वंदयुद्ध - दो व्यक्तियों का युद्ध

story.indd 94 10-01-2019 10:50:27

प्रश्न

1. आकाशदीप कहानी के कहानीकार के नाम बताइये।
2. आकाशदीप के नायक-नायिका का नाम बताइये।
3. चम्पा कौन थी?
4. चम्पा ने बुद्धगुप्त की सहायता कैसे की?
5. बुद्धगुप्त ने युद्ध में किसको हराया?
6. बुद्धगुप्त किससे प्यार करता था?
7. बुद्धगुप्त और चम्पा का संबंध कैसा था?
8. बुद्धगुप्त भारत क्यों लौटना चाहता था?
9. चम्पा भारत क्यों नहीं लौटना चाहती थी?
10. बुद्धगुप्त ने चम्पा की याद में क्या बनाया?
11. बुद्धगुप्त ने दस्युओं को आज़ाद कैसे किया?
12. बुद्धगुप्त का चरित्र-चित्रण कीजिए।
13. चम्पा का चरित्र-चित्रण कीजिए।
14. आकाशदीप कहानी का उद्देश्य क्या है?
15. आकाशदीप कहानी का सार क्या है ?

story.indd 95 10-01-2019 10:50:27

कहानी 17 ईदगाह

-मुंशी प्रेमचंद



लेखक परिचय:- कहानी का लेखक हैं मुंशी प्रेम्चंद, हिंदी साहित्य की दुनिया में उनका नाम अग्रगण्य है। उनका जन्म काशी जिले के लमही गाँव में 31जुलाई सन् 1880 में हुआ। उनका असली नाम धनपताराय था।वे पहले नवाबराय के नाम से उर्दू में लिखा करते थे। तदन्तर प्रेमचंद के नाम से हिंदी के क्षेत्र में आये और विश्वविखयात लेखक बने। वे आजीवन साहित्य सेवा कर रहे थे। उनकी कलम से तीन सौ से अधिक कहानियाँ निकल चुकी हैं और दस पूरे उपन्यास निकल चुके हैं। वे उपन्यास सम्राट के यश को प्राप्त कर साहित्य क्षेत्र में शासन करते थे। सेवासदन, निर्मला, गोदान, गबन आदि आप के प्रसिद्ध उपन्यास माने जाते हैं। उनका मरण सन 1936 में हुआ। उनकी रचनाओं में समाज सुधार,ग्रामिणों की सपस्या राष्ट्रीय भावना की झलक आदि देखने को मिलती हैं। यथार्थ चित्रण सरल वर्णन आदि उनकी शैली की विशेषताएँ हैं। प्रस्तुत कहानी इसका उत्तम नमूना है। पूस की रात में भारतीय किसान की लाचारी का यथार्थ चित्रण किया है।

रमजान के पूरे तीस रोजों के बाद ईद आयी है। कितना मनोहर, कितना सुहावना प्रभाव है। वृक्षों पर अजीब हरियाली है, खेतों में कुछ अजीब रौनक है, आसमान पर कुछ अजीब लालिमा है। आज का सूर्य देखो, कितना प्यारा, कितना शीतल है, यानी संसार को ईद की बधाई दे रहा है। गाँव में कितनी हलचल है। ईदगाह जाने की तैयारियाँ हो रही हैं। किसी के कुरते में बटन नहीं है, पड़ोस के घर में सुई-धागा लेने दौड़ा जा रहा है। किसी के जूते कड़े हो गए हैं, उनमें तेल डालने के लिए तेली के घर पर भागा जाता है। जल्दी-जल्दी बैलों को सानी-पानी दे दें। ईदगाह से लौटते-लौटते दोपहर हो जाएगी। तीन कोस का पैदल रास्ता, फिर सैकड़ों आदमियों से मिलना-भेंटना, दोपहर के पहले लोटना असम्भव है। लड़के सबसे ज्यादा प्रसन्न हैं। किसी ने एक रोजा रखा है, वह भी दोपहर तक, किसी ने वह भी नहीं, लेकिन ईदगाह जाने की खुशी उनके हिस्से की चीज है। रोजे बड़े-बूढ़ों के लिए होंगे। इनके लिए तो ईद है।

story.indd 96 10-01-2019 10:50:27

रोज ईद का नाम रटते थे, आज वह आ गई। अब जल्दी पड़ी है कि लोग ईदगाह क्यों नहीं चलते। इन्हें गृहस्थी चिंताओं से क्या प्रयोजन! सेवैयों के लिए दूध और शक्कर घर में है या नहीं, इनकी बला से, ये तो सेवेयां खाएंगे। वह क्या जानें कि अब्बाजान क्यों बदहवास चौधरी कायमअली के घर दौड़े जा रहे हैं। उन्हें क्या खबर कि चौधरी आंखें बदल लें, तो यह सारी ईद मुहर्रम हो जाए। उनकी अपनी जेबों में तो कुबेर का धन भरा हुआ है। बार-बार जेब से अपना खजाना निकालकर गिनते हैं और खुश होकर फिर रख लेते हैं। महमूद गिनता है, एक-दो, दस,-बारह, उसके पास बारह पैसे हैं। मोहनसिन के पास एक, दो, तीन, आठ, नौ, पंद्रह पैसे हैं। इन्हीं अनगिनती पैसों में अनगिनती चीजें लाएंगे-खिलौने,मिठाइयां,बिगुल,गेंद और जाने क्या-क्या।

और सबसे ज्यादा प्रसन्न है हामिद। वह चार-पाँच साल का गरीब सूरत, दुबला-पतला लड़का, जिसका बाप गत वर्ष हैजे की भेंट हो गया और माँ न जाने क्यों पीली होती-होती एक दिन मर गई। किसी को पता क्या बीमारी है। कहती तो कौन सुनने वाला था? दिल पर जो कुछ बीतती थी, वह दिल में ही सहती थी ओर जब न सहा गया, तो संसार से विदा हो गई। अब हामिद अपनी बूढ़ी दादी अमीना की गोद में सोता है और उतना ही प्रसन्न है। उसके अब्बाजानरुपये कमाने गए हैं। बहुत-सी थैलियाँ लेकर आएंगे। अम्मीजान अल्लाहमियाँ के घर से उसके लिए बड़ी अच्छी-अच्छी चीजें लाने गई हैं, इसलिए हामिद प्रसन्न है। आशा तो बड़ी चीज है, और फिर बच्चों की आशा! उनकी कल्पना तो राई का पर्वत बना लेती हे। हामिद के पांव में जूते नहीं हैं, सिर पर एक पुरानी-धुरानी टोपी है, जिसका गोटा काला पड़ गया है, फिर भी वह प्रसन्न है। जब उसके अब्बाजान थैलियाँ और अम्मीजाननियामतें लेकर आएंगी, तो वह दिल से अरमान निकाल लेगा। तब देखेगा, मोहसिन, नूरे और सम्मीकहाँसेउतनेपैसेनिकालेंगे।

अभागिन अमीना अपनी कोठरी में बैठी रो रही है। आज ईद का दिन, उसके घर में दाना नहीं! आज आबिद होता, तो क्या इसी तरह ईद आती ओर चली जाती! इस अन्धकार और निराशा में वह डूबी जा रही है। किसने बुलाया था इस निगोड़ी ईद को? इस घर में उसका काम नहीं, लेकिन हामिद! उसे किसी के मरने-जीने के क्या मतलब? उसके अन्दर प्रकाश है, बाहर आशा। विपत्ति अपना सारा दलबल लेकर आये, हामिद की आनंद-भरी चितबन उसका विध्वसं कर देगी।

हामिद भीतर जाकर दादी से कहता है-तुम डरना नहीं अम्माँ, मैं सबसे पहले आऊँगा।बिल्कुल न डरना।

अमीना का दिल कचोट रहा है। गाँव के बच्चे अपने-अपने बाप के साथ जा रहे हैं। हामिद का बाप अमीना के सिवा और कौन है! उसे कैसे अकेले मेले जाने दे? उस भीड़-भाड़ से बच्चा कहीं खो जाए तो क्या हो? नहीं, अमीना उसे यों न जाने देगी। नन्ही-सी जान! तीन कोस चलेगा कैसे? पैर में छाले पड़ जाएंगे। जूते भी तो नहीं हैं। वह थोड़ी-थोड़ी दूर पर उसे गोद में ले लेती, लेकिन यहाँसेवैयां कौन पकाएगा? पैसे होते तो लौटते-लौटते सब सामग्री जमा करके चटपट बना लेती। यहाँ तो घंटों चीजें जमा करते लगेंगे। माँगे का ही तो भरोसा ठहरा। उस दिन फहीमन

story.indd 97 10-01-2019 10:50:28

के कपड़े सिले थे। आठ आने पैसे मिले थे। उस अठन्नी को ईमान की तरह बचाती चली आती थी इसी ईद के लिए लेकिन कल ग्वालन सिर पर सवार हो गई तो क्या करती? हामिद के लिए कुछ नहीं हे, तो दो पैसे का दूध तो चाहिए ही। अब तो कुल दो आने पैसे बच रहे हैं। तीन पैसे हामिद की जेब में, पांच अमीना के बटुवें में। यही तो बिसात है और ईद का त्यौहार, अल्ला ही बेड़ा पर लगाए। धोबन और नाइन ओर मेहतरानी और चुड़िहारिन सभी तो आएंगी। सभी को सेवेयां चाहिए और थोड़ा किसी को आँखों नहीं लगता। किस-किस सें मुँह चुरायेगी? और मुँह क्यों चुराए? साल-भर का त्यौहार हैं। जिन्दगी खैरियत से रहें, उनकी तकदीर भी तो उसी के साथ है, बच्चे को खुदा सलामत रखे, ये दिन भी कट जाएंगे।

गाँव से मेला चला। और बच्चों के साथ हामिद भी जा रहा था। कभी सबके सब दौड़कर आगे निकल जाते। फिर किसी पेड़ के नीचे खड़े होकर साथ वालों का इंतजार करते। यह लोग क्यों इतना धीरे-धीरे चल रहे हैं? हामिद के पैरो में तो जैसे पर लग गए हैं। वह कभी थक सकता है? शहर का दामन आ गया। सड़क के दोनों ओर अमीरों के बगीचे हैं। पक्की चारदीवारी बनी हुई है। पेड़ो में आम और लीचियाँ लगी हुई हैं। कभी-कभी कोई लड़का कंकड़ी उठाकर आम पर निशान लगाता है। माली अंदर से गाली देता हुआ निकलता है। लड़के वहाँ से एक फलाँग पर हैं। खूब हँस रहे हैं। माली को कैसा उल्लू बनाया है।

बड़ी-बड़ी इमारतें आने लगीं। यह अदालत है, यह कालेज है, यह क्लब घर है। इतने बड़े कालेज में कितने लड़के पढ़ते होंगे? सब लड़के नहीं हैं जी! बड़े-बड़े आदमी हैं, सच! उनकी बड़ी-बड़ी मूँछें हैं। इतने बड़े हो गए, अभी तक पढ़ते जाते हैं। न जाने कब तक पढ़ेंगे और क्या करेंगे इतना पढ़कर! हामिद के मदरसे में दो-तीन बड़े-बड़े लड़के हें, बिल्कुल तीन कौड़ी के। रोज मार खाते हैं, काम से जी चुराने वाले। इस जगह भी उसी तरह के लोग होंगे ओर क्या। क्लब-घर में जादू होता है। सुना है, यहाँ मुर्दों की खोपड़ियां दौड़ती हैं और बड़े-बड़े तमाशे होते हैं, पर किसी को अंदर नहीं जाने देते। और वहाँ शाम को साहब लोग खेलते हैं। बड़े-बड़े आदमी खेलते हैं, मूँछों-दाढ़ी वाले। और मेमें भी खेलती हैं, सच! हमारी अम्माँ को यह दे दो, क्या नाम है, बैट, तो उसे पकड़ ही न सके। घुमाते ही लुढ़क जाएं।

महमूद ने कहा-हमारी अम्मीजान का तो हाथ काँपने लगे, अल्ला कसम।

मोहसिन बोल-चलों, मनों आटा पीस डालती हैं। जरा-सा बैट पकड़ लेगी, तो हाथ काँपने लगेंगे! सौकड़ों घड़े पानी रोज निकालती हैं। पाँच घड़े तो तेरी भैंस पी जाती है। किसी मेम को एक घड़ा पानी भरना पड़े, तो आँखों तक अँधेरी आ जाए।

महमूद-लेकिन दौड़तीं तो नहीं, उछल-कूद तो नहीं सकतीं।

story.indd 98 10-01-2019 10:50:28

मोहसिन-हाँ, उछल-कूद तो नहीं सकतीं,लेकिन उस दिन मेरी गाय खुल गई थी और चौधरी के खेत में जा पड़ी थी, अम्माँ इतना तेज दौड़ी कि में उन्हें न पा सका, सच।

आगे चले। हलवाइयों की दुकानें शुरू हुई। आज खूब सजी हुई थीं। इतनी मिठाइयाँ कौन खाता? देखो न, एक-एक दुकान पर मनों होंगी। सुना है, रात को जिन्नात आकर खरीद ले जाते हैं। अब्बा कहते थे कि आधी रात को एक आदमी हर दुकान पर जाता है और जितना माल बचा होता है, वह तुलवा लेता है और सचमुच के रुपये देता है, बिल्कुल ऐसे ही रुपये।

हामिद को यकीन न आया-ऐसे रुपये जिन्नात को कहाँ से मिल जाएंगी?

मोहसिन ने कहा-जिन्नात को रुपये की क्या कमी? जिस खजाने में चाहें चले जाएं। लोहे के दरवाजे तक उन्हें नहीं रोक सकते जनाब, आप हैं किस फेर में!

हीरे-जवाहरात तक उनके पास रहते हैं। जिससे खुश हो गए, उसे टोकरों जवाहरात दे दिए। अभी यहीं बैठे हैं, पाँच मिनटमें कलकत्ता पहुँच जाएं।

हामिद ने फिर पूछा-जिन्नात बहुत बड़े-बड़े होते हैं?

मोहसिन-एक-एक सिर आसमान के बराबर होता है जी! जमीन पर खड़ा हो जाए तो उसका सिर आसमान से जा लगे, मगर चाहे तो एक लोटे में घुस जाए।

हामिद—लोग उन्हें कैसे खुश करते होंगे? कोई मुझे यह मंतर बता दे तो एक जिन्न को खुश कर लूँ।

मोहसिन-अब यह तो न जानता, लेकिन चौधरी साहब के काबू में बहुत-से जिन्नात हैं। कोई चीज चोरी जाए चौधरी साहब उसका पता लगा देंगे ओर चोर का नाम बता देगें। जुमराती का बछवा उस दिन खो गया था। तीन दिन हैरान हुए, कहीं न मिला तब झख मारकर चौधरी के पास गए। चौधरी ने तुरन्त बता दिया, मवेशीखाने में है और वहीं मिला। जिन्नात आकर उन्हें सारे जहान की खबर दे जाते हैं।

अब उसकी समझ में आ गया कि चौधरी के पास क्यों इतना धन है और क्यों उनका इतना सम्मानहै।

आगे चले। यह पुलिस लाइन है। यहीं सब कानिसटिबिल कवायद करते हैं। रैटन! फायफो! रात को बेचारे घूम-घूमकर पहरा देते हैं, नहीं चोरियाँ हो जाएं। मोहसिन ने प्रतिवाद किया-यह कानिसटिबिल पहरा देते हैं? तभी तुम बहुत जानते हों अजी हजरत, यह चोरी करते हैं। शहर के जितने चोर-डाकू हैं, सब इनसे मुहल्ले में जाकर 'जागते रहो! जाते रहो!' पुकारते हैं। तभी इन लोगों के पास इतने रुपये आते हैं। मेरे मामू एक थाने में कानिसटिबिल

story.indd 99 10-01-2019 10:50:28

हैं। बरस रुपया महीना पाते हैं, लेकिन पचास रुपये घर भेजते हैं। अल्ला कसम! मैं ने एक बार पूछा था कि मामू, आप इतने रुपये कहाँ से पाते हैं? हँसकर कहने लगे-बेटा, अल्लाह देता है। फिर आप ही बोले- हम लोग चाहें तो एक दिन में लाखों मार लाएं। हम तो इतना ही लेते हैं, जिसमें अपनी बदनामी न हो और नौकरी न चली जाए।

हामिद ने पूछा-यह लोग चोरी करवाते हैं, तो कोई इन्हें पकड़ता नहीं?

मोहसिन उसकी नादानी पर दया दिखाकर बोला.....अरे, पागल! इन्हें कौन पकड़ेगा! पकड़ने वाले तो यह लोग खुद हैं, लेकिन अल्लाह, इन्हें सजा भी खूब देता है। हराम का माल हराम में जाता है। थोड़े ही दिन हुए, मामू के घर में आग लग गई। सारी लेई-पूँजी जल गई। एक बरतन तक न बचा। कई दिन पेड़ के नीचे सोए, अल्ला कसम, पेड़ के नीचे! फिर न जाने कहाँ से एक सौ कर्ज लाए तो बरतन-भाड़े आए।

हामिद-एक सौ तो पचार से ज्यादा होते है?

'कहाँ पचास, कहाँ एक सौ। पचास एक थैली-भर होता है। सौ तो दो थैलियों में भी न आएं?

अब बस्ती घनी होने लगी। ईदगाह जाने वालों की टोलियाँ नजर आने लगी। एक से एक भड़कीले वस्त्र पहने हुए। कोई इक्के-ताँगे पर सवार, कोई मोटर पर, सभी इत्र में बसे, सभी के दिलों में उमंग। ग्रामीणों का यह छोटा-सा दल अपनी विपन्नता से बेखबर, सन्तोष ओर धैर्य में मगन चला जा रहा था। बच्चों के लिए नगर की सभी चीजें अनोखी थीं। जिस चीज की ओर ताकते, ताकते ही रह जाते और पीछे सेहार्न की आवाज होने पर भी न चेतते। हामिद तो मोटर के नीचे जाते-जाते बचा।

सहसा ईदगाह नजर आई। ऊपर इमली के घने वृक्षों की छाया हे। नाचे पक्का फर्श है, जिस पर जाजम बिछा हुआ है। और रोजेदारों की पंक्तियाँ एक के पीछे एक न जाने कहावत चली गई हैं, पक्की जगत के नीचे तक, जहाँजाजम भी नहीं है। नए आने वाले आकर पीछे की कतार में खड़े हो जाते हैं। आगे जगह नहीं हे। यहा कोई धन और पद नहीं देखता। इस्लाम की निगाह में सब बराबर हें। इन ग्रामीणों ने भी वजू किया ओर पिछली पंक्ति में खड़े हो गए। कितना सुन्दर संचालन है, कितनी सुन्दर व्यवस्था! लाखों सिर एक साथ सिजदे में झुक जाते हैं, फिर सबके सब एक साथ खड़े हो जाते हैं, एक साथ झुकते हें, और एक साथ खड़े हो जाते हैं, एक साथ खड़े हो जाते हैं, एक साथ झुकते हें, और एक साथ खड़े हो जाते हैं, कई बार यही क्रिया होती हे, जैसे बिजली की लाखों बत्तियाँ एक साथ प्रदीप्त हों और एक साथ बुझ जाएं, और यही क्रम चलता, रहे। कितना अपूर्व दृश्य था, जिसकी सामूहिक क्रियाएं, विस्तार और अनंतता हृदय को श्रद्धा, गर्व और आत्मानंद से भर देती थीं, मानो भ्रातृत्व का एक सूत्र इन समस्त आत्माओं को एक लड़ी में पिरोए हुए हैं।

story.indd 100 10-01-2019 10:50:28

2

नमाज खत्म हो गई। लोग आपस में गले मिल रहे हैं। तब मिठाई और खिलौने की दूकान पर धावा होता है। ग्रामीणों का यह दल इस विषय में बालकों से कम उत्साही नहीं है। यह देखो, हिंडोला हैं एक पैसा देकर चढ़ जाओ। कभी आसमान पर जाते हुए मालूम होगें, कभी जमीन पर गिरते हुए। यह चर्खी है, लकड़ी के हाथी, घोड़े, ऊँट, छड़ो में लटके हुए हैं। एक पेसा देकर बैठ जाओं और पच्चीस चक्करों का मजा लो। महमूद और मोहसिन ओर नूरे ओर सम्मी इन घोड़ों ओर ऊँटों पर बैठते हैं। हामिद दूर खड़ा है। तीन ही पैसे तो उसके पास हैं। अपने कोष का एक तिहाई जरा-सा चक्कर खाने के लिए नहीं दे सकता।

सब चर्खयों से उतरते हैं। अब खिलौने लेंगे। उधर दुकानों की कतार लगी हुई है। तरह-तरह के खिलौने हैं- सिपाही और गुजरिया, राज और वकी, भिश्ती और धोबिन और साधु। वह! कुत्ते सुन्दर खिलौने हैं। अब बोला ही चाहते हैं। महमूद सिपाही लेता हे, खाकी वर्दी और लाल पगड़ीवाला, कंधें पर बंदूक रखे हुए, मालूम होता हे, अभी कवायद किए चला आ रहा है। मोहसिन को भिश्ती पसंद आया। कमर झुकी हुई है, ऊपर मशक रखे हुए हैं मशक का मुँह एक हाथ से पकड़े हुए है। कितना प्रसन्न है! शायद कोई गीत गा रहा है। बस, मशक से पानी उड़ेला ही चाहता है। नूरे को वकील से प्रेम हे। कैसी विद्वत्ता हे उसके मुख पर! काला चोगा, नीचे सफेद अचकन, अचकन के सामने की जेब में घड़ी, सुनहरी जंजीर, एक हाथ में कानून का पौथा लिये हुए। मालूम होता है, अभी किसी अदालत से जिरह या बहस किए चले आ रहे है। यह सब दो-दो पैसे के खिलौने हैं। हामिद के पास कुल तीन पैसे हैं, इतने महँगे खिलौन वह केसे ले? खिलौना कहीं हाथ से छूट पड़े तो चूर-चूर हो जाए। जरा पानी पड़े तो सारा रंग घुल जाए। ऐसे खिलौने लेकर वह क्या करेगा, किस काम के!

मोहसिन कहता है-मेरा भिश्ती रोज पानी दे जाएगा साँझ-सबेरे।

महमूद-और मेरा सिपाही घर का पहरा देगा कोई चोर आएगा, तो फौरन बंदूक से फैर कर देगा।

नूरे-ओर मेरा वकील खूब मुकदमा लड़ेगा।

सम्मी-ओर मेरी धोबिन रोज कपड़े धोएगी।

हामिद खिलौनों की निंदा करता है -मिट्टी ही के तो हैं, गिरे तो चकनाचूर हो जाएं, लेकिन ललचाई हुई आंखों से खिलौनों को देख रहा है और चाहता है कि जरा देर के लिए उन्हें हाथ में ले सकता। उसके हाथ अनायास ही लपकते रहे, लेकिन लड़के इतने त्यागी नहीं होते हैं, विशेषकर जब अभी नया शौक है। हामिद ललचता रह जाता है।

story.indd 101 10-01-2019 10:50:28

खिलौने के बाद मिठाइयाँ आती हैं। किसी ने रेवड़ियाँ ली हैं, किसी ने गुलाबजामुन किसी ने सोहन हलवा। मजे से खा रहे हैं। हामिद बिरादरी से पृथक है। अभागे के पास तीन पैसे हैं। क्यों नहीं कुछ लेकर खाता? ललचाई आंखों से सबक ओर देखता है।

मोहसिन कहता है-हामिद रेवड़ी ले जा, कितनी खुशबूदार है!

हामिद को संदेह हुआ, ये केवल क्रूर विनोद है।मोहसिन इतना उदार नहीं है, लेकिन यह जानकर भी वह उसके पास जाता है। मोहसिन दोने से एक रेवड़ी निकालकर हामिद की ओर बढ़ाता है। हामिद हाथ फैलाता है। मोहसिन रेवड़ी अपने मुँह में रख लेता है। महमूद नूरे ओर सम्मी खूब तालियाँ बजा-बजाकर हँसते हैं। हामिद खिसिया जाता है।

मोहसिन-अच्छा, अबकी जरूर देंगे हामिद, अल्लाह कसम, ले जा।

हामिद-रखे रहो। क्या मेरे पास पैसे नहीं है?

सम्मी-तीन ही पैसे तो हैं। तीन पैसे में क्या-क्या लोगे?

महमूद-हमसे गुलाबजामुन ले जाओ हामिद। मोहमिन बदमाश है।

हामिद-मिठाई कौन बड़ी नेमत है। किताब में इसकी कितनी बुराइयाँ लिखी हैं।

मोहसिन-लेकिन दिन में कह रहे होगे कि मिले तो खा लें। अपने पैसे क्यों नहीं निकालते?

महमूद-इसे समझते हो, इसकी चालाकी। जब हमारे सारे पैसे खर्च हो जाएंगे, तो हमें ललचा-ललचाकर खाएगा।

मिठाइयों के बाद कुछ दूकानें लोहे की चीजों की, कुछ गिलट और कुछ नकली गहनों की। लड़कों के लिए यहाँ कोई आकर्षण न था। वे सब आगे बढ़ जाते हैं, हामिद लोहे की दुकान पर रुक जात है। कई चिमटे रखे हुए थे। उसे ख्याल आया, दादी के पास चिमटा नहीं है। तबे से रोटियाँ उतारती हैं, तो हाथ जल जाता है। अगर वह चिमटा ले जाकर दादी को दे दे तो वह कितना प्रसन्न होगी! फिर उनकी उगलियाँ कभी न जलेंगी। घर में एक काम की चीज हो जाएगी। खिलौने से क्या फायदा? व्यर्थ में पैसे खराब होते हैं। जरा देर ही तो खुशी होती है। फिर तो खिलौने को कोई आंख उठाकर नहीं देखता। यह तो घर पहुँचते-पहुँचते टूट-फूट बराबर हो जाएंगे। चिमटा कितने काम की चीज है। रोटियाँ तवे से उतार लो, चूल्हें में सेंक लो। कोई आग माँगने आये तो चटपट चूल्हे से आग निकालकर उसे दे दो। अम्माँ बेचारी को कहाँ फुरसत है कि बाजार जाए और इतने पैसे ही कहाँ मिलते हैं? रोज हाथ जला लेती हैं।

story.indd 102 10-01-2019 10:50:28

हामिद के साथी आगे बढ़ गए हैं। सबील पर सबके सब शर्बत पी रहे हैं। देखो, सब कितने लालची हैं। इतनी मिठाइयाँ लीं, मुझे किसी ने एक भी न दी। उस पर कहते है, मेरे साथ खेलो। मेरा यह काम करो। अब अगर किसी ने कोई काम करने को कहा, तो पूछूँगा खाईं मिठाइयाँ, आप मुंह सड़ेगा, फोड़े-फुन्सियाँ निकलेंगी, आप ही जबान चटोरी हो जाएगी। तब घर से पैसे चुराएंगे और मार खाएंगे। किताब में झूठी बातें थोड़े ही लिखी हैं। मेरी जबान क्यों खराब होगी? अम्माँ चिमटा देखते ही दौड़कर मेरे हाथ से ले लेंगी और कहेंगी-मेरा बच्चा अम्माँ के लिए चिमटा लाया है। कितना अच्छा लड़का है। इन लोगों के खिलौने पर कौन इन्हें दुआएं देगा? बड़ों की दुआएं सीधे अल्लाह के दरबार में पहुँचती हैं और तुरंत सुनी जाती हैं। मैं भी इनसे मिजाज क्यों सहूँ? मैं गरीब सही, किसी से कुछ माँगने तो नहीं जाता। आखिर अब्बाजान कभी न कभी आएंगे। अम्मा भी आएंगी ही। फिर इन लोगों से पूछूँगा, कितने खिलौने लोगे? एक-एक को टोकरियों खिलौने दूँ और दिखा हूँ कि दोस्तों के साथ इस तरह का सलूक किया जाता है। यह नहीं कि एक पैसे की रेवड़ियाँ लीं, तो चिढ़ा-चिढ़ाकर खाने लगे। सबके सब हँसेंगे कि हामिद ने चिमटा लिया है। हंसें! मेरी बला से! उसने दुकानदार से पूछा-यह चिमटा कितने का है?

दुकानदार ने उसकी ओर देखा और कोई आदमी साथ न देखकर कहा-तुम्हारे काम का नहीं है जी!

'बिकाऊ है कि नहीं?'

'बिकाऊ क्यों नहीं है? और यहाँ क्यों लाद लाए हैं?'

'तो बताते क्यों नहीं, कै पैसे का है?'

'छ: पैसे लगेंगे।'

हामिद का दिल बैठ गया।

'ठीक-ठीक पाँच पैसे लगेंगे, लेना हो लो, नहीं चलते बनो।'

हामिद ने कलेजा मजबूत करके कहा तीन पैसे लोगे?

यह कहता हुआ वह आगे बढ़ गया कि दुकानदार की घुड़कियाँ न सुने। लेकिन दुकानदार ने घुड़कियाँ नहीं दी। बुलाकर चिमटा दे दिया। हामिद ने उसे इस तरह कंधे पर रखा, मानों बंदूक है और शान से अकड़ता हुआ संगियों के पास आया। जरा सुनें, सबके सब क्या-क्या आलोचनाएँ करते हैं!

story.indd 103 10-01-2019 10:50:28



मोहसिन ने हँसकर कहा-यह चिमटा क्यों लाया पगले, इसे क्या करेगा?

हामिद ने चिमटे को जमीन पर पटकर कहा-जरा अपना भिश्ती जमीन पर गिरा दो। सारी पसलियाँ चूर-चूर हो जाएं बचा की।

महमूद बोला-तो यह चिमटा कोई खिलौना है?

हामिद-खिलौना क्यों नहीं है! अभी कन्धे पर रखा, बंदूक हो गई। हाथ में ले लिया, फकीरों का चिमटा हो गया। चाहूँ तो इससे मजीरे का काम ले सकता हूँ। एक चिमटा जमा दूँ, तो तुम लोगों के सारे खिलौनों की जान निकल जाए। तुम्हारे खिलौने कितना भी जोर लगाएं, मेरे चिमटे का बाल भी बाँका नहीं कर सकते। मेरा बहादुर शेर है चिमटा।

सम्मी ने खँजरी ली थी। प्रभावित होकर बोला-मेरी खँजरी से बदलोगे? दो आने की है।

हामिद ने खँजरी की ओर उपेक्षा से देखा-मेरा चिमटा चाहे तो तुम्हारी खँजरी का पेट फाड़ डाले। बस, एक चमड़े की झिल्ली लगा दी, ढब-ढब बोलने लगी। जरा-सा पानी लग जाए तो खत्म हो जाए। मेरा बहादुर चिमटा आग में, पानी में, आंधी में, तूफान में बराबर डटा खड़ा रहेगा।

चिमटे ने सभी को मोहित कर लिया, अब पैसे किसके पास धरे हैं? फिर मेले से दूर निकल आए, नौ कब के बज गए, धूप तेज हो रही है। घर पहुंचने की जल्दी हो रही हे। बाप से जिद भी करें, तो चिमटा नहीं मिल सकता। हामिद है बड़ा चालाक। इसीलिए बदमाश ने अपने पैसे बचा रखे थे।

अब बालकों के दो दल हो गए हैं। मोहसिन, महमद, सम्मी और नूरे एक तरफ हैं, हामिद अकेला दूसरी तरफ। शास्त्रार्थ हो रहा है। सम्मी तो विधर्मी हो गया! दूसरे पक्ष से जा मिला, लेकिन मोहसिन, महमूद और नूरे भी हामिद से एक-एक, दो-दो साल बड़े होने पर भी हामिद के आघातों से आतंकित हो उठे हैं। उसके पास न्याय का बल

story.indd 104 10-01-2019 10:50:28

है और नीति की शक्ति। एक ओर मिट्टी है, दूसरी ओर लोहा, जो इस वक्त अपने को फौलाद कह रहा है। वह अजेय है, घातक है। अगर कोई शेर आ जाए मियाँभिश्ती के छक्के छूट जाएं, जो मियाँ सिपाही मिट्टी की बंदूक छोड़कर भागे, वकील साहब की नानी मर जाए, चोगे में मुंह छिपाकर जमीन पर लेट जाएं। मगर यह चिमटा, यह बहादुर, यह रूस्तमें-हिंद लपककर शेर की गरदन पर सवार हो जाएगा और उसकी आंखें निकाल लेगा।

मोहसिन ने एड़ी-चोटी का जारे लगाकर कहा-अच्छा, पानी तो नहीं भर सकता?

हामिद ने चिमटे को सीधा खड़ा करके कहा-भिश्ती को एक डांट बताएगा, तो दौड़ा हुआ पानी लाकर उसके द्वार पर छिड़कने लगेगा।

मोहसिन परास्त हो गया, पर महमूद ने कुमुक पहुँचाई-अगर बचा पकड़ जाएं तो अदालत में बंधे-बँधे फिरेंगे। तब तो वकील साहब के पैरों पड़ेगें।

हामिद इस प्रबल तर्क का जवाब न दे सका। उसने पूछा-हमें पकड़ने कौन आएगा?

नूरे ने अकड़कर कहा-यह सिपाही बंदूकवाला।

हामिद ने मुँह चिढ़ाकर कहा-यह बेचारे हम बहादुर रूस्तमें-हिंद को पकड़ेंगे! अच्छा लाओ, अभी जरा कुश्ती हो जाए। इसकी सूरत देखकर दूर से भागेंगे। पकड़ेंगे क्या बेचारे!

मोहसिन को एक नई चोट सूझ गई-तुम्हारे चिमटे का मुँह रोज आग में जलेगा।

उसने समझा था कि हामिद लाजवाब हो जाएगा, लेकिन यह बात न हुई। हामिद ने तुरंत जवाब दिया-आग में बहादुर ही कूदते हैं जनाब, तुम्हारे यह वकील, सिपाही और भिश्ती लैडियों की तरह घर में घुस जाएंगे। आग में वह काम है, जो यह रूस्तमें-हिन्द ही कर सकता है।

महमूद ने एक जोर लगाया-वकील साहब कुरसी-मेज पर बैठेंगे, तुम्हारा चिमटा तो बाबर्चीखाने में जमीन पर पड़ा रहने के सिवा और क्या कर सकता है?

इस तर्क ने सम्मी और नूरे को भी राजी कर दिया! कितने ठिकाने की बात कही हे पट्ठे ने! चिमटा बावरचीखाने में पड़ा रहने के सिवा और क्या कर सकता है?

हामिद को कोई फड़कता हुआ जवाब न सूझा, तो उसने धाँधली शुरू की-मेरा चिमटा बावरचीखाने में नहीं रहेगा। वकील साहब कुर्सी पर बैठेंगे, तो जाकर उन्हें जमीन पर पटक देगा और उनका कानून उनके पेट में डाल देगा।

story.indd 105 10-01-2019 10:50:28

बात कुछ बनी नहीं। खाल गाली-गलौज थी, लेकिन कानून को पेट में डालनेवाली बात छा गई। ऐसी छा गई कि तीनों सूरमा मुँह ताकते रह गए मानो कोई धेलचाकान कौआ किसी गंडेवाले कनकौए को काट गया हो। कानून मुँह से बाहर निकलने वाली चीज हे। उसको पेट के अन्दर डाल दिया जाना बेतुकी-सी बात होने पर भी कुछ नयापन रखती हे। हामिद ने मैदान मार लिया। उसका चिमटा रूस्तमें-हिन्द हे, अब इसमें मोहसिन, महमूद नूरे, सम्मी किसी को भी आपत्ति नहीं हो सकती।

विजेता को हारनेवालों से जो सत्कार मिलना स्वाभविक है, वह हामिद को भी मिल। औरों ने तीन-तीन, चार-चार आने पैसे खर्च किए, पर कोई काम की चीज न ले सके। हामिद ने तीन पैसे में रंग जमा लिया। सच ही तो है, खिलौनों का क्या भरोसा? टूट-फूट जाएंगी। हामिद का चिमटा तो बना रहेगा बरसों?

संधि की शर्तें तय होने लगीं। मोहसिन ने कहा-जरा अपना चिमटा दो, हम भी देखें। तुम हमारे भिश्ती लेकर देखो।

महमूद और नूरे ने भी अपने-अपने खिलौने पेश किए।

हामिद को इन शर्तों को मानने में कोई आपत्ति न थी। चिमटा बारी-बारी से सबके हाथ में गया, और उनके खिलौने बारी-बारी से हामिद के हाथ में आए। कितने खूबसूरत खिलौने हैं।

हामिद ने हारने वालों के आंसू पोंछे-मैं तुम्हें चिढ़ा रहा था, सच! यह चिमटा भला, इन खिलौनों की क्या बराबर करेगा, मालूम होता है, अब बोले, अब बोले।

लेकिन मोहसनि की पार्टी को इस दिलासे से संतोष नहीं होता। चिमटे का सिल्का खूब बैठ गया है। चिपका हुआ टिकट अब पानी से नहीं छूट रहा है।

मोहसिन-लेकिन इन खिलौनों के लिए कोई हमें दुआ तो न देगा?

महमूद-दुआ को लिये फिरते हो। उलटे मार न पड़े। अम्मां जरूर कहेंगी कि मेले में यही मिट्टी के खिलौने मिले?

हामिद को स्वीकार करना पड़ा कि खिलौनों को देखकर किसी की माँ इतनी खुश न होगी, जितनी दादी चिमटे को देखकर होंगी। तीन पैसों ही में तो उसे सब-कुछ करना था और उन पैसों के इस उपयोग पर पछतावे की बिल्कुल जरूरत न थी। फिर अब तो चिमटा रूस्तमें-हिन्द हैऔर सभी खिलौनों का बादशाह।

story.indd 106 10-01-2019 10:50:28

रास्ते में महमूद को भूख लगी। उसके बाप ने केले खाने को दिये। महमूद ने केवल हामिद को साझी बनाया। उसके अन्य मित्र मुंह ताकते रह गए। यह उस चिमटे का प्रसाद था।

3

ग्यारह बजे गाँव में हलचल मच गई। मेलेवाले आ गए। मोहसिन की छोटी बहन दौड़कर भिश्ती उसके हाथ से छीन लिया और मारे खुशी के जा उछली, तो मियाँ भिश्ती नीचे आ रहे और सुरलोक सिधारे। इस पर भाई-बहन में मार-पीट हुई। दानों खुब रोए। उसकी अम्माँ यह शोर सुनकर बिगड़ी और दोनों को ऊपर से दो-दो चाँटे और लगाए।

मियाँ नूरे के वकील का अंत उनके प्रतिष्ठानुकूल इससे ज्यादा गौरवमय हुआ। वकील जमीन पर या ताक पर हो नहीं बैठ सकता। उसकी मर्यादा का विचार तो करना ही होगा। दीवार में खूटियाँ गाड़ी गई। उन पर लकड़ी का एक पटरा रखा गया। पटरे पर कागज का कालीन बिदाया गया। वकील साहब राजा भोज की भाँति सिंहासन पर विराजे। नूरे ने उन्हें पंखा झलना शुरू किया। अदालतों में खर की टट्टियाँ और बिजली के पंखे रहते हैं। क्या यहाँ मामूली पंखा भी न हो! कानून की गर्मी दिमाग पर चढ़ जाएगी कि नहीं? बॉस कापंखा आया ओर नूरे हवा करने लगें मालूम नहीं, पंखे की हवा से या पंखे की चोट से वकील साहब स्वर्गलोक से मृत्युलोक में आ रहे और उनका माटी का चोला माटी में मिल गया! फिर बड़े जोर-शोर से मातम हुआ और वकील साहब की अस्थि घूरे पर डाल दी गई।

अब रहा महमूद का सिपाही। उसे चटपट गाँव का पहरा देने का चार्ज मिल गया, लेकिन पुलिस का सिपाही कोई साधारण व्यक्ति तो नहीं, जो अपने पैरों चलें वह पालकी पर चलेगा। एक टोकरी आई, उसमें कुछ लाल रंग के फटे-पुराने चिथड़े बिछाए गए जिसमें सिपाही साहब आराम से लेटे। नूरे ने यह टोकरी उठाई और अपने द्वार का चक्कर लगाने लगे। उनके दोनों छोटे भाई सिपाही की तरह 'छोनेवाले, जागते लहो' पुकारते चलते हैं। मगर रात तो अँधेरी होनी चाहिए, नूरे को ठोकर लग जाती है। टोकरी उसके हाथ से छूटकर गिर पड़ती है और मियाँ सिपाही अपनी बन्दूक लिये जमीन पर आ जाते हैं और उनकी एक टाँग में विकार आ जाता है।

महमूद को आज ज्ञात हुआ कि वह अच्छा डाक्टर है। उसको ऐसा मरहम मिला गया है जिससे वह टूटी टाँग को आनन-फानन जोड़ सकता हे। केवल गूलर का दूध चाहिए। गूलर का दूध आता है। टाँग जवाब दे देती है। शल्य-क्रिया असफल हुई, तब उसकी दूसरी टाँग भी तोड़ दी जाती है। अब कम-से-कम एक जगह आराम से बैठ तो सकता है। एक टाँग से तो न चल सकता था, न बैठ सकता था। अब वह सिपाही संन्यासी हो गया है। अपनी जगह पर बैठा-बैठा पहरा देता है। कभी-कभी देवता भी बन जाता है। उसके सिर का झालरदार साफा खुरच दिया गया है। अब उसका जितना रूपांतर चाहो, कर सकते हो। कभी-कभी तो उससे बाट का काम भी लिया जाता है।

story.indd 107 10-01-2019 10:50:28

अब मियाँहामिद का हाल सुनिए। अमीना उसकी आवाज सुनते ही दौड़ी और उसे गोद में उठाकर प्यार करने लगी। सहसा उसके हाथ में चिमटा देखकर वह चौंकी।

'यहचिमटा कहाँ था?'

'मैंने मोल लिया है।'

'कै पैसे में?

'तीन पैसे दिये।'

अमीना ने छाती पीट ली। यह कैसा बेसमझ लड़का है कि दोपहर हुआ, कुछ खाया न पिया। लाया क्या, चिमटा! 'सारे मेले में तुझे और कोई चीज न मिली, जो यह लोहे का चिमटा उठा लाया?'

हामिद ने अपराधी-भाव से कहा-तुम्हारी उँगलियाँ तवे से जल जाती थीं, इसलिए मैंने इसे लिया।

बुढ़िया का क्रोध तुरन्त स्नेह में बदल गया, और स्नेह भी वह नहीं, जो प्रगल्भ होता है और अपनी सारी कसक शब्दों में बिखेर देता है। यह मूक स्नेह था, खूब ठोस, रस और स्वाद से भरा हुआ। बच्चे में कितना व्याग, कितना सदभाव और कितना विवेक है! दूसरों को खिलौने लेते और मिठाई खाते देखकर इसका मन कितना ललचाया होगा? इतना जब्त इससे हुआ कैसे? वहाँ भी इसे अपनी बुढ़िया दादी की याद बनी रही। अमीना का मन गदगद हो गया।

और अब एक बड़ी विचित्र बात हुई। हामिद के इस चिमटे से भी विचित्र। बच्चे हामिद ने बूढ़े हामिद का पार्ट खेला था। बुढ़िया अमीना बालिका अमीना बन गई। वह रोने लगी। दामन फैलाकर हामिद को दुआएं देती जाती थी और आँसू की बड़ी-बड़ी बूंदें गिराती जाती थी। हामिद इसका रहस्य क्या समझता!

प्रश्न

1. ईदगाह कहानी के रचयिता कौन है?
2. रोजा क्यों रखते हैं?
3. हामिद का स्वभाव कैसा था?
4. हामिद दादा के लिए क्या उपहार लाया?
5. हामिद किसके साथ रहता था?
6. हामिद माता-पिता के साथ क्यों नहीं रहा?

story.indd 108 10-01-2019 10:50:28

7. ईद कब मनाया जाता है?

8. ईद के दिन लोग क्या करते हैं?

9. ईद का मौसम कैसा होता है?

10. ईदगाह कब जाते है?

11. अमीना के दुःख का क्या कारण था?

12. हामिद ने दादी से क्या कहा?

13. अमीना ने अलग से क्या दुआ माँगी?

14. अमीना को फहीमन के कपड़े सीने से कितने पैसे मिले?

15. हामिद किसके साथ मेले में गया?

16. शहर के दोनों ओर क्या था?

17. पेड़ों में क्या-क्या लगी हुई थी?

18. बच्चों ने माली को क्या बनाया?

19. क्लब घर में क्या होता है?

20. महमूद ने क्या कहा?

21. रात में मिठाइयाँ कौन खरीदते हैं?

22. बुढ़िया का क्रोध स्नेह में क्यों बदला?

story.indd 109 10-01-2019 10:50:28

कहानी 18 भाई-बहन

श्रीमती सत्यवती मल्लिक

लेखिका परिचय :



श्रीमती सत्यवती मल्लिक का जन्म सन् 1906 में हुआ । एक आर्यसमाजी परिवार में उनका बचपन बीता । श्रीमती मल्लिक हिंदी की कहानी लेखिकाओं में काफी मशहूर हैं । उनकी कहानियाँ अनुभूति प्रधान हैं । उनकी भाषा-शैली सरल, प्रवाहपूर्ण और स्वाभाविक है । उनकी रचनाओं में 'दो फूल', 'नारी हृदय की साध', 'अमिट रेखायें' आदि प्रसिद्ध है ।

"माजी !.... हाय ! माजी !....हाय !" एक बार, दो बार, पर तीसरी बार 'हाय ! हाय !' की करुण पुकार सावित्री सहन न कर सकी। कारबन -पेपर और डिजाइन की कापी वहीं कुर्सी पर पटक कर शीघ्र ही उसने बाथ-रूम के दरवाजे के बाहर खड़े कमल को गोद में उठा लिया और पुचकारते हुए कहा - बच्चे सबेरे-सबेरे नहीं रोते।

"तो निर्मला मेरा गाना क्यों गाती है? और उसने मेरी सारी कमीज छींटे डालकर क्यों गीली कर दी है!"

स्नानागार में अभी तक पतली-सी आवाज में निर्मला गुनगुना रही थी - "एक..... लड़का.....था.....वह रोता.....रहता"

" बड़ी दुष्ट लड़की है। नहाकर बाहर निकले तो सही, ऐसा पीटूँ कि वह भी जाने।" माँ से यह आश्वासन पाकर कमल कपड़े बदलने चला गया।

न जाने कितनी कामनाओं, भावनाओं और आशीर्वादों को लेकर सावित्री ने अपने भाई के जन्म-दिन पर उपहार भेजने के लिए एक श्वेत रेशमी कपड़े पर तितली का सुंदर डिजाइन खींचा है। हल्के-नीले, सुनहरे और गहरे लाल रंग के रेशम के तारों के साथ ही साथ जाने, कितनी भी मीठी स्मृतियाँ भी उसके अन्तस्थल में उठ-उठ कर बिंधी-सी जा रही हैं, और अनेक वन, पर्वत, नदी, नाले तथा मैदान के पार कहीं दूर से एक मुखाकृति बार-बार नेत्रों

story.indd 110 10-01-2019 10:50:29

के सम्मुख आकर उसके रोम-रोम को पुलकित कर रही है। कभी ऐसी भी लगने लगती है, मानों सामने दीवार पर लटकी हुई नरेंद्र की तस्वीर हँस कर बोल उठेगी। सावित्री की आँखों में प्रेमाश्रु छलक उठे। तितली का एक पंख काढ़ा जा चुका है, किंतु दूसरा आरंभ करने से पूर्व ही कमल की सिसकियों और आँसुओं ने सावित्री को फिर वहाँ से उठने को विवश कर दिया।



स्कूल की चीजों को बैग में डालते हुए निर्मला के निकट खड़े होकर सावित्री ने कहा - निर्मला, तुझे शर्म नहीं आती क्या? इतनी बड़ी हो गई है। पूरे चार वर्ष कमल तुझसे छोटा है। किसी चीज को उसे छूने तक नहीं देती। हर घड़ी वह बेचारा रोता रहता है। अगर तेरे पेन्सल-बक्स को तनिक देख लिया, तो क्या हुआ?

निर्मला सिर नीचा किये मुस्कुरा रही थी। यह देखकर सावित्री का पारा अधिक चढ़ गया। उसने और भी उँचे स्वर में कहना शुरू किया - रानीजी, बड़ी होने पर पता चलेगा, जब इन्हीं दुर्लभ सूरतों को देखने के लिए भी तरसोगी। भाई-बहन सदा साथ-साथ नहीं रहते।

माँ की झिड़कियों ने बालिका के नन्हें मस्तिष्क को एक उलझन में डाल दिया । आश्चर्यान्वित हो वह केवल माँ के क्रुद्ध चेहरे की ओर एक स्थिर, गंभीर, कौतूहलपूर्ण दृष्टि डालकर रह गयी।

करीब आधा घंटा बाद किंचित उदास-सा मुँह लिये निर्मला जब कमल को साथ लेकर स्कूल चली गयी, तब सावित्री को अपनी सारी वक्तृता सारहीन प्रतीत होने लगी। सहसा उसे याद आने लगी, कुछ वर्ष पूर्व की एक बात। तब वह नरेंद्र से क्यों रूठ गयी थी? छि.,एक तुच्छ- सी बात पर.... किंतु आज जो बात तुच्छ जान पड़ती है उन दिनों उसी तुच्छ निष्कृट जरा- सी बात ने इतना उग्र रूप क्यों धारण कर लिया था, जिसके कारण भाई-बहन ने आपस में पूरे महीने तक एक बात भी न की थी। एकाएक सावित्री के चेहरे पर हँसी प्रस्फुटित हो उठी, जब उसे स्मरण हो आया कि नरेंद्र का दिन-रात नये-नये रिकॉर्ड लाकर ग्रामफोन पर बजाना और एक दोस्त से दूरबीन माँगकर आते-जाते

story.indd 111 10-01-2019 10:50:29

बहन के कमरे की ओर झाँकना कि किसी तरह इन दोनों चीजों का प्रभाव सावित्री पर पड़ रहा है या नहीं। उसे यह भी याद करके सूखी हँसी आयी कि कैसे वह मौन धारण किये हुए मिठाई की तश्तरी नरेंद्र के कमरे में रख आती थी ।

* * *

टेबुल-क्लाथ पुनः हाथ में लेकर काढ़ते हुए सावित्री ने मन ही मन प्रतिज्ञा की कि अब से वह बच्चों को बिल्कुल डाँट-फटकार नहीं बताएगी। किंतु इधर बारह बजे आधी छुट्टी में खाने के समय फिर कई अभियोग कमल की ओर से मौजूद थे - 'निर्मला मुझे अपने साथ-साथ नहीं चलने देती, पीछे छोड़ आती है, 'मन्दाकिनीर पूर्व धराये' के बदले 'कमल-किनीर पूर्व धराये' गाना गाती है और गधा कहती है।'

मामला कुछ गंभीर न था ; और दिन होता तो शायद निर्मला की इन शरारतों को सावित्री हँसी समझ कर टाल देती, परंतु यह उद्दंड लड़की सबेरे से ही उसके प्रिय तथा आवश्यक कार्य में बराबर बाधा डाल रही है। एक हल्की चपत निर्मला को लगाते हुए माँ ने डाँट कर कहा - बस, कल ही स्कूल से तेरा नाम कटवा दिया जाएगा। यह सब अंग्रेजी स्कूल की शिक्षा का ही नतीजा है। जरा-सी लड़की ने घर-भर में आफत मचा रखी है। अभी से भाई-बहनों को एक दूसरे की शकल-सूरत नहीं भाती, बड़ी होने पर न जाने क्या-क्या करेगी ? - फिर थाली में पूरी-तरकारी डालकर बच्चों के आगे रखते हुए जरा धीमें स्वर में कहा - देखो, निर्मला, जब मैं तुम्हारे बराबर की थी, तो अपने भाई-बहनों को कभी तंग नहीं करती थी, कभी माता-पिता को दुख नहीं देती थी। किंतु यह बात कहते हुए भीतर ही भीतर सावित्री को कुछ झिझक- सी हो आयी।

* * *

" हम दोनों सीता के घर से जुलूस देखेंगे माँ, अच्छा " - कमल ने विनम्र स्वर में अनुमति चाही ।

" नहीं जी, क्या अपने घर से दिखाई नहीं पड़ता.?"

दरवाजे की ओट में निर्मला खड़ी थी। "कैसे चालाक लड़की है - इसी गरीब को आगे करती है, जब खुद कहना होता है। जाओ, जाना हो तो।" सावित्री ने झुँझलाकर उत्तर दिया।

पाँच बजे मुहर्रम का जुलूस निकलनेवाला था। पल-भर में चौराहे पर सैकड़ों मनुष्यों की भीड़ इकट्ठी हो गयी। सावित्री का ध्यान कभी काले-हरे रंग-बिरंगे वस्त्र पहने जन-समूह की ओर कभी जुलूस के कारण रुकी हुई मोटर गाड़ियों में बैठे हुए व्यक्तियों की ओर अनायास ही खींच रहा था। और इधर बालिका निर्मला के होश-हवाल एकाएक गुम-से हो गये, जब उसे सारे घर में कमल की परछाई तक नजर न आयी, तब व्याकुल-सी हो वह एक कमरे से दूसरे कमरे में और फिर बरामदे में पंखहीन पक्षी की नाईं फड़फड़ाती हुई दौड़ने लगी। उसके बाल-नेत्रों के आगे अंधेरा-सा

story.indd 112 10-01-2019 10:50:29

छा गया। उसे सब कुछ सुनसान-सा प्रतीत होने लगा। वह माँ से कई बार छोटे बच्चों के भीड़-भाड़ में खो जाने का हाल सुन चुकी है। आह.....उसका भैया.... कमल.... वह क्या करें?

नीचे की सड़क पर भाँति-भाँति के रंग-बिरंगे खिलौने, नये-नये ढंग के गुब्बारे, कागज के पंखे, पतंग और भिन्न- भिन्न प्रकार के स्वर निकलते हुए बाजे लाकर बेचनेवालों ने बाल-जगत के प्रति एक सम्मोहन जाल-सा बिछा रखा है। कुछ दूर से मानो नेपथ्य में से डमाढम ढोल-बाजों की ध्वनि बढ़ती आ रही है। निर्मला इन सब चित्ताकर्षक चीजों को बिना देखे-सुने ही भीड़-भाड़ को चीरती हुई वेगपूर्वक भागती-भागती, सीता के घर से भी हो आयी, पर कमल तो वहाँ भी नहीं है। रोते-रोते निर्मला की आँखें सूज गईं । चेहरे का रंग सफेद पड़ गया। आखिर हिचकियाँ लेते हुए, रुँधे गले से माँ के पास जाकर कहा - क....मल....कमल तो सीता के घर भी नहीं है।

सावित्री का तन-बदन एक बार सहसा काँप उठा। क्षण-भर में भीड़, मोटरों और गाड़ियों के भय से कई अनिष्ट आशंकाएँ उसकी आँखों के आगे घूम-सी गईं, किंतु वह अपने भीरु लड़के की नस-नस से परिचित थी। उसे पूरा विश्वास था कि कमल जरूर ही कहीं न कहीं किसी दुकान पर खड़ा होकर अथवा किसी नौकर के साथ जुलूस देख रहा होगा, फिर भी उसने फूटफूटकर रोती हुई निर्मला को हृदय से नहीं लगाया और न उसे धीरज बँधाया, बल्कि वह आश्चर्यचकित-सी हो, मानो अपनी लड़की की रुलाई को समझने का प्रयत्न कर रही थी। रह-रहकर एक सन्देह-सा उसके मन में उठने लगा - " मुझ से भी अधिक - भला, माँ के दिल से भी ज्यादा - किसी और को दर्द-चिंता हो सकती है? और यह निर्मला तो दिन-रात कमल को सताया करती है!"

जुलूस समाप्त हो गया। क्रमशः दर्शकों के झुंड भी छिन्न-भिन्न होने लगे। मोटर-गाड़ियों का धड़ाधड़ आना-जाना पूर्ववत् जारी हो गया। और सामने ही फुटपाथ पर सफेद निकर और सफेद कमीज पहने, पड़ोसी डॉक्टर साहब के नौकर के हाथ में हाथ लटकाये कमलकिशोर घर आता हुआ दिखाई दिया।

सीढ़ियों में से फिर सिसकने की आवाज सुनकर सावित्री ने देखा, तो मंत्रमुग्ध-सी रह गयी । कमल ! कमल को दृढ़ पाश में बाँधे निर्मला दुगुने वेग से रो रही है। उसके कोमल गुलाबी गाल मोटे-मोटे आँसुओं से भीगे जा रहे हैं और वह बार-बार कमल का मुख चूम-चूमकर कह रही है - " पगला ! तू कहाँ चला गया था ? गधा! तू क्यों अकेला चला गया था ? "

सावित्री का हृदय उमड़ आया ; पुनीत प्रेम के इस दृश्य को देखकर एक आनंद की धारा-सी उसके अन्तस्तल में बहने लगी। झरते हुए आँसुओं के साथ उसने कमल की जगह निर्मला को छाती से लगाकर उसका मुँह चूम लिया और कहा - बेटा, बहन को प्यार करो। देखो, वह तुम्हारी खातिर कितना रोयी है ? तुम बिना कहे क्यों चले जाते हो ?

story.indd 113 10-01-2019 10:50:29

निर्मला का इतना आदर होते देख कमल बोल उठा - " तो क्या मैं वहाँ नहीं रोया था .?"

" तुम क्यों रोये थे जी ?" - माँ ने कौतूहलवश पूछा।

" मुझे गुब्बारा लेना था, पैसा नहीं था।"

निर्मला ने दौड़कर अपनी जमा की हुई चवन्नी के पैसे से दो गुब्बारे और दो कागज के खिलौने कमल को ला कर दिये और एक बार फिर से भुजाओं में जकड़कर कहा - गधा, तू अकेला क्यों चला गया ?

.....

I. एक या दो वाक्यों में उत्तर लिखिए ।

1. भाई – बहन कहानी के कहानीकार का नाम क्या है ?
2. सावित्री भाई के जन्म दिवस पर क्या उपहार देना चाहती थी ?
3. सावित्री के बेटे और बेटी के नाम बताइए ।
4. कमल ने माँ से किसकी शिकायत की ?
5. माँ ने निर्मला को क्या समझाया ?
6. कमल ने अपनी माँ से क्या देखने के लिए अनुमति माँगी ?
7. जुलूस कितने बजे निकलनेवाला था ?
8. निर्मला क्यों बेचैन हो रही थी ?
9. निर्मला सीता के घर की तरफ क्यों भागी ?
10. कमल गुम गया तो निर्मला ने माँ से क्या कहा ?
11. सावित्री को किस बात का विश्वास था ?
12. रोती हुई निर्मला को देखकर सावित्री क्या करने लगी ?
13. सावित्री के मन में कौन सा संदेह उठने लगा ?
14. कमल कैसे घर लौटा ?
15. कमल को देखकर निर्मला ने क्या कहा ?
16. किस दृश्य को देखकर सावित्री के मन में आनंद की धारा उमड़ी ?
17. सावित्री ने कमल से क्या कहा ?

story.indd 114 10-01-2019 10:50:29

18. कमल ने माँ को क्या जवाब दिया ?

19. निर्मला ने चवन्नी में क्या-क्या खरीदकर कमल को दिया ?

20. निर्मला कमल के साथ क्या-क्या करती थी ?

II. पाँच वाक्यों में उत्तर लिखिए ।

1. सावित्री के बारे में पाँच वाक्य लिखिए ।

2. कमल और निर्मला क्या-क्या करते थे ?

3. सावित्री निर्मला को कैसे समझाती थी ?

4. निर्मला के बेचैन होने का कारण क्या था ?

5. सावित्री ने अंत में कमल से क्या कहा ?

कठिन शब्दार्थ

पुचकारना – प्यार जताना

उपहार – भेंट

श्वेत – सफ़ेद

विवश – लाचार

तनिक – थोडा

गुब्बारे – थैली जिसमें हवा भरकर आकाश में उड़ाते हैं

तरसना – तड़पना

झिड़की – डाँट

तश्तरी – छोटी थाली

अभियोग – शिकायत

नतीजा – फल, परिणाम

नेपथ्य – परदे के पीछे

story.indd 115 10-01-2019 10:50:29

कहानी 19 शरणागत

श्री वृन्दावनलाल वर्मा

लेखक परिचय :-



वृन्दावनलाल वर्मा हिंदी के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार और कहानी लेखक हैं । उनकी अधिकांश रचनाएँ इतिहास की पृष्ठभूमि पर लिखी हुई हैं । वे सामाजिक कहानियाँ लिखने में भी कम प्रसिद्ध नहीं हैं । उनकी रचनाओं में झाँसी रानी, मृगनयनी आदि की बड़ी धूम मची है।

रज्जब जब अपना रोजगार करके ललितपुर लौट रहा था,साथ में स्त्री थी, और गाँठ में दो-तीन सौ की बड़ी रकम। मार्ग बीहड़ था और सुनसान ! ललितपुर काफी दूर था, बसेरा कहीं न कहीं लेना था, इसलिए उसने मडपुरा नामक गाँव में ठहर जाने का निश्चय किया। उसकी पत्नी को बुखार हो आया था, रकम पास में थी और बैलगाड़ी किराये पर करने में खर्चा ज्यादा पड़ता, इसलिए रज्जब ने उस रात आराम कर लेना ही ठीक समझा ।

परन्तु ठहरता कहाँ ? जाति छिपाने से काम नहीं चल सकता था । उसकी पत्नी नाक और कानों में चाँदी की बालियाँ डाले थी, और पाजामा पहने थी । इसके सिवा गाँव के बहुत-से लोग उसको पहचानते भी थे । वह उस गाँव के बहुत-से कर्मण्य और अकर्मण्य ढोर खरीदकर ले जा चुका था ।

अपने व्यवहारियों से उसने रात-भर के बसेरे के लायक स्थान की याचना की ।किसी ने भी मंजूर न किया । इन लोगों ने अपने ढोर रज्जब को अलग-अलग और लुके-छिपे बेचे थे । ठहराने में तुरन्त ही तरह-तरह की खबरें फैलतीं, इसलिए सबों ने इनकार कर दिया ।

गाँव में एक गरीब ठाकुर रहता था । थोड़ी-सी जमीन थी, जिसको किसान जोते हुए थे। निज का हल-बैल

story.indd 116 10-01-2019 10:50:29

कुछ भी न था। लेकिन अपने किसानों से दो-तीन साल का पेशगी लगाम वसूल कर लेने में ठाकुर को किसी विशेष बाधा का सामना नहीं करना पड़ता था। छोटा-सा मकान था, परंतु उसको गाँववाले 'गढ़ी' के आदर-व्यंजक शब्द से पुकारा करते थे, और ठाकुर को डर के मारे 'राजा' शब्द से संबोधित करते थे।

शामत का मारा रज्जब इसी ठाकुर के दरवाजे पर अपनी ज्वरग्रस्त पत्नी को लेकर पहुँचा।

ठाकुर पौर में बैठा हुक्का पी रहा था। रज्जब ने बाहर से ही सलाम करके कहा - दाऊजू एक विनती है।

ठाकुर ने बिना रत्ती-भर इधर-उधर हिले-डुले पूछा, "क्या?"

रज्जब बोला - मैं दूर से आ रहा हूँ । बहुत थका हुआ हूँ । मेरी औरत को जोर से बुखार आ गया है। जाड़े में बाहर रहने से न जाने इसकी क्या हालत हो जाएगी। इसलिए रात-भर के लिए कहीं दो हाथ जगह दे दी जाए।

" कौन लोग हो ?" ठाकुर ने प्रश्न किया ।

" हूँ तो कसाई।" रज्जब ने सीधा उत्तर दिया । उसके चेहरे पर बहुत गिड़गिड़ाहट थी।

ठाकुर की बड़ी आँखों में कठोरता छा गई। बोला - जानता है, यह किसका घर है? यहाँ तक आने की हिम्मत कैसे की तूने ?

रज्जब ने आशा-भरे स्वर में कहा - यह राजा का घर है । ।इसलिए शरण में आया हूँ ।

तुरन्त ठाकुर की आँखों की कठोरता गायब हो गयी । जरा नरम स्वर में बोला - किसी ने तुमको बसेरा नहीं दिया ?

" नहीं महाराज!" रज्जब ने उत्तर दिया - बहुत कोशिश की, परंतु मेरे खोटे पेशे के कारण कोई सीधा नहीं हुआ। और वह दरवाजे के बाहर ही एक कोने में चिपटकर बैठ गया। पीछे उसकी पत्नी कराहती, काँपती हुई गठरी-सी बनकर सिमट गयी ।

ठाकुर ने कहा - तुम अपनी चिलम लिये हो?

" हाँ, सरकार !" रज्जब ने उत्तर दिया।

ठाकुर बोला - तब भीतर आ जाओ और तमाखू अपनी चिलम से पी लो। अपनी औरत को भी भीतर कर लो । हमारी पौर के एक कोने में पड़े रहना।

story.indd 117 10-01-2019 10:50:29

जब वे दोनों भीतर आ गये, ठाकुर ने पूछा - तुम कब यहाँ से उठ कर चले जाओगे ? जवाब मिला - अंधेरे में ही महाराज ! खाने के लिए रोटियाँ बाँधे हूँ, इसलिए पकाने की जरूरत न पड़ेगी ।

"तुम्हारा नाम ?"

" रज्जब ।"

(2)

थोड़ी देर बाद ठाकुर ने रज्जब से पूछा - कहाँ से आ रहे हो?

रज्जब ने स्थान का नाम बतलाया ।

" वहाँ किसलिए गए थे ?"

" अपने रोजगार के लिए।"

" काम तो तुम्हारा बहुत बुरा है।"

" क्या करूँ, पेट के लिए करना ही पड़ता है। परमात्मा ने जिसके लिए जो रोजगार मुकर्रर किया है, वही उसको करना पड़ता है।"

" क्या नफा हुआ ?" प्रश्न करने में ठाकुर को जरा संकोच हुआ और प्रश्न का उत्तर देने में रज्जब को उस से बढ़कर।

रज्जब ने जवाब दिया - महाराज, पेट के लायक कुछ मिल गया है, यों ही । ठाकुर ने इसपर कोई जिद नहीं की।

रज्जब ने कहा - बड़े भोर उठकर चला जाऊँगा । तब तक घरवाली की तबीयत भी अच्छी हो जाएगी। इसके बाद दिन-भर के थके हुए, पति-पत्नी सो गये । काफी रात गये कुछ लोगों ने एक बँधे इशारे से ठाकुर को बाहर बुलाया। एक फटी-सी रजाई ओढ़े ठाकुर निकल आया। आगंतुकों में से एक ने धीरे से कहा - दाऊजी, आज तो खाली हाथ लौटे हैं ।कल संध्या का सगुन बैठा है।

ठाकुर ने कहा - आज जरूरत थी। खैर, कल देखा जाएगा। क्या कोई उपाय किया था?

story.indd 118 10-01-2019 10:50:29

" हाँ " आगंतुक बोला - एक कसाई रुपये की मोट बाँधे इसी ओर आया है। परंतु हम लोग जरा देर में पहुँचे। वह खिसक गया। कल देखेंगे, जरा जल्दी।

ठाकुर ने घृणासूचक स्वर में कहा - कसाई का पैसा न छुएँगे।

" क्यों ?"

"बुरी कमाई है।"

" उसके रुपयों पर कसाई थोड़े ही लिखा है?"

" परंतु उसके व्यवसाय से वह रूपया दूषित हो गया है।"

" रुपया तो दूसरों का ही है। कसाई के हाथ में आने से रुपया कसाई नहीं हुआ।"

" मेरा मन नहीं मानता, वह अशुद्ध है।"

" हम अपनी तलवार से उसको शुद्ध कर लेंगे।"

ज्यादा बहस नहीं हुई। ठाकुर ने कुछ सोचकर अपने साथियों को बाहर का बाहर ही टाल दिया।

भीतर देखा, कसाई सो रहा था और उसकी पत्नी भी ।

ठाकुर भी सो गया।

(3)

सबेरा हो गया, परंतु रज्जब न जा सका। उसकी पत्नी का बुखार तो हल्का हो गया था, परंतु शरीर-भर में पीड़ा थी, और वह एक कदम भी नहीं चल सकती थी।

ठाकुर उसे वहीं ठहरा हुआ देखकर कुपित हो गया। रज्जब से बोला - मैंने खूब मेहमान इकट्ठे किए हैं। गाँव-भर थोड़ी देर में तुम लोगों को मेरी पौर में टिका हुआ देखकर तरह-तरह की बकवास करेगा। तुम बाहर जाओ, इसी समय।

रज्जब ने बहुत विनती की, परंतु ठाकुर न माना। यद्यपि गाँव-भर उसके दबदबे को मानता था, परंतु अव्यक्त लोकमत का दबदबा उसके भी मन पर था। इसलिए रज्जब गाँव के बाहर सपत्नीक एक पेड़ के नीचे जा बैठा और हिंदू मात्र को मन ही मन कोसने लगा।

story.indd 119 10-01-2019 10:50:29

उसे आशा थी कि पहर-आधा पहर में उसकी पत्नी की तबीयत इतनी स्वस्थ हो जाएगी कि वह पैदल यात्रा कर सकेगी। परंतु ऐसा न हुआ, तब उसने एक गाड़ी किराये पर कर लेने का निर्णय किया।



मुश्किल से एक चमार काफी किराया लेकर ललितपुर गाड़ी ले जाने के लिए राजी हुआ। इतने में दोपहर हो गया। उसकी पत्नी को जोर का बुखार हो आया । वह जाड़े के मारे थर-थर काँप रही थी, इतनी कि रज्जब की हिम्मत उसी समय ले जाने की न पड़ी । गाड़ी में अधिक हवा लगने के भय से रज्जब ने उस समय तक के लिए यात्रा को स्थगित कर दिया, जब तक कि उस बेचारी की कम से कम कँपकँपी बन्द न हो जाए।

घंटे-डेढ़ घंटे बाद उसकी कँपकँपी बंद हो गयी, परंतु ज्वर बहुत तेज हो गया। रज्जब ने अपनी पत्नी को गाड़ी में डाल दिया, और गाड़ीवान से जल्दी चलने को कहा।

गाड़ीवान बोला - दिन भर तो यहीं लगा दिया। अब जल्दी चलने को कहते हो!

रज्जब में मिठास के स्वर में उससे फिर जल्दी करने के लिए कहा।

वह बोला - इतने किराये में काम नहीं चल सकेगा। अपना रुपया वापस लो ।मैं तो घर जाता हूँ।

रज्जब ने दाँत पीसे । कुछ क्षण चुप रहा। सचेत होकर कहने लगा - भाई, आफत सबके ऊपर आती है। मनुष्य मनुष्य को सहारा देता है, जानवर तो देते नहीं। तुम्हारे भी बाल-बच्चे हैं। कुछ दया के साथ काम लो ।

story.indd 120 10-01-2019 10:50:30

कसाई को दया पर व्याख्यान देते सुनकर गाड़ीवान को हँसी आ गई।

उसको टस-से-मस न होता देख कर रज्जब ने और पैसे दिये। तब उसने गाड़ी हाँकी ।

(4)

पाँच-छः मील चलने के बाद सन्ध्या हो गई। गाँव कोई पास में न था। रज्जब की गाड़ी धीरे-धीरे चली आ रही थी। उसकी पत्नी बुखार में बेहोश-सी थी। रज्जब ने अपनी कमर टटोली, रकम सुरक्षित बँधी पड़ी थी।

रज्जब को स्मरण हो आया की पत्नी के बुखार के कारण अंटी का कुछ बोझ कम कर देना पड़ा है - और स्मरण हो आया गाड़ीवान का वह हठ, जिसके कारण उसको कुछ पैसे व्यर्थ ही और दे देने पड़े थे। इससे गाड़ीवान पर क्रोध था, परंतु उसके प्रकट करने की उस समय उसके मन में इच्छा न थी।

बातचीत कर के रास्ता काटने की कामना से उसने वार्तालाप आरंभ किया -

"गाँव तो यहाँ से दूर मिलेगा?"

"बहुत दूर, यहीं ठहरेंगे ।"

"किसके यहाँ ?"

" किसी के यहाँ भी नहीं। पेड़ के नीचे। कल सबेरे ललितपुर चलेंगे।"

" कल का फिर पैसा माँग न उठना।"

" कैसे माँग उठूँगा ? किराया ले चुका हूँ । अब फिर कैसे माँगूँगा?"

" जैसे आज गाँव में हठ करके माँगा था । बेटा, ललितपुर होता तो बतला देता।"

" क्या बतला देते ? क्या सेंत-मेंत ही गाड़ी में बैठना चाहते थे?"

" क्या बे, क्या रुपए देकर भी सेंत-मेंत का बैठना कहलाता है?" जानता है, मेरा नाम रज्जब है। अगर बीच में गड़बड़ करेगा, तो साले को यहीं छुरे से काटकर कहीं फेंक दूँगा, और गाड़ी लेकर ललितपुर चल दूँगा।

रज्जब क्रोध को प्रकट नहीं करना चाहता था, परंतु शायद अकारण वह भली भाँति प्रकट हो गया ।

गाड़ीवान ने इधर-उधर देखा, अँधेरा हो गया था । चारों ओर सुनसान था। आसपास झाड़ी खड़ी थी। ऐसा जान पड़ता था, कहीं से कोई अब निकला, तब निकला। रज्जब की बात सुनकर उसकी हड्डी काँप गई। ऐसा जान पड़ा, मानो पसलियों को उसकी ठंडी छुरी छू रही हो।

story.indd 121 10-01-2019 10:50:30

गाड़ीवान चुपचाप बैलों को हाँकने लगा। उसने सोचा - गाँव के आते ही गाड़ी छोड़कर नीचे खड़ा हो जाऊँगा, और हल्लागुल्ला करके गाँववालों की मदद से अपना पीछा रज्जब से छुड़ाऊँगा । रुपये-पैसे भले ही वापस कर दूँगा, परंतु और आगे न जाऊँगा। कहीं सचमुच यह मार्ग में मार न डाले।

(5)

गाड़ी थोड़ी दूर और चली होगी कि बैल ठिठककर खड़े हो गये । रज्जब सामने न देख रहा था, इसलिए जरा कड़ककर गाड़ीवान से बोला - क्यों बे, बदमाश, सो गया क्या?

अधिक कड़क के साथ सामने रास्ते पर खड़ी हुई एक टुकड़ी में किसी के कठोर कण्ठ से निकला - खबरदार, जो आगे बढ़ा।

रज्जब ने सामने देखा कि चार-पाँच आदमी बड़े-बड़े लट्ठ बाँधकर न जाने कहाँ से आ गये हैं। उनमें से तुरंत ही एक ने बैलों की जुआरी पर एक लट्ठ पटका और दो दायें-बायें आकर रज्जब पर आक्रमण करने को तैयार हो गये ।

गाड़ीवान गाड़ी छोड़कर नीचे जा खड़ा हुआ। बोला - मालिक, मैं तो गाड़ीवान हूँ । मुझे कोई सरोकार नहीं।

" यह कौन है?" एक ने गरजकर पूछा।

गाड़ीवान की घिग्घी बँध गई। कोई उत्तर न दे सका । रज्जब ने कमर की गाँठ को एक हाथ से सँभालते हुए बहुत ही विनम्र स्वर में कहा - मैं बहुत ही खराब आदमी हूँ । मेरे पास कुछ नहीं है। मेरी औरत गाड़ी में बीमार पड़ी है। मुझे जाने दीजिए।

उन लोगों में से एक ने रज्जब के सिर पर लाठी उबारी। गाड़ीवान खिसकना चाहता था कि दूसरे ने उसको पकड़ लिया।

अब उसका मुँह खुला । बोला - महाराज, मुझको छोड़ दो। मैं तो किराये से गाड़ी लिए जा रहा हूँ । गाँठ में खाने के लिए तीन-चार आने पैसे ही हैं।

" और यह कौन है? बतला" । उन लोगों में से एक ने पूछा।

गाड़ीवान ने तुरंत उत्तर दिया - ललितपुर का एक कसाई ।

रज्जब के सिर पर जो लाठी उबारी गयी थी, वह वहीं रह गयी । लाठी वाले के मुँह से निकला - तुम कसाई हो ? सच बतलाओ।

story.indd 122 10-01-2019 10:50:30

" हाँ महाराज! " रज्जब ने सहसा उत्तर दिया - मैं बहुत गरीब हूँ । हाथ जोड़ता हूँ, मुझको मत सताओ । मेरी औरत बहुत बीमार है।

औरत जोर से कराही।

लाठीवाले उस आदमी ने एक साथी से कान में कहा - इसका नाम रज्जब है। छोड़ो, चलें यहाँ से।

उसने न माना, बोला - इसका खोपड़ा चकनाचूर करो दाऊजू, यदि वैसे न माने तो । कसाई-असाई हम कुछ नहीं मानते।

" छोड़ना ही पड़ेगा।" उसने कहा - इसपर हाथ नहीं पसारेंगे और न इसका पैसा छुएँगे ।

दूसरा बोला - क्या कसाई होने के डर से ? दाऊजू, आज तुम्हारी बुद्धि पर पत्थर पड़ गये हैं, मैं देखता हूँ । और वह तुरंत लाठी लेकर गाड़ी में चढ़ गया। लाठी का एक सिरा रज्जब की छाती में अड़ाकर उसने तुरंत रुपया-पैसा

निकालकर देने का हुक्म दिया। नीचे खड़े हुए उस व्यक्ति ने जरा तीव्र स्वर में कहा - नीचे उतर आओ। उससे मत बोलो। उसकी औरत बीमार है।

" हो, मेरी बला से।" गाड़ी में चढ़े हुए लठैत ने उत्तर दिया - मैं कसाईयों की दवा हूँ । और उसने रज्जब को फिर धमकी दी।

नीचे खड़े हुए व्यक्ति ने कहा - खबरदार, जो उसे छुआ । नीचे उतरो, नहीं तो तुम्हारा सिर चूर किए देता हूँ । वह मेरी शरण में आया था।

गाड़ीवान लठैत झक-सी मारकर नीचे उतर आया ।

नीचेवाले व्यक्ति ने कहा - सब लोग अपने अपने घर जाओ। राहगीरों को तंग मत करो। फिर गाड़ीवान से बोला - जा रे, हाँक ले जा गाड़ी । ठिकाने तक पहुँचा आना तब लौटना, नहीं तो अपनी खैर मत समझियो । और तुम दोनों में से किसी ने भी कभी इस बात की चर्चा कहीं की, तो भूसी की आग में जलाकर खाक कर दूँगा ।

गाड़ीवान गाड़ी लेकर बढ़ गया। उन लोगों में से जिस आदमी ने गाड़ी में चढ़कर रज्जब के सिर पर लाठी तानी थी, उसने क्षुब्ध स्वर में कहा - दाऊजू, आगे से कभी आपके साथ न आऊँगा।

दाऊजू ने कहा - न आना । मैं अकेला ही बहुत कर गुजरता हूँ । परंतु, बुंदेला शरणागत के साथ घात नहीं करता, इस बात को गाँठ बाँध लेना।

story.indd 123 10-01-2019 10:50:30

I. एक या दो वाक्यों में उत्तर लिखिए ।

1. शरणागत कहानी के लेखक का नाम बताइए ।
2. शरणागत कहानी के मुख्य पात्रों के नाम लिखिए ।
3. रज्जब कौन था ?
4. रज्जब व्यापार करके कहाँ लौट रहा था ?
5. रज्जब के साथ कौन थी और उसके पास कितनी रकम थी ?
6. रज्जब की पत्नी को क्या हुआ था ?
7. रज्जब ने कहाँ ठहरने का निश्चय किया ?
8. मडपुरा गाँव में कौन रहता था ?
9. लोग डर के कारण ठाकुर को कैसे बुलाते थे ?
10. रज्जब ने रात-भर ठहरने के लिए किससे शरण मांगी ?
11. ठाकुर ने रज्जब को क्या चेतावनी दी ?
12. आधी रात में लोगों ने किसको बुलाया ?
13. ठाकुर लोगों के साथ मिलकर क्या करता था ?
14. लोगों ने ठाकुर को किसके बारे में बताया ?
15. ठाकुर का जवाब क्या था ?
16. ठाकुर ने लोक मत के डर से किसको घर से निकल दिया ?
17. कौन ललितपुर तक कितने किराये पर ले जाने को राजी हुआ ?
18. रज्जब की स्त्री क्यों ठिठुरने लगी ?
19. रज्जब ने गाड़ीवान को धमकाते हुए क्या कहा ?
20. लोगों के गाड़ी को रोकने पर गाड़ीवान ने क्या बताया ?
21. गाड़ीवान की बात सुनकर लोगों ने क्या जवाब दिया ?
22. शरणागत के साथ कौन घात नहीं करता ?
23. किसने गाड़ीवान को ताकीद दी ?

story.indd 124 10-01-2019 10:50:30

II. पाँच वाक्यों में उत्तर लिखिए ।

1. रज्जब के बारे में पाँच वाक्य लिखिए ।
2. ठाकुर के बारे में पाँच वाक्य लिखिए ।
3. रज्जब और उसकी स्त्री ने रात में ठहरने का क्यों निश्चय किया ?
4. ठाकुर ने रज्जब को क्या कहकर शरण दी ?
5. रज्जब क्यों ललितपुर के लिए निकल पड़ा ?
6. बुंदेला ने रज्जब के साथ किस प्रकार का व्यवहार किया ?

story.indd 125 10-01-2019 10:50:30

20 रस

रस रसमयी है। काव्यं रसात्मकं आनंदमय है।

दर्शक, पाठक अथवा श्रोता के मन में रति, उत्साह आदि भाव स्थायी रूप से उसी प्रकार छिपे रहते हैं, जिस प्रकार बीज धरती में छिपा रहता है । बीज को उगने के लिए नमी की आवश्यकता होती है । स्थायी भाव को भी जाग्रत होने के लिए अनुकूल वातावरण अपेक्षित होता है । विभाव, अनुभाव और संचारी भाव के रूप में स्थायी भाव को वह वातावरण मिल जाता है । इनके सहारे से स्थायी भाव जिस अलौकिक आनंद का अनुभव करता है, उसी को रस कहा गया है ।

विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भावों के संयोग से रस की निष्पति होती है ।

स्थायी भाव – स्थायी भाव से अभिप्राय मानव के मन में सामान्यतः सदैव विद्यमान रहनेवाले उन भावों से है, जिनको अनुकूल और प्रतिकूल भाव दबा अथवा छिपा नहीं सकते। इन भावों की संख्या नौ मानी गयी है ।

	स्थायी भाव का नाम	संबंधित रस का नाम
1	रति	श्रृंगार
2	शोक	करुण
3	उत्साह	वीर
4	क्रोध	रौद्र
5	हास	हास्य
6	भय	भयानक
7	घृणा	बीभत्स
8	विस्मय	अद्भुत
9	निर्वेद	शांत

विभाव - मानव अपने हृदय में स्थित काम, क्रोध, भय आदि भावों का अनुभव विशेष कारण से करता है, जो कारण इन भावों को जाग्रत करते हैं वे विभाव कहलाते हैं ।

आलंबन विभव – वह पात्र जिसको देखकर या जिसकी बातें सुनकर किसी दूसरे पात्र के हृदय में स्थित भाव

grammer.indd 126 10-01-2019 11:06:09

उद्बुद्ध होता है, आलंबन विभाव कहलाता है । उदाहरण के लिए यदि शकुन्तला को देखकर दुष्यंत के हृदय में रति-भाव उद्बुद्ध होता है दिखाया जाता है अथवा दुर्योधन की गर्व भरी बातें सुनकर भीमसेन के हृदय में उसका मान –मर्दन करने का उत्साह जाग्रत हो तो इन उदाहरणों में क्रमशः 'शकुन्तला' और दुर्योधन आलंबन विभाव कहलायेंगे ।

उद्दीपन विभाव - किसी पात्र की जिन चेष्टाओं, बातों तथा प्राकृतिक तथ्यों के कारण आश्रय के हृदय में जाग्रत हुआ स्थायी भाव और भी अधिक उद्दीप्त होता है ऐसी बातें उद्दीपन विभाव कहलाती हैं ।

संचारी भाव - संचारी भावों को व्यभिचारी भाव भी कहते हैं ।

श्रृंगार रस

श्रृंगार नारी का आभूषण ।

श्रृंगार रस का अर्थ काम-भाव की दशा को प्राप्त होना होता है । इसकी निष्पति के लिए उत्तम स्वभाव के नायक - नायिका की स्थिति आवश्यक होती है –

" राम को रूप निहारति जानकी, कंकन के नग की परछाहीं ।

यातें सबै सुधि भूल गई, कर टेकि रहीं पल टारति नाहीं" ॥

विवाह के अवसर पर सीताजी अपने कंगन में जटित नग में राम की शोभा को निरखकर अपनी सुध-बुध भुला बैठी और उनकी शोभा को बिना पलक झपकाए देखने लगीं ।

सीता – आश्रय है ।

राम की सुन्दरता – उद्दीपन विभाव है ।

श्रृंगार रस के निम्न दो भेद होते हैं –

संयोग श्रृंगार - जहाँ नायक और नायिका के परस्पर मिलन का वर्णन हो अर्थात् वे एक साथ हों, वहाँ संयोग श्रृंगार होता है ।

वियोग श्रृंगार - जब किसी कारणवश नायक और नायिका एक – दूसरे से बिछुड़कर अपने दूसरे साथी की मधुर स्मृति में तड़पते हैं तो वहाँ वियोग श्रृंगार होता है ।

उदा : बिनु गुपाल बैरिन भई कुंजै ।

grammer.indd 127 10-01-2019 11:06:09

तब ये लता लगति अति शीतल,

अब भई विषम ज्वाल की पुंजैं ।

पवन पानि घनसार सजीवन,

उडुपति किरन भानु भई भुजैं ।

ऐ उधव कहियो माधव सों,

विरह करद - सी मारत लुजैं ।

सूरदास प्रभु तुम्हरे दास को,

अँखियाँ भई बरन ज्यों गुंजैं ॥

स्पष्टीकरण - प्रस्तुत उद्धरण में विरहिणी गोपियाँ आश्रय हैं, जबकि गोकुल छोड़कर मथुरा चले गये श्रीकृष्ण आलंबन हैं । वे लताएँ जिनके कुंजों में गोपियों ने कभी श्रीकृष्ण के साथ मधुर लीलाएँ की थीं, उद्दीपन हैं । गोपियों की लुंज – पुंजों जैसी दशा तथा आँखों का धुंधचियों जैसा लाल हो जाना अनुभाव है ।

करुण रस

किसी की वेदना या दुःख को देखकर उत्पन्न होनेवाला भाव करुणा है ।

प्रिय व्यक्ति या वस्तु के स्थायी वियोग की दशा में करुण रस देखा जाता है ।

उदा: "अभी तो मुकुट बँधा था माथ,

हुए कल ही हल्दी के हाथ ।

खुले भी थे न लाज के बोल,

खिले न थे चुम्बन शून्य कपोल ।

हाय ! रुक गया यहीं संसार,

बना सिंदूर, अनले श्रृंगार" ।

आलंबन विभाव – विधवा हुई नवविवाहिता । आश्रय – उस विधवा का कोई संबंधी ।

उद्दीपन विभाव – उसकी माँग का सिन्दूर पोंछ देना, उसकी विधवा जैसी वेश – भूषा ।

अनुमान - 'हाय' आदि कहते हुए रो उठना ।

grammer.indd 128 10-01-2019 11:06:09

संचारी भाव – चिंता और विषाद आदि । यहाँ शोक स्थायी भाव की करुण रस में निष्पति हो रही है ।

वीर रस

उत्साह का भावुक रूप वीर रस है ।

वीर रस के आचार्यों ने चार भेद माने हैं -

1. युद्ध वीर
2. दानवीर
3. धर्मवीर
4. दयावीर

यहाँ वीर रस के प्रमुख भेद युद्धवीर की निष्पति पर प्रकाश डाला जा रहा है । जहाँ किसी कारण से उत्साह बढ़ता है, वहाँ युद्धवीर रस की निष्पति होती है ।

उदाहरण : "सुनह भानुकुल पंकज भानू।
कहौं सुभाव न कछु अभिमान् ॥
जो राउर अनुशासन पाऊँ ।
कंदुक इव ब्रह्माण्ड उठाऊँ ॥
काँचे घट जिमि डारौं फोरी ।
सकौं मेरु मूलक इव तोरी ॥

आलंबन विभाव – राजा जनक, शिव-धनुष

आश्रय – लक्ष्मण

उद्दीपन विभाव – रजा जनक की बातें

अनुभाव – लक्ष्मण की गर्वोक्तियाँ

संचारी भाव – उग्रता, आतुरता आदि

यहाँ लक्ष्मण के हृदय में उत्साह नामक स्थायी भाव की वीर रस के रूप में निष्पति हो रही है ।

grammer.indd 129 10-01-2019 11:06:09

21 सूचना के अनुसार बदलिए

1. राम ने रावण को मारा । (वाच्य बदलिए)

2. पुलिस आयी । लोग भाग गये । (जब.....तब का प्रयोग कीजिये)

3. जल्दी जाओ । तभी गाड़ी पकड़ सकते हो । (वाक्य जोड़कर लिखिए)

4. आज रेलगाड़ी देर से आती होगी । (संदिग्ध भूतकाल में लिखिए)

5. मैं कलम चाहता हूँ । (चाहिए का प्रयोग कीजिए)

6. मैंने ख़त लिखा । (क्रिया को प्रेरणार्थक में बदलिए)

7. पुलिस ने चोर को पकड़ा । (सामान्य वर्तमान काल में लिखिए)

8. वे ऊटी से आ रहे हैं । ('वे' के बदले 'तू' का प्रयोग कीजिये)

9. वह हँसता है । (भूतकाल में लिखिए)

10. कल खूब पानी बरसा । (भविष्य काल में लिखिए)

11. सीता रोटी खाती है । ('सीता' के स्थान पर 'राम' का प्रयोग कीजिये)

12. आप पाठ पढ़ते हैं । (अपूर्ण भूतकाल में लिखिए)

13. माताजी खाना बनाती हैं । (अपूर्ण वर्तमान काल में लिखिए)

14. राम अच्छा पढ़ता है । (संदिग्ध वर्तमान काल में लिखिए)

15. वह कपड़ा धो रहा है ।(लिंग बदलिए)

16. किसान गाँव में रहता है ।(वचन बदलिए)

17. लोग तीर्थयात्रा करते हैं । (पूर्ण भूतकाल में लिखिए)

18. मैं मेरा घर गया । ('अपना' का प्रयोग कीजिये)

19. वे तरकारियाँ खरीदते हैं । (आसन्न भूतकाल में लिखिए)

20. विमला ने चित्र बनाया ।('विमला' के स्थान पर 'राधा' का प्रोयोग कीजिये)

grammer.indd 130 10-01-2019 11:06:09

22 शुद्ध कीजिए

1. हर एक हिन्दुस्तानी हिंदी जानना चाहिए ।

2. मुझे तीन भाई है ।

3. सब लोग उसको तारीफ़ करते हैं ।

4. तुम तुम्हारा नाम बताओ ।

5. राम ने गोपाल से एक रूपया पूछा ।

6. महाराज दशरथ की तीन रानियाँ थीं ।

7. हम हिंदी पढ़ना जरूर है ।

8. मैं मेरे घर पहुँचने से पहले वह चला गया ।

9. तुम वहाँ जाना पड़ोगे ।

10. राम ने आज आने को बोला ।

11. लड़की तीन दिन के लिए बीमार थी ।

12. वहाँ ठंडा हवा चलता है ।

13. बड़ों को आदर करो ।

14. लड़के ने किताब लाया ।

15. उस लड़की की नाम क्या है ?

16. मेरा घर स्कूल का पास है ।

17. हम मन लगाकर पढ़ना चाहिए ।

18. सुनहरा रंग बहुत अच्छी लगता है ।

19. लड़का ने गिर गया ।

grammer.indd 131 10-01-2019 11:06:09

20. मैं उसका घर के सामने रहता हूँ ।

21. उसने तीन पुस्तकें लाई ।

22. सीता राम का साथ वन गई ।

23. मेरे को यह पसंद है ।

24. उसने चला गया ।

25. मैं एक घोडा ख़रीदा ।

26. ठण्ड में गरमी कपड़े पहनो ।

27. किताब अलमारी का नीचे पड़ी है ।

28. वह चार दिन के लिए बीमार था ।

29. घोड़ी की रंग काली है ।

30. लोग देश की सेवा करनी चाहिए ।

31. कोयल मीठा गाता है ।

32. राम को चार बहनें हैं ।

33. तुम हिंदी सीखने जरुरत है ।

34. मैं परीक्षा के लिए खूब पढ़ी है ।

35. मैं मेरा नाम लिखता हूँ ।

36. आप आते ही हम खुश हुए ।

37. ज़मीन में कुर्सी है ।

38. मेरी नाम श्रीराम है ।

39. हम घर को जाते हैं ।

40. घोड़ों को सिंग नहीं होते ।

grammer.indd 132 10-01-2019 11:06:09

23 संधि

संधि शब्द का अर्थ है मेल ।

विद्या + आलय = विद्यालय

हिम + आलय = हिमालय

दो वर्णों के मेल को संधि कहते हैं ।

संधि तीन प्रकार की होती है ।

1. स्वर संधि 2. व्यंजन संधि 3. विसर्ग संधि

संधि केवल तत्सम शब्दों में होती है ।

स्वर संधि

स्वर से स्वर को मेल को स्वर संधि कहते हैं ।

जैसे – विद्या + आलय = विद्यालय (आ+आ)

स्वर संधि पाँच प्रकार की होती है :-

1. दीर्घ संधि 2. गुण संधि 3. वृद्धि संधि 4. यण संधि 5. अयादि संधि

दीर्घ संधि

देव + आलय = देवालय

कवि + इंद्र = कवीन्द्र

वधु + उत्सव = वधूत्सव

नर + ईश = नरेश

सूर्या + उदय = सूर्योदय

grammer.indd 133 10-01-2019 11:06:09

वृद्धि संधि

एक + एक = एकैक

वन + औषधि = वनौषधि

यण संधि

यदि + अपि = यद्यपि

सु + आगत = स्वागत

अनु + अय = अन्वय

अयादि संधि

ने + अन् = नयन

गै + अक = गायक

भो + अन = भवन

व्यंजन संधि

व्यंजन के साथ व्यंजन या स्वर के मेल को व्यंजन संधि कहते हैं ।

सत् +जन = सज्जन

भगवत + दर्शन = भगवद्दर्शन

तत् + लीन = तल्लीन

जगत् + नाथ = जगन्नाथ

वाक् + ईश = वागीश

स्व + छंद = स्वच्छंद

सम् + कल्प = कलाप

सैम + हार = संहार

सम् + योग = संयोग

अभि + सेक = अभिषेक

grammer.indd 134 10-01-2019 11:06:09

प्र + मान = प्रमाण

राम् + अयन =रामायण

विसर्ग संधि

विसर्ग के बाद स्वर या व्यंजन के आने पर विसर्ग में जो विकार होता है उसे विसर्ग संधि कहते हैं ।

मनः + हर = मनोहर

तपः + वन = तपोवन

रजः + गुण = रजोगुण

निः + जन = निर्जन

दुः + दशा = दुर्दशा

अन्तः + आत्मा = अंतरात्मा

निः + छल = निश्छल

निः + संदेह = निस्संदेह

निः + कलंक = निष्कलंक

निः + फल = निष्फल

प्रातः + काल = प्रातःकाल

अंतः + करण = अंतःकरण

निः + रोग = नीरोग

निः + रस = नीरस

अभ्यास

I.

1. संधि किसे कहते हैं ? उसके कितने भेद हैं ?
2. स्वर किसे कहते हैं ? उसके कितने भेद हैं ?
3. दीर्घ संधि के दो उदाहरण दो ।
4. व्यंजन संधि किसे कहते हैं ? उदाहरण दें ।
5. विसर्ग संधि किसे कहते हैं ? उदाहरण दें ।

grammer.indd 135 10-01-2019 11:06:09

II. संधि कीजिए ।

1. परम + आनंद =
2. रमा + ईश=
3. इति + आदि =
4. ने + अन =
5. तथा + एव =
6. उत् + लास =
7. भगवत् + भक्ति =
8. उत् + चारण =
9. जगत् +नाथ =
10. परि + छेद =
11. व्याकर + न =
12. निः + आशा =
13. दुः + शासन =
14. अतः + एव =
15. नमः + ते =
16. मनः + हर =
17. इति + आदि =
18. कवि + ईश्वर =
19. चिकित्सा + आलय =
20. वृक्ष + छाया =

III. संधि विच्छेद कीजिए :

1. सदैव =
2. जगदीस =
3. नरेन्द्र =
4. निर्धन =
5. नयन =

grammer.indd 136 10-01-2019 11:06:09

6. उल्लेख =

7. यशोगान =

8. मनस्ताय =

9. भगवद्भक्ति =

10. दिग्दर्शन =

---

grammer.indd 137 10-01-2019 11:06:09

24 पारिभाषिक शब्दावली

1	Acknowledgement	पावती
2	Adhoc	तदर्थ
3	Advisory	सलाहकार
4	Advocacy	वकालत
5	Advocate	अधिवक्ता
6	Affidevit	शपथ पत्र
7	Agenda	कार्य सूची
8	Agent	अभिकर्ता
9	Allotment	आबंटन
10	Amendment	संशोधन
11	Analysis	विश्लेषण
12	Ancestor	पूर्वज
13	Announcer	आख्यापक, वाचक
14	Annual	वार्षिक
15	Appendix	परिशिष्ट
16	Bill of exchange	विनिमय पत्र
17	Bill of payment	बीजक
18	Bio chemistry	जीव रसायन
19	Block letter	साफ़ अक्षर
20	Bonded labour	बँधुआ मजदूर
21	Booklet	पुस्तिका
22	Boycott	बहिष्कार
23	Broadcast	प्रसारण
24	Budget	बजट
25	Business	व्यवसाय, कारोबार

grammer.indd 138 10-01-2019 11:06:10

26	Bye-election	उप – निर्वाचन
27	Bye law	उपविधि
28	Calculator	गणक
29	Candidate	उम्मीदवार
30	Casual leave	आकस्मिक छुट्टी
31	Cash	रोकड़
32	Caution money	अवधान – द्रव्य
33	Certificate	प्रमाण – पत्र
34	Challan	चालान
35	Check post	जाँच चौकी
36	Circular	परिपत्र
37	Circulation	परिचालन
38	Column	स्तंभ
39	Compensation	क्षतिपूर्ति, प्रतिकार
40	Complement	पूरक
41	Confidential	गोपनीय
42	Correspondence	पत्राचार
43	Courier	वार्ताहर
44	Custom	सीमा शुल्क
45	Daily allowance	दैनिक भत्ता
46	Document	दस्तावेज़
47	Earned leave	अर्जित अवकाश
48	Embassy	राजदूतावास
49	Evaluation	मूल्यांकन
50	Frequency	आवृति
51	Functionary	कार्यकर्ता
52	Gazetted	राजपत्रित
53	Gazetted officer	राजपत्रित अधिकारी
54	Guardian	अभिभावक
55	Excise	उत्पादन शुक्ल

grammer.indd 139 10-01-2019 11:06:10

56	Excise duty	उत्पाद शुल्क
57	Extra curricular	पढ़ाई के अतिरिक्त
58	File	मिसिल, फ़ाइल
59	Financial year	वित्तीय वर्ष
60	Identity card	पहचान पत्र
61	Index	सूचक, अनुक्रमणिका
62	Incharge	प्रभारी
63	Inspection	निरिक्षण
64	Jubilee	जयंती
65	Labour	श्रम
66	Memo	ज्ञापन
67	Nominee	नामिती
68	Non payment	भुगतान न करना
69	Pay scale	वेतन – मान
70	Pollution	प्रदूषण
71	Ratio	अनुपात
72	Record	रिकार्ड, अभिलेख
73	Repayment	वापसी
74	Stenography	आशुलिपि
75	Unofficial letter	अशासकीय पत्र
76	Utilisation	उपयोग
77	Vacancy	रिक्तता, रिक्ति
78	Verification	सत्यापन
79	Wage	मजदूरी
80	Welfare	कल्याण
81	Vocational	व्यावसायिक
82	Working committee	कार्य समिति
83	Without delay	अविलम्ब
84	Account	लेखा
85	Accountant general	महालेखापाल

grammer.indd 140 10-01-2019 11:06:10

86	Answer script	उत्तर पुस्तक
87	Promotion	पदोन्नति
88	Reservation	आरक्षण
89	Allowance	भत्ता
90	Acceptance	स्वीकृति
91	Secretary	सचिव
92	University	विश्वविद्यालय
93	Appointment	नियुक्ति
94	Department	विभाग
95	Cabinet	मंत्री मंडल
96	Member	सदस्य
97	Labourer	मजदूर
98	Supreme court	उच्चतम न्यायालय
99	Electricity	विद्युत
100	Telegram	तार
101	Income tax	आयकर
102	International	अंतर्राष्ट्रीय
103	Treasurer	कोषाध्यक्ष
104	Election	चुनाव
105	Typist	टंकक
106	Chancellor	कुलपति
107	Finance minister	वित्त सचिव
108	Act	अधिनियम
109	Wage	वेतन
110	Manager	प्रबंधक
111	Constitution	संविधान
112	Ballot	मतपत्र
113	Notification	अधिसूचना
114	Municipal corporation	नगर निगम
115	Public relation officer	जनसंपर्क अधिकारी

grammer.indd 141 10-01-2019 11:06:10

116	Peon	चपरासी
117	Stamp	डाक- टिकट
118	Post officer	डाक – घर
119	Principal	प्रधानाध्यापक
120	Providental fund	भविष्य निधि
121	Secretariat	सचिवालय
122	Life insurance	बीमा
123	Scholarship	छात्रवृति
124	Speaker	सभापति
125	Official language	राज भाषा
126	Tourism	पर्यटन
127	Vice-president	उप – राष्ट्रपति
128	Vice-chancellor	उपकुलपति
129	Telephone	दूरभाष
130	Technical	तकनीकी
131	Reminder	अनुस्मारक
132	President	राष्ट्रपति
133	Prime minister	प्रधानमंत्री
134	Radio	आकाशवाणी
135	Joint secretary	संयुक्त सचिव
136	College	महाविद्यालय
137	Institute	संस्थान
138	Degree	उपाधि
139	Research	अनुसंधान
140	Age	उम्र
141	Railway minister	रेल मंत्री
142	Chief minister	मुख्य मंत्री
143	Birth date	जन्म तिथि
144	Television	दूरदर्शन
145	Headmaster	प्रधानाध्यापक

grammer.indd 142 10-01-2019 11:06:10

146	Class	वर्ग, श्रेणी
147	Airport	हवाई अड्डा
148	Governor	सरकार
149	Parliament	संसद
150	Student	विद्यार्थी
151	Pass	उत्तीर्ण
152	Air force	वायु सेना
153	Graduate	स्नातक
154	Identification	पहचान
155	Primary	प्रारंभिक
156	Authority	अधिकार
157	Police station	थाना – घर
158	Attendance	उपस्थिति
159	Quarterly	त्रैमासिक
160	Superintendent	अधीक्षक
161	Textile minister	वस्त्र – मंत्री
162	Passport	पारपत्र
163	Permission	अनुमति

grammer.indd 143 10-01-2019 11:06:10

25 पत्र

हिंदी अध्यापक पद के लिए एक आवेदन पत्र लिखिए ।

प्रेषक,

चेन्नई

9.5.18

एस. रामकुमार

12, जीवा नगर

चेन्नई -12

सेवा में,

प्राचार्य,

जवाहर विद्यालय,

चेन्नई – 90

आदरणीय महोदय,

विषय : हिंदी अध्यापक पद के लिए आवेदन पत्र-संबंधी

दिनांक 5 मई, 2018 के 'नवभारत टाइम्स' में प्रकाशित आप के विज्ञापन से मुझे ज्ञात हुआ कि आपके विद्यालय में हिंदी अध्यापक का पद रिक्त है । उक्त पद के लिए मैं अपना आवेदन प्रस्तुत कर रहा हूँ । मेरा संक्षिप्त जीवन – वृत्त निम्न प्रकार है ।

स्व विवरण

नाम : एस. रामकुमार

पिता का नाम : एन. शिव कुमार

जन्म की तारीख : 3, सितम्बर, 1990

मातृभाषा : तमिल

grammer.indd 144 10-01-2019 11:06:10

शैक्षिक योग्यता : एम. ए , बी. एड.

राष्ट्रभाषा प्रवीण 2008

एम.ए. (हिंदी) मद्रास विश्विद्यालय – 2014

व्यावसायिक योग्यता : बी.एड. (हिंदी)

उच्च शिक्षा और शोध संस्थान,

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास – 2015 ताम्बरम में स्थित

शिक्षण अनुभव : 2016 जून से अब तक विवेकानंद विद्यालय में हिंदी शिक्षक के रूप में कार्यरत हूँ ।

पत्र व्यवहार का पूरा पता : 12, जीवा नगर, चेन्नई- 12

दूरभाष :

मैं आपको यह विश्वास दिलाता हूँ कि यदि आप मुझे नियुक्त करेंगे, तो मैं अपने आपको इसके योग्य प्रमाणित करने का प्रयत्न करूँगा ।

सधन्यवाद,

आपका

ह./xxxx

(एस.रामकुमार)

(अभ्यर्थी)

grammer.indd 145 10-01-2019 11:06:10

चालू खाता खोलने की प्रार्थना

आपका मुंबई से चेन्नई स्थानांतरण हुआ है । यहाँ भारतीय स्टेट बैंक, टी. नगर शाखा में चालू खाता खोलने के लिए शाखा-प्रबंधक को एक प्रार्थना पत्र लिखिए ।

विमल एंटरप्राइसेस

15, रामन स्ट्रीट,

टी. नगर, चेन्नई – 17

दिनांक : 25 जनवरी,2018

शाखा प्रबंधक,

भारतीय स्टेट बैंक,

टी. नगर, शाखा,

चेन्नई – 600017

आदरणीय महोदय,

विषय : चालू खाता खोलने के सम्बन्ध में आवेदन-पत्र संबंधी

सविनय निवेदन है कि मैं आपके बैंक की टी. नगर शाखा में अपना चालू खाता खोलना चाहता हूँ । मैं पिछले सप्ताह मुंबई से चेन्नई आया हूँ और यहाँ प्रतिष्ठान की शाखा अभी – अभी खोली है । मैंने अपने सबूत के रूप में मुंबई बैंक के हिसाब की नक़ल संलग्न की है । साथ ही दीपक एंटरप्राइसेस के व्यवस्थापक का परिचय-पत्र भी संलग्न है । उनकी चालू खाता–संख्या 15141338290 है ।

आप से सविनय निवेदन है कि कृपया आप अपने बैंक में मेरा चालू खाता खोल दें । इसके लिए मैं आपूर्ति किया हुआ आवेदन पत्र संलग्न कर रहा हूँ ।

सधन्यवाद,

आपका

ह. / xxxx

व्यवस्थापक

विमल एंटरप्राइसेस

त्यागराय नगर

संलग्न : 3

grammer.indd 146 10-01-2019 11:06:10

1. मुंबई बैंक के पास बुक की नक़ल

2. दीपक एंटरप्राइसेस के व्यवस्थापक का परिचय-पत्र

3. आपूर्ति किया हुआ आवेदन पत्र

पुस्तकें मँगवाने हेतु आदेश – पत्र

हिंदी पुस्तक बिक्री केंद्र, नई दिल्ली की ओर से लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद को पुस्तकें मँगवाते हुए आदेश पत्र लिखिए ।

हिंदी पुस्तक बिक्री केंद्र

(विविध विषयों की सर्वोतम हिंदी पुस्तकों का बिक्री केंद्र)

प्रेषक,

10, राम नगर,

नई दिल्ली -2

फोन : (011)- 3273336

दिनांक : 26, दिसंबर, 2018

सेवा में,

प्रबंधक,

सर्व श्री लोक भारती प्रकाशन,

15-5, महात्मा गाँधी मार्ग.

इलाहबाद - 211001

प्रिय महोदय,

क्रमांक	पुस्तक का नाम	लेखक / संपादक का नाम	प्रतियाँ
1	हिंदी कोश	आचार्य रामचंद्र वर्मा	1
2	राजभाषा शब्द कोश	डॉ. हरदेव बाहरी	1
3	हिंदी मुहावरा लोकोक्ति कोश	डॉ. बदरीनाथ कपूर	1
4	हिंदी क्रिया कोश	डॉ. हेवमुत नेस्पिताल	1

grammer.indd 147 10-01-2019 11:06:10

उपर्युक्त पुस्तकें यथाशीघ्र भेजने की कृपा करें । आशा है कि आपका सहयोग अवश्य मिलेगा ।

सधन्यवाद,

भवदीय

ह. / xxxx

रमेश

लिपिक पद के लिए किसी कंपनी के नाम एक आवेदन पत्र लिखिए ।

प्रेषक,

एस.सुसन

10.सीता नगर

चेन्नई – 17

चेन्नई

1.11.18

सेवा में,

रामन एंड कंपनी लिमिटेड

राधा स्ट्रीट

बंगलूर – 2

प्रिय महोदय,

विषय : लिपिक पद के लिए आवेदन

सन्दर्भ : दिनांक 28 / 1 / 2019 के 'हिन्दू' में आपका विज्ञापन ।

मुझे 'हिन्दू' के विज्ञापन से ज्ञात हुआ कि आप की कम्पनी में एक लिपिक की आवश्यकता है । उक्त पद के लिए मैं अपनी सेवाएँ प्रस्तुत करना चाहता हूँ । मेरा विवरण इस प्रकार है ।

नाम : एस, सुसन

पिता का नाम : श्रीनिवासन एस.

जन्म की तिथि : 1.1.2000

शैक्षिक योग्यताएँ : बी. ए. (अंग्रेजी)

अंग्रेजी में टंकण (उच्च)

कंप्यूटर में

राष्ट्रभाषा प्रवीण (हिंदी में)

grammer.indd 148 10-01-2019 11:06:10

मातृभाषा : तमिल

कन्नड़, तेलुगु लिखना – बोलना जानता हूँ ।

पत्र – व्यवहार का पूरा पता : 10, सीता नगर,

चेन्नई – 17

मैं विश्वास दिलाता हूँ कि आप मेरे कार्य तथा आचरण से पूर्ण संतुष्ट होंगे ।

धन्यवाद !

भवदीय

(ह.).....

(एस.सुसन)

संलग्न : प्रमाण-पत्रों की प्रतिलिपियाँ

परिपत्र

परिपत्र एक पत्र या प्रतिलिपि या स्मृतिपत्र के रूप में होता है । परिपत्र और सरकारी पत्रों की रुपरेखा में अधिक अंतर नहीं है । विषयनुसार तथा आवश्यकतानुसार साधारण-पत्र, कार्यालय-ज्ञापन या पृष्ठांकन रूप प्राप्त करता है ।

अधोनिर्दिष्ट परिस्थितियों में परिपत्र का प्रयोग होता है -

1. जब कोई सूचना बहुत-से व्यक्तियों अथवा अधिकारियों में प्रसारित करनी होती है।
2. जब बहुत-से व्यक्तियों अथवा अधिकारियों को कोई आदेश / अनुदेश देना होता है।
3. जब एक ही विषय पर बहुत-से व्यक्तियों अथवा अधिकारियों की सम्मति ली जाती है ।

परिपत्र भेजनेवालाv व्यक्ति एक ही होता है । परिपत्र प्रायःअन्य पुरुष में लिखा जाता है । उसकी वस्तु भी एक ही होती है । पत्र-संख्या, कार्यालय का नाम, स्थान का नाम और दिनांक ये सब ऊपर लिखे जाते हैं । उसके अंत में भेजनेवाले के पदनाम के साथ हस्ताक्षर होते हैं, किन्तु स्वनिर्देश नहीं होता है । परिपत्र के नमूने निचे दिए गये हैं -

नमूना – 1

संख्या ....

गृह मंत्रालय

भारत सरकार नई दिल्ली, दिनांक .....

परिपत्र

grammer.indd 149 10-01-2019 11:06:10

इस मंत्रालय द्वारा सरकारी कर्मचारियों के लिए खोले गये चिकित्सालय की सूची तथा गत वर्ष उनसे लाभ उठानेवाले रोगियों का विवरण सूचनार्थ भेजा जा रहा है ।

इस विवरण से यह स्पष्ट है कि इस समय ऐसे 410 चिकित्सालय खुले हुए हैं जिनमें गत वर्ष 15,350 रोगियों की चिकित्सा की गई ।

.....

अवर सचिव, भारत सरकार

वितरण :

भारत सरकार के सभी मंत्रालयों

तथा सम्बद्ध कार्यालयों को ।

नमूना 2

संख्या 556 / 06 / 95

भारत सरकार

जन स्वास्थय

नई दिल्ली,

दिनांक .....

विषय : अनुमोदित नए चिकित्सालय ।

मुझे यह सूचित ने का निर्देश हुआ है कि निम्नलिखित नये चिकित्सालय केन्द्रीय स्वस्थ्य योजना के अंतर्गत अनुमोदित किये गये हैं ।

1. शंकर नेत्रालय,
2. विजया अस्पताल.
3. के. जे. नर्सिंग होम,
4. विलिंगटन नर्सिंग होम

ह.

एम. कुमार

अवर सचिव

grammer.indd 150 10-01-2019 11:06:10

ज्ञापन

पत्राचार के रूप में ज्ञापन का प्रयोग मुख्यतः निम्नांकित कार्यों के लिए होता है –

1. प्रार्थना – पत्रों, याचिकाओं, नियुक्ति के लिए गये आवेदनों आदि का उत्तर देने के लिए,

2. पत्रों की पावती भेजने के लिए तथा

3. अधीनस्थ कार्यालयों को ऐसे आदेश भेजने के लिए जो पूरी तरह से सरकारी न हों ।

कार्यालय ज्ञापन की भाँति ज्ञापन भी अन्य पुरुष में लिखा जाता है और इस में संबोधन और स्वनिर्देश के लिए स्थान नहीं है । ऊपर संख्या लिखी जाती है । अंत में प्रेषक के हस्ताक्षर और पद का उल्लेख होता है । प्रेषक का नाम व पता प्रेषक के हस्ताक्षर के बाद बाई ओर कोने में लिखा जाता है ।

ज्ञापन के कुछ नमूने निचे दिए गये हैं –

नमूना 1.

संख्या .....

विधि मंत्रालय, भारत सरकार

नई दिल्ली, दिनांक.....

श्री.....ने..... पद पर नियुक्ति के लिए दिनांक..... को जो प्रार्थना-पत्र भेजा था उसके प्रसंग में उनको सूचित किया जाता कि इस समय ऐसा कोइ पद खाली नहीं है। भविष्य में जब कोई पद खाली होगा, तब उसकी सूचना रोज़गार दफ्तरों को भेज दी जाएगी ।

.....

अवर सचिव, भारत सरकार

सेवा में,

श्री .....

.....

.....

grammer.indd 151 10-01-2019 11:06:10

नमूना 2

संख्या .....

रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

नई दिल्ली, दिनांक .....

ज्ञापन

विषय : रक्षा मंत्रालय में हिंदी सहायक के पद पर नियुक्ति ।

श्री .....सुपुत्र .....को एतद् द्वारा इस मंत्रालय में रु .....के वेतनमान में हिंदी सहायक के अस्थायी पद पर नियुक्ति का प्रस्ताव भेजा जाता है । यह नियुक्ति नितांत अस्थायी होगी और इसमें स्थायी नियुक्ति का कोई दावा नहीं किया जाएगा । नियुक्ति को दोनों पक्षों में से किसी की भी ओर से किसी भी समय एक महीने की सूचना देकर समाप्त किया जा सकेगा ।

यदि श्री .....इस नियुक्ति के प्रस्ताव को स्वीकार करते हों तो उन्हें अधिक से अधिक .....(दिनांक) तक इस मंत्रालय के प्रशासन अनुभाग में काम पर आ जाना चाहिए ; यदि निर्धारित अवधि तक अपेक्षित स्वीकृति प्राप्त नहीं हुई और श्री ..... भी काम पर नहीं आए तो प्रस्ताव को रद्द समझ लिया जाएगा ।

.....

निदेशक

ई – मेल (E-Mail)

ई – मेल अर्थात 'इलेक्ट्रॉनिक मेल' । इन्टरनेट पर आधारित सन् 1972 में जन्मी ई – मेल समानान्तर डाक सेवा के रूप में विकसित हुई है । इस सेवा के द्वारा जब आप कोई सूचना भेजते हैं तो सूचना उसी वक़्त इन्टरनेट के द्वारा प्राप्तकर्ता के पास पहुँच जाती है । चाहे प्राप्तकर्ता कितने भी दूर हो । भेजनेवालों को प्राप्तकर्ता के ई – मेल पते (E – Mail address) की जानकारी होनी चाहिए । समाचारों की दुनिया में भी ई – मेल ने पैठ बना ली है । देश – विदेश के पत्रकार अपने समाचारों को अखबारों तक भेजने के लिए ई – मेल का इस्तेमाल करने लगे हैं । इससे टेलिग्राम, फोन, फैक्स से समाचार भेजने का काम लगभग समाप्त हो गया है । यहाँ तक कि अब कस्बों में भी ई – मेल द्वारा समाचार भेजे जाने लगे हैं । इससे पैसे और समय की बचत हो रही है । अब ई – मेल को कंप्यूटर के अलावा पेज़र, मोबाइल, फोन और इस तरह के बेहतर उपकरणों पर भी भेजा जा रहा है ।

grammer.indd 152 10-01-2019 11:06:10

ई – मेल (Electronic mail)

आजकल कंप्यूटर का प्रयोग इतना बढ़ गया है कि जीवन का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं है, जिसमें इसका उपयोग न हो । खासकर सूचना के आदान-प्रदान में तो यह एक विकल्प के रूप में उभरा है । कंप्यूटर में प्रयुक्त वह माध्यम जिससे सूचना, पत्र, चित्र आदि एक कंप्यूटर से दूसरे कंप्यूटर में जाता है, ई – मेल कहलाता है ।

ई – मेल की मुख्य विशेषताएँ –

1. समय की बचत
2. कम खर्च
3. सुरक्षित माध्यम
4. गोपनीयता
5. हर पल उपलब्ध ।

ई – मेल में चित्र जोड़ने का तरीका :-

ई – मेल भेजने में यदि हमें चित्र या अन्य कुछ जोड़ना होता है, तो उसके लिए हम सबसे पहले अपना एकाउंट खोलकर attachment के विकल्प में क्लिक करते हैं । attachment पर click करने से browse का option आता है । अब हमें कंप्यूटर में जिस फाइल से चित्र या अन्य कुछ भी लेना है उसमें जाकर वहाँ से वह चित्र या अन्य सामग्री लाकर attach कर देते हैं और जिसे भेजना होता है, उसका ई – मेल आईडी (ID) लिखकर उसे भेज देते हैं । इस प्रकार हम ई – मेल से चित्र, गीत या अन्य आवश्यक जानकारियाँ भेज सकते हैं ।

उदाहरण : घर पहुँचने का कार्यक्रम बताते हुए पिताजी को ई – मेल

from e-mail id – Rajeev@yahoo.com

to ganesh01@gmail.com

आदरणीय पिताजी,

मैं कल प्रातः 6.20 बजे शताब्दी एक्सप्रेस द्वारा चेन्नई पहुँचूँगा । वहाँ से टैक्सी लेकर लगभग 7.30 बजे तक घर पहुँच जाऊँगा । आप स्टेशन पर आने की तकलीफ न करें, मैं सब प्रबंध कर लूँगा । नाश्ता करने के बाद ही हम कपूर अंकल के घर जाएँगे ।

शेष मिलने पर ।

---

grammer.indd 153 10-01-2019 11:06:10

1.ई – मेल कब विकसित हुई ?

2.देश-विदेश के पत्रकार ई – मेल का इस्तेमाल कैसे करते हैं ?

3.ई – मेल से क्या लाभ है ?

4.ई – मेल को किन-किन उपकरणों पर भेजा जा रहा है ?

5.ई – मेल किसे कहते है ?

6.ई – मेल की प्रमुख विशेषताएँ क्या-क्या हैं ?

7.ई – मेल में चित्र जोड़ने का तरीका क्या है ?

8.ई – मेल का एक उदाहरण दीजिये ।

grammer.indd 154 10-01-2019 11:06:10

26 पद परिचय

पद परिचय का अर्थ है शब्द का परिचय । जिस प्रकार किसी व्यक्ति का परिचय पूछना हो तो उसका नाम, धाम. और काम पूछा जाता है, ठीक उसी प्रकार शब्दों का व्याकरण की दृष्टि से स्थान बताया जाता है । यह पद परिचय के अंतर्गत आता है । पद परिचय को 'शब्द बोध' भी कहते हैं ।

वाक्यों में आये प्रत्येक शब्द का व्याकरण की दृष्टि से पूर्ण परिचय देना पद परिचय कहलाता है ।

शब्द आठ प्रकार के होते हैं । प्रत्येक शब्द के परिचय में क्या-क्या आता है, इसका विवरण निचे दिया जा रहा है :-

1. संज्ञा – भेद, लिंग, वचन, कारक, क्रिया या अन्य शब्दों से सम्बन्ध ।
2. सर्वनाम – भेद, पुरुष, लिंग, वचन, कारक, क्रिया या अन्य शब्दों से सम्बन्ध । सर्वनाम किस संज्ञा के स्थान पर आया है ।
3. विशेषण – भेद, लिंग, वचन, अवस्था, विशेष्य ।
4. क्रिया – काल भेद, लिंग, वचन, पुरुष, सकर्मक या अकर्मक कर्ता, कर्म ।
5. क्रिया विशेषण – भेद, विशेष्य, क्रिया ।
6. सम्बन्ध बोधक – भेद, संबंधित शब्द ।
7. समुच्चय बोधक – भेद, योजना शब्द ।
8. विस्मयादि बोधक – भेद ।

उदाहरण – (1) रमेश मेरी पुस्तक पढ़ता है ।

रमेश – संज्ञा, व्यक्ति वाचक, पुल्लिंग, एक वचन कर्ता कारक पढ़ता है क्रिया का कर्ता ।

मेरी – सर्वनाम, पुरुषवाचक सर्वनाम, उत्तम पुरुष, स्त्रीलिंग, एकवचन, सम्बन्ध कारक, पुस्तक से सम्बन्ध सूचित करता है ।

grammer.indd 155 10-01-2019 11:06:10

पुस्तक – संज्ञा, जातिवाचक, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्म कारक, पढ़ता है क्रिया का कर्म ।

पढ़ता है – क्रिया, सकर्मक, वर्त्म,आँ काल, सामान्य वर्तमान काल, पुल्लिंग, एक वचन, कर्ता रमेश ।

2. उसे देखते ही किसान बोला, रे ! तू यहाँ कैसे ?

उसे – सर्वनाम, पुरुषवाचक सर्वनाम, अन्य पुरुष, पुल्लिंग, (स्त्रीलिंग भी हो सकता है), एक वचन, कर्म कारक, देखना और बोलना क्रिया का कर्म ।

देखते – क्रिया, सकर्मक, कर्ता – किसान, कर्म – उसे ।

ही – क्रिया विशेषण रीतिवाचक ।

किसान – संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एक वचन, कर्ता कारक, बोला क्रिया का कर्ता ।

बोला – क्रिया, सकर्मक, भूतकाल, सामान्य भूत, पुल्लिंग, एकवचन इसका कर्ता है किसान ।

रे – विस्मयादि बोधक, आश्चर्य का सूचक ।

तू – सर्वनाम, पुरुषवाचक, मध्यम पुरुष, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक है क्रिया का कर्ता ।

यहाँ – क्रिया विशेषण, स्थान वाचक ।

कैसे – क्रिया विशेषण, रीतिवाचक ।

पद परिचय दीजिये ।

1. राम ने फल खाया ।
2. दो और दो चार होते हैं ।
3. वे यहाँ देर से आए ।
4. शाबाश ! राजीव आगे बढ़ो ।
5. धीरे-धीरे चलो, नहीं तो गिर जाओगे ।
6. जिम ने शेर को मारा ।
7. मैं मद्रास विश्वविद्यालय का विद्यार्थी हूँ ।

grammer.indd 156 10-01-2019 11:06:10

8. हाय ! मेरी अच्छी किताब खो गयी।

9. मेरी छोटी बहन अभी आयी है ।

10. चोर कल संदूक चुराते हुए पकड़ा गया ।

11. देखो ! बाहर तुम्हारी छोटी बहन फूट-फूटकर रो रही है ।

12. थोड़ी दूर चलकर वह बैठ गया ।

13. यदि राम पढ़े तो मैं उसे एक पुस्तक दूँगा ।

14. काश ! अब तक गाँधीजी जीवित होते ।

15. झंडा ऊँचा रहे हमारा ।

16. मोहन का जोशीला भाषण सुनकर हम सब दंग रह गये ।

grammer.indd 157 10-01-2019 11:06:10

27 संक्षिप्तीकरण

किसी विस्तृत लेख, आख्यान, विवरण,पत्र, सूचना आदि में निहित तथ्यों को सरल, सुबोध भाषा में प्रस्तुत करना कि मूल विषय की सभी महत्वपूर्ण बातें उसके तृतीय अंश में आ जाए, यही संक्षिप्तीकरण है ।

संक्षिप्तीकरण करनेवाले को चाहिए कि जिस विषय या गद्यांश का संक्षिप्तीकरण करना है उसे ध्यान से पढ़ें । उचित तो यह है कि उसे तीन बार पढ़ लें । पहली बार आम तौर पर पढ़ लें, दूसरी बार विषय को समझने की दृष्टि में पढ़ लें, और तीसरी बार संक्षिप्तीकरण करना है, इस दृष्टि से पढ़ें । पढ़ते वक्त मुख्य अंशों के नीचे रेखा खिंची जाय जिससे संक्षिप्त लेख लोखने मेंसहयता मिलती है ।

संक्षिप्तीकरण के समय निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिये –

1. जहाँ तक हो सके, मूल पाठ के शब्दों, पद बंधों और वाक्यांशों का प्रयोग न हो ।
2. मुहावरों और कहावतों का प्रयोग न हो ।
3. उदाहरण का दृष्टांत देने से बचें ।
4. अपने विचार को न थोपें
5. मूल पाठ का कोई विषय छूट न जाए ।

संक्षेप में कहा जाए तो संक्षेपण में स्पष्टता, संक्षिप्तता, सूत्रबद्धता, प्रभावोत्पादकता और पूर्णता होनी चाहिए ।

नमूने के लिए कुछ गद्यांश :-

मूल लेख

यह मेरी पहली विदेश यात्रा थी । मैं यहाँ भी उन लोगों के संसर्ग में बहुत नहीं आया था जो विदेशी ढंग से रहते और खाते-पीते हैं । जाने के पहले एक दिन श्री सच्चिदानंद सिंह ने मुझे अपने यहाँ अंग्रेजी ढंग से टेबल पर खिलाया था । मैंने काँटे-चमचे का इस्तेमाल देख लिया था । इत्तिफाक से जहाज़ पर मेरे कमरे में एक फारसी सज्जन थे । वे विदेश में सैर करने के लिए ही जा रहे थे । उनसे तो जान पहचान हो ही गयी, पर दूसरे कोई मुलाकाती भाई या बहन उस जहाज में नहीं थे । मेरी आदत भी कुछ ऐसी है कि मैं किसी से स्वतः मुलाक़ात या जान पहचान करने में बहुत सकुचाता हूँ ।

grammer.indd 158 10-01-2019 11:06:10

2. किसानों का गाँव था, मेहनती आदमी के लिए पचास काम थे । मगर इन दोनों को लोग उसी वक़्त बुलाते थे, जब दो आदमियों से एक का काम पाकर भी संतोष कर लेने के सिवा कोई चारा न होता । अगर दोनों साधू होते तो उन्हें संतोष और धैर्य के लिए, संयम और नियम की बिलकुल जरूरत न होती । यह तो इनकी प्रकृति थी । विचित्र जीवन था इनका घर में मिट्टी के दो चार बर्तनों के सिवा कोई संपत्ति नहीं । फटे चीथड़ों से अपनी नग्नता को ढाँके हुए जिये जाते थे । संसार की चिंताओं से मुक्त, कर्ज से लादे हुए, गालियाँ भी खाते, मार भी खाते, मगर कोई भी गम नहीं ।

---

grammer.indd 159 10-01-2019 11:06:11

28 हिंदी में अनुवाद कीजिये

1. The doctrine of faith which is called pacifism in the west and non-violence in the East like all other vital doctrine must change its needs content and implications and thus its ends and means from time to time.

2. Hand work is a basic quality of human being. Only because of such handwork, man satisfies all his physical needs. This is the only way to test and develop all his hidden talents. Besides this it is the real way to realize his usefulness as a human being and as a part of the society .

3. Men are lazy. They do not labour to think of new solutions, So long as they have the old ones. That is why modern man is unable to give up his hope solving all the worldly problems of to day only through materialistic methods. He has been trying with concentration for the economic prosperity.

4. The famous saint Tukaram has said, “My wealth is not so small as could be kept in a box or house. It is therefore kept in all houses. My wealth and my food grains are spread over the entire world. Hence there was no fear of theft in Tukaram’s house.

5. Visiting new lands and new people by travel is called Tourism. It is an essential part of education and without it no education can be considered to be completed. What we study in books in schools is theoretical knowledge. It is only travelling which gives us practical knowledge.

grammer.indd 160 10-01-2019 11:06:11

29 निबंध सूची

1. पर्यावरण
2. स्वच्छ भारत
3. खेलों का महत्त्व
4. पर्यटन
5. अहिंसा परमोधर्म
6. प्रदूषण
7. समाज सुधार के महत्त्व
8. आधुनिक दान (रक्त / अंग)
9. महँगाई की समस्या
10. भारत के वैज्ञानिक
11. आपके मनपसंद नेता
12. आपके मनपसंद कवि
13. समाज की जागृति के लिए कवियों का योगदान
14. स्वावलंबन
15. प्राण रक्षा के लिए स्वच्छता

grammer.indd 161 10-01-2019 11:06:11

HINDI MODEL QUESTION PAPER

SUB: HINDI MARKS: 90

CLASS: XII STD TIME : 2.30 Hrs

I. <u>निम्नलिखित वैकल्पिक प्रश्नों के उत्तर लिखिए</u> (6x1=6)

1. **बलि के गुरू ..... है।**

   1. **शुक्राचार्य** 2. **नरहरिदास**

2. **सरल वचन ..... समान है।**

   1. **तीर** 2. **औषध**

3. **गोरज बीच ..... लगते थे ।**

   1. **धूल धूसरित** 2. **नीलनीश**

4. **वृजभानुजा का अर्थ है .....**

   1. **बैल का बेटा** 2. **बैल**

5. **बादल ..... रस की वर्षा करती है।**

   1. **प्रेम** 2. **नफरत**

6. **कवि को मरने जीने का धन ..... है।**

   1. **उच्च पद पाना** 2. **देश के लिए जीना मरना**

II (A). निम्नलिखित प्रश्नो में से किन्ही तीन प्रश्नों के उत्तर लिखिए (3x2=6)

7. **मित्र और पूज्य कौन है?**
8. **हमें अपनी राय कब प्रकट करनी चाहिए?**
9. **गोधूली के बीच में कृष्ण कैसे दीख पडते थे?**
10. **लोभ का चश्मा ऑखोंप र लगा लेने से मनुष्य कैसे अंध हो जाता है?**

II (B). निम्नलिखित प्रश्नो में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए (2x2=4)

11. **मातृभाषा का प्रेम लेखक किस प्रकार प्रकट करता है?**
12. **कवि का जीवन धर्म क्या है?**
13. **कवि ने किसे सहर्ष स्वीकारा है?**

grammer.indd 162 10-01-2019 11:06:11

III (A). किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए (2x4=8)

14. संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए

बहु विनोदित थी व्रज बालिका

तरूगियाँ सब थं तृण। तोडती ।

बलि गयी बहु बार क्योवती

लख। अतुपमती व्रज चंद्रकी।

15. कवि काल से अपराजित वासी है समझाइए?

16. निम्नलिखित के सही जोडे मिलाइए

	क	ख।
1.	विद्यावारिधि	शोभा
2.	छटा	अंधेर नगरी
3.	भारतेंदु हरिश्चंद्र	एक भारतीय आत्मा
4.	माख।नलाल चतुर्वेदी	शि।क्षा का सागर

III (B) .

17 निम्नलिखित में से किन्ही एक प्रश्नों के उत्तर संक्षिपत में लिखिए (1x4=4)

1. श्री कृष्ण। को व्रज के के लोग कैसे निहारते थे?

2. भारत का धन क्या है?

18. कंठस्थ। भाग (2x2=4)

1. कारज धीर ..... संचे नीर ।

2. सीम मुकुट कटि ..... बिहारीलाल।

IV (A) .

19. सप्रसंग व्याख्या कीजिए (1x4=4)

मेरे कई चेले इस कला में मुझसे बहुत आगे बढ गये।

या

यह न कोई समझे कि अगर मुल्क गिरे तो कोई बचजाता है।

20. निम्नलिखित में से किन्ही एक प्रश्न के उत्तर लिखिए (1x6=6)

1. टालस्टाय फार्म के नियमों को समझाइए

2. धर्म शासन, राज शासन, मत शासन सब में इनसे पूरा काम लिया जाता है

grammer.indd 163 10-01-2019 11:06:11

21. निम्नलिखित में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए (2x4=8)

1. प्रेम का सहायक कौन होता है?

2. मनुष्य कैसे प्राणी है?

3. क्रोध की वयंजना कैसे प्रकट होती हैं?

4. हमारे देश का असली नाम क्या है?

IV (B).

22. अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए (4x1=4)

1 श्री गणेश करना 2 प्रसन्न होना 3 दाखिल करना 4 पर्याप्त

कंठस्थ भाग

23. 1. सत समँद ..... न जाई । (1x2=2)

2. निज कर ..... अपने हाथ । (1x4=4)

V. निम्नलिखित वैकल्पिक प्रश्नों के उत्तर लिखिए (8x1=8)

24. टाल्स्टाय फार्म का स्थापना ..... की थी।

1. टाल्स्टाय 2. महात्मा गाँधी 3. नेहरूजी

25. लेखक की होड ..... है ।

1. समाज 2. काल 3. देश

26. स्त्रियों और पुरूषों ..... रखा जाए।

1. एक ही जगह 2. अलग अलग 3. मिलाकर

27. काव्य कला और संगीतकला दोनों ..... है।

1. अन्यान्योश्रित 2. अलग अलग 3. विपरीत

28. रीढ की हड्डी एकांकी के लेखक ..... है।

1. विष्णु प्रभाकर 2. जयशंकर प्रसाद 3. जगदीशचंद्र माथुर

29. हरिश्चंद्र अपने सत्य पर ..... रहनेवाले है।

1. दृढ 2. अस्थिर 3. लाचार

30. उच्च पद पाकर मनुष्य का ..... होती है।

1. विकास 2. पतन 3. घमंड

31. बलि के गुरू ..... है।

1. द्रोणाचार्य 2. शुक्राचार्य 3. नरहरिदास

grammer.indd 164 10-01-2019 11:06:11

VI A. किन्ही सात प्रश्नों के उत्तर दीजिए (3x2=6)

32. **संधि कीजिए**

1 **देव** + **आलय** = 2 **जगत** + **नाथ** =

33. **समास विग्रह कर भेद बताइए**

1 **नीरोग** 2 **यद्यपि**

34. **पारिभाषिक शब्द लिखिए**

1 Agent 2 Circular

VI B. सूचना के अनुसार बदलिए (6x1=6)

35. **वह पढता है। (भविष्यत काल में लिखिए)**

36. **मै मेरा घर आया। (शुद्ध कीजिए)**

37. **पुलिस आयी। चोर भाग गया। (जब तब का प्रयोग कीजिए)**

38. **विमला ने चित्र बनाया । (विमला के बदले विमल का प्रयोग कीजिए)**

39. **राम ने रावण को मारा। (वाच्य बदलिए)**

40. **उन्होंने कल आये। (शुद्ध कीजिए)**

VII. किन्ही तीन प्रश्नों के उत्तर लिखिए (3x4=12)

41. **श्रृंगार या वीर रस के लक्षण लिखिए ।**

42. **परिपत्र या ज्ञापन लिखिए ।**

43. **अनुप्रास अलंकार या श्लेष अलंकार का सोदाहरण लक्षण लिखिए ।**

44. **निम्नलिखित गद्यांश को संक्षिप्तिकरण कीजिए**

धर्म को लोंगों ने धोखे की दूकान बना रखा है। वे उसकी आड में स्वार्थ सिद्ध करते है। बात यह है कि लोग धर्म को छोडकर संप्रदाय के जाल में फंस रहे है। संप्रदाय बाहय कृत्यों पर जार देते है। वे चिन्हों को अपनाकर धर्म के सार तत्व को मसल देते है। धर्म मनुष्य को अंतर्मुखी बनाता है, उसके हृदय के कवाडों को खोलता है, उसकी आत्मा को विशाल मन को उदार तथं चरित्र को उन्नत बनाता है। संप्रदाय संकीर्णता सिखाते है। जात पाँत, रूप रंग तथा उँच नीच के भेद भावों से डपर नही उठने देते ।

VIII. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए (1x6=6)

45. **भाई बहन**

अथवा

समाज की जागृति के लिए कवियों का योगदान।

grammer.indd 165 10-01-2019 11:06:11

Hindi – Std XII

List of Authors and Reviewers

Chairperson

Dr. M. Seshan,
Professor (Retd.,)
Head of the Department. (Hindi)
D.G. Vaishnav College, Arumbakkam, Chennai.

Reviewer

Dr. Kokila P.C.,
Associate Professor (Retd.),
Head of the Department. (Hindi)
Presidency College, Chennai.

Authors

S. Anandakrishnan, M.A., M.Ed.,
Headmaster (Retd.)
The Hindu Hr. Sec. School, Triplicane, Chennai.

S. Satyanarayanan, M.A., M.Ed.,
PG Asst. in Hindi (Retd.)
Kesari Hr. Sec. School, Mylapore, Chennai.

M. Gabriel Govindaraju, M.A., B.Sc., B.Ed.,
Lecturer in Hindi (Retd.)
Navalar Nedunchezhin GHSS, Lawspet, Puducherry.

S. Muralidharan, M.A., B.Ed.,
PG Asst.,
Jawahar Higher Secondary School, Ashok Nagar, Chennai.

O.V.S. Mallika, M.A., B.Ed., M.Phil.,
B.T. Asst.,
Kesari Hr. Sec. School, Mylapore, Chennai.

R. Radjamohane, M.A., B.Ed.,
Lecturer in Hindi
Jeevanandam GHSS, Karamanikuppam,
Directorate of School Education, Puducherry.

Coordinator

K. Chandrasekaran,
Lecturer, DIET, Chennai.

Art and Design Team

Layout
Thy Designers

QC
Asker Ali
Rajesh Thangappan
Manohar Radhakrishnan
Jerald Wilson

Wrapper Design
Kathir Arumugam

Co-ordination
Ramesh Munisamy

Typist
DR.Madhuvinay

This book has been printed on 80 GSM Elegant Maplitho paper.

Printed by offset at:

grammer.indd 166 10-01-2019 15:40:42

Unit 25.indd 102 23-06-2018 11:29:37

Unit 25.indd 102 23-06-2018 11:29:37